

परख-सिरजण

डा. पुरुषोत्तम आसोपा

मरुधर साहित्य मन्दिर, बीकानेर -

राजस्थानी भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी रे प्राथमिक सहयोग-श्रु-प्रकाशित

© डा पुष्पोत्तम आसोपा

प्रकाशक

महेश्वर साहित्य मंदिर

124, बिनाली बिल्डिंग,

अलखसागर बीकानेर

संस्करण पैलडो, 1987

मूल्य पैंदीस रुपिया

भावरण गिबनी

कलापक्ष कादम्बती

मुद्रक

साखला प्रिंटर्स, बीकानेर

आमुख

- राजस्थानी भाषा में आलोचना की अखरण आळी कमी है । साहित्य के विकास सारू इण बनी कोशिश करण की मोकळी जरूरत है ।
- आ पोथी इण लिहाज सू राजस्थानी साहित्य की पैली व्यवस्थित, शास्त्रीय आलोचना की पोथी कंही जाय सके ।
- इण रा सगळी निबन्ध पत्रिकावा में प्रकाशित है या जुदी-जुदी सगोण्ठिया सारू शोध परवा के रूप में प्रस्तुत कियोडा है । गोण्ठिया माय इणा माये मोकळी चर्चावा हूय चुकी है । अर लोगां ने ऐ खासा आकर्षित कर चुका है ।

—डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा

क्रम

राजस्थानी भाषा, समस्यावा अर उणा रो निराकरण
राजस्थानी साहित्य री नूवी कविता
धरती री आस्था रो रचनाकार : कथाकार अन्नाराम मुदामा
मीरा रे साहित्य सू जुडिमोडा की अणमुळभियोडा सवाल
गद्य रे जीवन रा नितेरा . रवीन्द्रनाथ ठाकुर
'बेलि' रो वस्तु सौंदर्य : एक पुनर्मूल्याकन
राजस्थानी री जूनी पाण्डुलिपिया री विवेचना
1983 री पुरस्कृत पोय्या . एक बेदाक टीप
परिवार अर परिवेश . साहित्य रे संदर्भ सू

राजस्थानी भाषा, समस्यावां अर उणां रो निराकरण

राजस्थानी भाषा री समस्यावा री चर्चा करणं मू पहली सामान्य रूप सू
विणी भी भाषा रें माय समस्यावा नय उपज्या करे, इण बात री जाणकारी जरूरी
है। भाषा रो मिरजण समाज करचा करे, पण उण रो प्रयोक्ता व्यक्ति हुन है। अक
अकेलो आदमी भाषा रो ना तो मिरजण कर सके अर ना उणने आपरी सगळी ताकत
लगावर भी नूवो रूप देय सके। जिण समाज मे वो जनम लेवे, सिफं उणी समाज
मू दियोडी भाषा न उणने अनुकरण सू सीखणी पड़े। इण रें वावजूद हर आदमी
आपरी निजू पिछाण कायम करण खातर भाषा रें सगळे प्रयोग करण सू पाछो कोनी
रेंवे। आदमी री आपरी बुद्धि रो स्तर भी भाषा रें सामान्य प्रचलित रूप न नूवा-
नूवा अदाज देवतो रेंवे। यू भाषा रें सगळे जाण वक्षर कियोडा प्रयास अर अणजाण
तरीका सू हुयोडी भाषा री भूता रें माय सू हीज भाषा री समस्यावा पैदा हुया करे।

समाज जिण भाषा नें शताब्दिया माय जाय'र निर्मित करे उण नें मिनग नें
आपरे टावर पणें माय न नैवल सीखणो पड़े वल्कि जीवन रें थोडा सा बरसा माय
हीज आपरी सगळी परिस्थितिया माय उणरो हीज असरदार इस्तेमाल करण री
कोशिश करणी पड़े। इण कोशिश माय उण रा आपरे विचारा री अभिव्यक्ति, निजी
अनुभूतिया री अकण अर सप्रेषण भाषा सू मोकळी अपेक्षावा करे। विचारा नें
सुहावणें अदाज माय सप्रेषित करण री बात हीज भाषा रें कोण सू व्यक्ति अर समाज
रें अनेके सम्बन्ध री व्याख्या किया करे। समाज री सत्ता जिण आचार-विचार-
शीलता, मूल्य मर्यादा या रीति नीति माथे निर्भर कने, उणा मूहीज उण समाज री
भाषा निर्मित हुया करे। जद के आपरी रुचि, सस्वार, शिक्षा, मानसिक वणगट
अर कायें क्षेत्र री आवश्यकतावा रें मूजब मिनत उणरो इस्तेमाल किया करे है।
अ सगळी बात 'मुडे मुडे मतिभिन्ना' रें सिद्धांत रें कारण अक ही भाषा रें खातर
मैकडू रूप मे दवाव नाखती रेंवे। भाषा भना ही अक हुवो पण उण रा प्रयोक्ता
अनेक हुया करे। भाषा रा प्रयोक्ता व्याकरण रा पडित भी हुवे जिकर के उण रें
व्याकरण-मम्मत स्वरूप सू अक इच भी आगे को मरकणी चावे नी, तो उणरा
प्रयोक्ता मोकळी तादाद वाळा अनपड भाग भी हुवे जिका नें व्याकरण मू कोई

प्रयोजन कोनी हुवें । कबीर जेहड़ा लट्ठमार आदमी भी भाषा रो प्रयोग करे अर उण सू तानाशाह जेहड़ा व्यवहार करे, भाषा री गुलामी करण री जागा उण सू हर भात री स्वतन्त्रता लेवणी चावें । तो कल्पना री सूक्ष्मतर कोरा नै अर भावा री वारीक-सी अणदीसती रेख नै पकड़ण री कोशिश करणिया कवि-साहित्यकार भी भाषा रा प्रयोक्ता हुया करे । अँ लोग अनुभूति रा फूठरा चितराम खैचण खातर उण सू मोकळें लचीलपण री आशा राख्या करे ।

इणी तरयाँ सू दार्शनिक री भाषा-अपेक्षावा वैज्ञानिक री भाषा-अपेक्षावा सू जुदी हुवें तो व्यापारियाँ री अपेक्षावा शिल्पा री अपेक्षावा सू मोकळो आतरोपण राखें ।

किणी भी जीवत भाषा री सैगाऊ बड़ी चुनौती समाज रें लोगाँ री अँ सगळी भिन्न-भिन्न अपेक्षावा नै पूरी करण रें रूप मे रेंया करे । हर क्षण बदलती सामाजिकता रें सार्ग-सार्ग आगें बैवती रेंवण रें वास्ते भाषा नै रोजीनं भात-भात री कठिनाइयाँ सू सामनो करणो पड़े । अगर किणी भाषा री जडा गहरी हुवें अर बा आपरें पगा चालण रो माजनो राखती हुवें तो समस्यावा भलाँ ही जनमती रेंवो, बा उणा सू पार पावण रो रस्तो हमेसा मोघती रेंवें । पण अगर भाषा रें माय हीज कमजोरघा हुवें, जीवन रें सगळा क्षेत्रा री ताकीद नै पूरण रो जुगाड नी कर सकें तो बा मोकळो विस्तार को कर सकें नी ।

इण सगळी बाता नै ध्यान मे राखेर जद आपा राजस्थानी भाषा माथे निजर ढोडावा तो अँकें कानी इण री जूनी साहित्य-परम्परावा, ऊजळी काव्य-रूढिया, बीरता अर तेज रो उजास, मद्य और पद्य री मोकळी रचनावा, जुदा-जुदा बोल्या री निजू खासियता चित्त नै आनन्द सू भर देवें । पण दूर्ज कानी राजस्थानी रें वास्तें सगळी आत्मीयता अर अपनापं, प्रेम व श्रद्धा रें बावजूद इण री मोकळी कमजोरघा भी ध्यान मे आपा बिना कोनी रेंवें । राजस्थानी री अँ न्यूनतावा हीज उण री घणकरी समस्यावा नै निपजावती रेंवें । अठे उणा री विगतवार चरचा की जा रेंयी है ।

भाषा रें केन्द्रीय रूप रो अभाव—आपरी सगळी खूबियाँ रें बावजूद राजस्थानी भाषा ओजू ताई आपरें केन्द्रीय रूप रो निर्धारण कोनी कर सकी है । भाषा री अेकरूपता रें बिना उणरो ना तो निर्दोष व्याकरण हीज चणायो जा सकें अर ना प्रादेशिक सकीर्णता री समस्या सू ही पार पायो जा सकें । ऊपर सू हालाकें राजस्थानी री इण बोल्या माय की खास आतरोपण कोनी है पण उच्चरित शब्दा रें उच्चारण रो भेद अर सहायक क्रियावा री प्रयोगशीलता इणा नै अेक-दूर्ज सू जुदा कर रेंयी है । हाडोती रें माय शब्दा रो उच्चारण मेवाडी सू अलग अन्दाज मे करीज्या करे तो शेखावाटी रो ढूढाडी सू । अेक ही शब्द इण वास्ते जुदी-जुदी

रोत्यां रं माय आपरं निराळं दग सू उच्चरित हुय रंयो है। इण खातर भापा री अकरूपता अ-निर्धारित ही है। इणी तरचा सू मारवाही मे सहायक क्रिया 'है' रो प्रयोग हुवै तो दूजी जाणां 'छं' रो। जूनं साहित्य मे भी आ भेद मौजूद हो। इण कारण राजस्थानी रो आपरो केन्द्रीय रूप ऊभर कोनी पाय रंयो है। मतभेद मोकळी समस्यावा निपजाय रंया है। उणा रं मौजूद रंवता राजस्थानी रो तेजी सू विकास सम्भव कोनी दीखें।

व्याकरण री समस्यायां— राजस्थानी व्याकरण री पहलही समस्या भापा री आधारभूत ध्वनिया सू ही निपज रंयी है। भापा विचारा री अभिव्यक्ति रो माध्यम है, ओ अंक सर्वमान्य सिद्धांत है पण विचार दरजसल वाक्या रं रूप में प्रकट हुया करे। इण वास्तं भापा रो आधार ध्वनिया हुया करे। भापा रो सर्वमान्य स्वीकृत स्वरूप इण भांत ध्वनि रं सूक्ष्म रूप माय हर ठोड विदधमान रंया करे। सामर्थ्यवान् भापा व्यापक परिवेश अर भात-भात रं सोमां री आवश्यकतावा नै पूरी करण री, ध्वनि-समूह नै समेटण री ताकत स्वय मे राख्या करे। राजस्थानी रो परंपरागत ध्वनि समूह आपरी निजी पिछाण राखें। पण आज हर भापा रा रूप दूजी भापा सू तेजी सू प्रवेश करता शब्दा री आमद रं सार्गे तेजी सू बदळ रंया है। उणां री ध्वनिया री खूबिया आज हर भापा नै स्वय मे जगावण री पुरजोर कोशिश करणी पड रंयी है, राजस्थान मे भी आज शब्दा रो मोकळो आयात हुय रंयो है। पण इण रो पौरुष पूर्णता कानी भुकियोडो ध्वनि आधार मोकळी ध्वनिया सजोय कोनी पाय रंयो है। ङिगळ रं वगत सू होज आ समस्या राजस्थानी मे मौजूद हो। सायद ओहोज कारण रंयो हुवै कं कविमां राजस्थानी री इण कमजोरी सू मजबूर हुय नै वजभाया कानी भुक्क्या, जिण सू ङिगळ भापा रो विकास हुयो।

आज भी राजस्थानी मे संस्कृत रो 'ऋ' स्वर अर उण सू वण्योडा शब्दा रो उच्चारण कोनी हुय सर्व। कृष्ण, कृपा, कृहस्थ जेहडा शब्दां नै इणी मजबूरी रं कारण दिसन, त्रिपा, गिरस्थ रं रूप मे इस्तेमाल करणो पडें। अंग्रेजी री मोकळी ध्वनिया जिकी कं 'आ' अर 'ओ' रे विचाळें री है, उणा नै ओकार रूप देवणो पडें। कोलेज होस्टल, जेहडा दोपा आळा उच्चारण सार्गे आवें। जूनी राजस्थानी मे 'ओ' अर 'अऊ' रं रूप माय बदळण री जिकी प्रवृत्ति ही, जिण सू 'रासो' रो उच्चारण 'रासउ' ज्यू हुवतो। आ प्रवृत्ति हिन्दी-अंग्रेजी सू आवणिया ओकरात शब्दा रं उच्चारण माय मोकळी भाषा घातें है। इणी भांत 'न' वणं नै 'ण' रे रूप मे उच्चारण री प्रवृत्ति 'पाणी' 'धणिक', जिस्सा रूप दे देवें, जिण सू हिंदी रो 'कहानी' जिमें सरळतम शब्द रो उच्चारण करण माय राजस्थानी आळा नै खासी कसरत करणी पडें। राजस्थानी रो भूधन्य 'ल' अर्थात् 'ळ' वणं दण भापा री आपरी खास ध्वनि है

पण आ आज हिंदी, संस्कृत रा लकार युक्त शब्दा रें सार्ग मोकळी भ्राति पंदा वर रेंयी हे ।

सयुक्त अक्षरा रें वास्तं राजस्थानी म अणूतं सरळीकरण री प्रवृत्ति निजर आर्व है । इण सू भी परस्पर विरोधी वाता दीमं है । अंक उदाहरण देवणो हीज मोकळो हुसी । राजस्थानी माय 'र' वर्ण री सयुक्तता हमेशा सरळीकृत हीज हुवं । कदं भी उणनं रेफ रें रूप रें माय प्रयोग कोनी कियो जा सकं । 'आर्डर' नें 'ओरडर' 'सिर्फ' नें 'सिरफ' 'कार्यालय' नें 'कारियालय' रूपांतरण इण प्रवृत्ति री हीज सूचना देवं पण आ प्रवृत्ति हमेशा रें वास्तं अंक अनिवार्यता हुयगी है, जिकी भापा नें घणी हानि पहुचा रेंयी है । इण तर्या री मोकळी कमजोरया राजस्थानी रें शब्द-भण्डार नें सीमित कर रेंयी है ।

ध्वनि रें पीछे शब्दा री स्थिति हुया करं है । राजस्थानी में शब्दा नें लेयर भी मोकळी दिक्कता पेश आर्व । नूबा शब्दा रें आमद री कोशिका माय राजस्थानी भापा ओजू ताई मध्य-युगीन संस्कारा री बेड्या मू जकडीग्योडी है । मुसलमानी शासनकाल में शब्दा रें आमद री दिशा संस्कृत सू नी हुयर अरबी-फारसी मू ज्यादा हुवण लागगी ही । इण रो ओ दोष राजस्थानी माय पनपगो कं इण रो रूपाण आज भी अरबी-फारसी रें शब्दा नें सजोम राखण कानी है । सवादवाता री जाण अलवार नवीस, निवेदन रें स्थान पर अरज, प्रार्थना री जाण अरदास जेहुडा शब्दा में किणी भी तरं री आपत्ति कोनी । पण आज उत्तरी भारत री सगळी भापावा (राजस्थानी री सहोदरा गुजराती समेत) अंक वार फेरु संस्कृत सू तत्सम रूपा री आमद वर रेंयी है । खास तौर सू न्यायालय, विज्ञान, तकनीकी क्षेत्रा माय पारिभाषिक शब्दा री संरचना संस्कृत रें तत्सम रूपा मू हुय रेंयी है । पण राजस्थानी ओजू ताई खबर नवीस जिशा शब्दा सू चिपक्योडी है । इण सू इण री खासी हानि हुय रेंयी है ।

हूजी भापावा रा तत्सम रूपा नें स्वीकार करणो सोरो काम कोनी । हरेक भापा इणा नें लेयर आछी-खासी दिक्कत म पड जावं । राजस्थानी रें वास्तं तो ओ काम और भी समस्यावा फेंला रेंयी है । इण री ध्वनिया री मोकळी कमजोरयां अर इणा रें सातर व्याकरण री व्यवस्थावा रो घणकरो अभाव इण कठिनाइया नें बधावण रा कारण हुय रेंयी है । राजस्थानी भापा री प्रवृत्ति संस्कृत री अपेक्षा अपभ्रंश रा अप्रमरी-भूत रूप सू ज्यादा हेत रावं । इण कारण संस्कृत रें तत्सम रूपा नें इण म सीधा ही स्वीकार करणा परम्परा रा प्रेमी लोगा नें पसद कोनी आर्व । संस्कृत रें तद्भव रूपा नें अंगीकार करणं में इण री जिती भी चेष्टावा है, वें सगळी-री-सगळी अपभ्रंश री प्रवृत्तिया मू परिचालित है । शब्दा रें द्वित्व री प्रवृत्ति (जिया सत्त,

वम्) अर विपर्यय री प्रवृत्ति जिका धर्म री जागा धर्म, वर्म री जागा धर्म, गर्व री जागा धर्म जिसा अर इणी भात रा सैकड़ू तद्भव शब्दा रा उदाहरण, जिका के राजस्थानी भाषा री सासियता नै पेश करै, संस्कृत रै तत्सम रूपा नै वणती कोशिश अस्वीकरण री हीज सूचना देबै ।

आज जद के भारत री सगळी भाषावा वैज्ञानिक युग री नित नूवी सामं आवणवाळी आवश्यकतावा रै वास्ते या तो दूसरी भाषावा मू (वासकर अप्रेजी मू) तत्सम शब्द लेय रैयी है, या पछे संस्कृत रै तत्सम समानार्थी शब्दा मू पारिभाषिक शब्दा री निर्माण कर रैयी है । राजस्थानी रै वास्ते आहीज बात मोक्ळी दिक्कत पेश कर रैयी है । ओ ही कारण है के भाषा री भाषा री घरेलू व्यवहार खातर बरन में कोई सकोच बोनी बरण बाळो अके निमित्त राजस्थानी मिनस इणनै प्रदेश री राजस्थानी भाषा रै रूप में समर्थन देवण में सकोच कर रैयी है । अठे हिंदी भाषा री मिसाल सामं राख'र भाषा राजस्थानी री इण कमजोरी नै अर उण सू निपज बाळी समस्यावा नै समर्थन सकसा । हिंदी री हेताळू व्यवहार अपभ्रंश सू तद्भव शब्दा री अपेक्षा संस्कृत रै तत्सम रूपा मू सुलभतामक दृष्टि सू ज्यादा है । इण कारण इण नै नूवा पारिभाषिक शब्दा नै चडण माय संस्कृत मू सहायता लेवण खातर किणी भी भात री दिक्कत को हुवै नी । आज सू बीस-पच्चीस बरसा पहली हिंदी मार्ग ओ बडो भारी आरोप हो के आ भाषा तकनीकी, विज्ञान आदि रा नूवा क्षेत्रा री पारिभाषिक शब्दावळी को राले नी । पण आज घणी दूर ताई इण बमी नै हिंदी भाषा-भाषी दूर कर दी है । इण प्रक्रिया में उणा घणी दूर ताई संस्कृत री उपयोग करयो है । इण में कोई संदेह कोनी राजस्थानी नै अगर लारलें समय ज्यू हीज आपरें सामर्थ्य नै बडावणा है तो उण नै परम्परागत साध री मोह छोडणो पडसी । उण नै नूवें जगत री भाषा वणन खातर प्रातिकारी परिवर्तन करण वास्ते तैयार हुवणो पडसी अर दुज्जी भाषावा रै तत्सम रूपा नै है ज्यू हीज अगीबार बरणो पडसी । पण अपभ्रंश रै दैण रै रूप में आ आज भी शब्दा रा अपभ्रष्ट स्वरूप नै स्वीकार बरण री हीज आदत नी छोडसी तो इण री निज्जु पिछाण तो भले ही बरकरार रैय जासी पण आ विकासमान भाषा को वण सकै नी । अगर थो बोनी हुय सकै तो पछे तद्भवीकरण री इण प्रवृत्ति नै सब ठोड इस्तेमाल बरण री जवदेस्त मुहिम छेडणी पडसी जिन मू जिया लोक जीवण में जनता टेम (टाइम), बारट (पोस्टकार्ड) लिफामी (लक्ष्मी), मेठाई (मिठाई), सनेस (भदेश), जोगी (योगी), मसाण (भस्मान) रै रूपा में लोकाचार या रोजीन काम आवण बाळी शब्दावळी री देस रूप निर्मित बरणो है, उणी तरह सू इण प्रवृत्ति में व्यापक रूप में विस्तार देयर हो क्षेत्र री पारिभाषिक शब्दावळी नै आत्ममातृ करणो पडसी । ओ काम अके तो सोर

कोनी, दूजो इण माय ओक खास सभ्य समय री भी जरूरत पडसी। दुनिया आज जिसी तेजी स आगे बढ़ रयी है उणन देखता अगर राजस्थानी भाषा तदुबवीकरण री कछुवा चाल स हीज आगे बढ़ती रयी तो न केवल आ भाषा बल्क इण रा प्रयोक्ता भी रात-दिन पिछड़ता जासी, इण मे की सदेह कोनी।

ऊपर राजस्थानी र अपभ्रंश स भेळ री प्रवृत्ति री जिकी बात बताई गई है, उण न राजस्थानी री भाषा-समस्यावा र सदम मे थोड़ विस्तार स समझण री जरूरत है, क्योंकि इण प्रवृत्ति माय स ही इण भाषा री दूजी और समस्यावा भी सामे आई है। राजस्थानी भाषा र विकास न मोटे तौर स इण भांत तीन चरण मे देख्यो जा सक है —

(१) जूनी राजस्थानी— 11 वी शताब्दि स 16 वी शताब्दि ताई

(२) मध्यकालीन राजस्थानी— 17 वी शताब्दि स 19 वी शताब्दि ताई

(३) आधुनिक राजस्थानी— 20 वी शताब्दि स अबार ताई

आधुनिक राजस्थानी र वास्ते उण रा जूना अर मध्यकालीन अं दोनू रूप जुड़ी-जुड़ी समस्यावा उत्पन्न कर रया है। इण खातर इणा र अठ अलग-अलग विवेचन करणो समीचीन रहसी।

जूनी राजस्थानी स निपखोड़ी समस्यावा—उत्तरी भारत री दूजी भाषावा उय ही राजस्थानी री विकास इग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दि ताई अपभ्रंश स हुयो। विद्वाना मे अपभ्रंश रा प्रादेशिक भेद सेय न भनै ही मोकळा मतभेद हुबो पण इण बात मे सगळा जणा ओकमत है कं स्वय अपभ्रंश भाषा र विकास क्रम र माय उण र पहलड़ी अपभ्रंश अर पाछली अपभ्रंश र रूप मे दो चरण सामे आया। ज्यादातर भाषावा (जिण मे हिन्दी खास तौर स सामळ है) अपभ्रंश र पाछली रूप न आपरो आधार बणायो। अपभ्रंश र इण रूप न समुन्नत (अडवास्ड) या अप्रगामी अपभ्रंश री भाव दिरीज्यो हो जद कं उण र पहलडें रूप न परिनिष्ठित अपभ्रंश र रूप मे पिछाण्यो गयो। हासाकं इण दोना न अपभ्रंश ही कैवता पण दोनू रूपा मे मोकळो अन्तर हो, इण मे की सदेह कोनी। अठ इण भेदा री विगत मे जावण री जागा इण पक्षिया री सेखन इण बात कानी सुधी पाठका री ध्यान आकर्षित करणो चाव है कं राजस्थानी भाषा रा प्रारम्भिक प्रयोक्ता इण परिनिष्ठित अपभ्रंश स जुडियोडा हा। यू तो हर भाषा रा दो रूप हमेशा मौजूद रवै है। इणा न परिष्कृत भाषा व देसी भाषा इण दो रूपा स पिछाण्यो जावै है। भाषा री परिष्कृत रूप व्याकरण-सम्मत हुवै जद कं देसी रूप उण र विकसित रूप री बानगी दिया करे है। अपभ्रंश री परिनिष्ठित रूप भी इण सिद्धांत र मुजब उण र देसी रूप स दूर अपेक्षाकृत व्याकरण री बदिशा भू ज्यादा बर्षयोडो हो।

राजस्थानी रो प्रारम्भिक विकास इणी परिनिष्ठित अपभ्रंश सू हुयो । इण खातर इण माय सुरू सू हीज साहित्यिक सभावनावा सो मोक्ली पनपगी पण उण रो देसी आधार चौदहवी-पंद्रहवी शताब्दि ताई गायन-सो रैयो । इण रो परिणाम ओ निकळपो कं राजस्थानी रो प्रारम्भिक रूप प्रयोगां रं मोह रं कारण अर भापा रं परिनिष्ठित स्वरूप रो बहुतायत सू धीरं-धीरं सकुचित हुवण लागगो । मोळहवी शताब्दि ताई इण नं ढिगळ नाव सू पुकारघो जावतो । साहित्यिकता रो बहुतायत अर देसी आधार रो समाप्ति रं कारण आ भापा कृत्रिम वणगी । इण कारण जूनी राजस्थानी रं साहित्य मे प्रयोगां रो लूठोपण तो निजर आर्व पण जीवन रो ताजगी सका गायन दीर्घ है ।

ढिगळ भापा रो आ कृत्रिमता आपरो निजु असरदार विशेषतावा राखता यका भी भापा नं जड करदी, इण मे की सदेह कोनी । आज रो राजस्थानी रं वास्तं अक् मोटी समस्या आ है कं ढिगळ रं सस्वारी नं निभावणो आज मुश्किल अर अनावश्यक हुवता यका भी उणा सू वा (राजस्थानी भापा) मुक्त कोनी हुय पा रैयी है । इण रो अक कारण ओ है कं राजस्थानी रो ओ रूप भलं ही कृत्रिम हो, ओ हीज इण भापा रं व्याकरण रो आधार है । राजस्थानी रो सगळो व्याकरण इण भापा रूप नं मानव मान'र ही निमित्त हुयो है । भला ही टेंसिटोरी हुवो कं भला ही रामकरण आसोपा । अं सोगां राजस्थानी रं व्याकरण रं नाव मार्ग प्राप्त (साहित्य रो सीमावां रं कारण) दर असल सिर्फं ढिगळ भापा रो हीज व्याकरण लिख्यो है । अर्ब जड कं भापा रो रूप नित नूवो हुय रैयो है, जूना शब्दा रा रूप घिस रैया है, वाक्या रो वणगट नूवो जडाज धारण कर रैयो है अर तेजो सू भापा माय नूवो प्रवृत्तिया पनप रैयी है, उण वगत ओ व्याकरण इण रं विकास मे मोक्ली अडचण पंदा कर रैयो है । इण वास्तं आज रो राजस्थानी भापा रो इण समस्या सू छुटकारो पावण सारु ढिगळ रं मोह नं अर उण रं व्याकरण रो बदिशा सें खोडणो ही पडसी । इण रं विना इण भापा रो तज गति सू विकास सभव कोनी ।

मध्यकालीन राजस्थानी सू उपस्थोडी समस्यावा—ढिगळ जड सकुचित अर कृत्रिम भापा रो रूप धारण करण लागगी तो आम जनता मे तेजो सू उण सू अलग राजस्थानी रो देसी रूप विकसित हुयो । भापा रं इण रूप रो विकास लोक चेतना सू सातरं भाव सू जुडियोडो हो । ओहीज कारण है कं इण मे लोक-साहित्य रो मोक्लो सर्जन हुयो । भीरा अर राजस्थानी जन-भावना नं कडी गहराई ताई जुडियोडा राजस्थान रं सत सोगां रो साहित्य मध्यकाल रो भापा रं लोक आधार रं प्रमाण प्रस्तुत करै है । इण भापा माय सरळीकरण रो प्रवृत्ति खास ध्यान खींचण आळी विशेषता है । इण भापा मे हो संस्कृत रं शब्दा रा तद्भव रूप विकसित हुय

है। इण प्रवृत्ति सू हात्ताकें मानळो लाभ हुयो पण अक् मोटा नुकसान ओ हुयो नं
इण भापा री दिशा ग्रामीण भापा रो रूप धारण करणें री ओर प्रवृत्त हुयगी। ठेठ
ग्रामीण भापा रें रूप मे आ फेंनती रेंगी। इण सू आ जाणें भापा रें क्षेत्र नें छोड'र
बोली रें क्षेत्र मे प्रविष्ट हुयगी। भापा रो ओ रूप आपरें निजू मुहावरा रें कारण,
सरळता अर मिठास रें कारण राजस्थानी भापा रो अक् प्रभावशाली आधार
निमित्त किया। पण इण री दिशा बोली रें वायनी हुवण सू भापा रो रूप घोरें-
धीरें खतम सा हुयगो। चारण कविया ज्यू डिगळ नें अक् बणावटी अर मुशकिल
भापा बणावटी उणी भांत लोक चेतना राजस्थानी रें देसी रूप नें ग्रामीण बोली रा
रूप दिराय दियो। भापा विज्ञान रो ओ सिद्धांत है नं विकासशील भापा री दिशा
बोली सू भापा कानी प्रवृत्त हुयें पण मध्ययुगीन राजस्थानी रें लोक साहित्य री
प्रधानता अर उण रो ग्रामीण आधार आ गवाही देवें कें आ भापा दर असल बोली
कानी ज्यादा विकसित हुयी। सामान्य हिंदीजन या दूसरा भापा-भापी राजस्थानी नें
भापा नी मान'र बोली मानें उणारी धितना रो ओहीज आधार है। इण वास्तें आपा
जद राजस्थानी नें भापा रें रूप म सविधान म मायता प्राप्त भापावा री सूची म
सामल करावणी चावा उण वगत दूजा लोग इण रो समर्थन इणवास्तें कोनी करें नं
उणा रें मत म आ बात घर करगी है नं राजस्थानी दर असल बोली ही है भापा
कानी। इण भात मध्ययुगीन राजस्थानी रो भापा रूप इण रें खातर आपरेंदग सू
समस्यावा पैदा कर रेंगो है। लोगा रें इण भ्रम नें तोडण सारू अर राजस्थानी नें भापा
रो समानप्रद रूप दिरावण वास्तें आ जरूरी है कें आपा इण री गति री दिशा नें अध
बदल दवा। शहरीकरण री प्रवृत्ति जद आज समग्र देश रें समाजशास्त्र रो आधार
वण रेंगी है उण वेळा राजस्थानी भापा री ग्रामीण दिशा नें ताडघा बिना उण रा
विकास असभव सो है। आ बात सुधी पाठका ज्यूही इण पत्तिया रें लेखक नें भी
चाखी कानी लाग रेंगी है। पण ज्यू आज सगळी राजनीति, विज्ञान, उद्योग ही नी
दश री सगळी समाजिक, आर्थिक अठे ताणी कें सांस्कृतिक दशावा रा नियमन, उणा
रा नतुत्व अर उणारी सगळी धितावारावा तक जद कें शहरी मानसिकता सू
नियंत्रित हुय रेंगी है उण वखत राजस्थानी री ग्रामीण-मुखता नें सजोय राज र
आपा विकास कोनी कर सकसा इण बात म रक्मान भी सदेह कोनी।

आधुनिक राजस्थानी री समस्यावा—राजस्थानी रा आधुनिक रूप सगळी
कठिनाइया समस्यावा रें वावजूद तजी सू उभर रेंगो है। आ बात आपा नें आश्वस्त
कर र होसलो अपजाई भी करे। पण आज री राजस्थानी भापा री भी अक् जबदस्त
चुनौती रें रूप म सामें खडी समस्या है। राजस्थानी नें आज स्वय री पिछाण कायम
करण री चुनौती सू जूझणो है। आ समस्या हिंदी सू अलग आपरो निजू पिछाण

वायम करण' री है। गुजराती अर राजस्थानी दोनू भाषावा सीळहवी शतीं ताई अेक ही ही। पण उणरें पछें गुजराती तो आपरो स्वतंत्र भाषा रूप विकसित कर लियो पण राजस्थानी (जिमा पहूने स्पष्ट कियो गयो है) या तो डिगळ रें वनावटी रूप नें आरंभ वढायो या देखी रूप नें, जिवो घोरें घोरें बोली रो रूप धारण कर लियो। आज गुजराती नें हिन्दी री बोली मान कंवन री हिम्मत कोई कोनी कर सकें पण राजस्थानी न केवल भाषा ही को भाजीर्ज नी धर्क इण नें ध्यारू फेर हिंदी री अेक बोली रें रूप म ही समझी जावं है। राजस्थानी री आ समस्या संगळ टेढी सब सू भीषण अर उण रें अस्तित्व मार्य हीन सवाल खडो करण भाळी घोरतर समस्या है।

समस्यावा रो निराकरण—अें सगळी समस्या सू पार पावण सारू राजस्थानी री दिशा तो बदळणी पडसी ही (जिण सू कं आ आज री सामाजिकता अर युगधारा सू जुड सकसी), इण रें विस्तार रा घणा-सारा उपाय भी करणा पडसी। भाषा रो विकास अेक-दो वर्षां मे कोनी हुया करे, ना अेक दो विद्याना-पंडिता री चेष्टावा सू ही उण मे गति उत्पन्न हुवं। अें बात जित्ती साची है उती ही आ बात भी साची है कें किणी भी भाषा रो समस्यावा अेहूडो कोनी हुवं कें अणसुलभायाडी ही रेंय जावं या समस्यावा रें कारण भाषा रो विकास होज दक जावं।

भाषा तो बंक्ते पाणी री घारा है। अगर उण मे गति है तो कित्ती बाधावा सामनं ब्यू नही आजावं बा तो आपरो रास्तो पाय ही रेंवेसी। समस्यावा उण रें मार्ग मे रोडा भलें ही नास दें, उणनं रोक्कण मे जड वण'र पूरी तरघा-सू समर्थ कोनी हुय सकें।

राजस्थानी भाषा री गति पूरें अेक हजार बरसा सू वायम है। इणरी घात्रा मे दूजरी भाषावा रें ज्यू होज भोवळा उतार-बढाव आया है। आज उण री गति नें तेजो देवण री जरूरत है। चेष्टा करघा सू राजस्थानी रो बाछिन विकास भी संभव है, आ अेक निर्दुग्ध बात है। राजस्थानी री इण दशा सारू अपेक्षित चेष्टावा मे संगळ जरूरी इण रें शब्द भंडार रो विस्तार है। हर भाषा री ताकत अर गतिशीलता रो आधार उण रो शब्द भंडार हुया करे। भाषा री समृद्धि रो पिछाण शब्दा रें सादाद मू हुजि तय हुवं है। राजस्थानी रें शब्द भंडार बीरता, तेज, रीन, भक्ति जेहूटा भाषा री अभिव्यक्ति सारू जिया मामध्यं अजित करी ही आज बौद्धिक-बैचारिक क्षेत्र री सर्वांगीण अभिव्यक्ति सारू भी उणी बात इण नें आमसात् कर'र आपरो सामध्यं बढावणो पडसी। जीवन रें हर क्षेत्र री, भाषा रें हर तरह री कोर री, सौंदर्य री हर तरह री दिशा री, बुद्धि री हर तरह री रंगत री अभिव्यक्ति करणं आळी सदावळी मे राजस्थानी म पनपावण री जरूरत है।

शब्द मंडार री दूसरी दिशा पारिभाषिक शब्दा रै विकास री भी है। आज जिती तेजी सँ समाज गतिशील है उतँ ही वेग सँ हर भाषा सँ पारिभाषिक शब्दा रै निर्माण री अपेक्षावा भी बढ़ रँयी है। राजस्थानी इण रूप मे मोकळी पिछडती जा रँयी है। इण कमी नँ दूर करण सारू व्यापक अर गभीरतम प्रयासा री जरूरत है। लेखक री समझ मे अकादमी नँ अँक बृहत् प्रायोजना (प्रोजेक्ट) बणाय'र विज्ञान, दर्शन, साहित्य, तकनीकी आदि जिसँ हरक्षेत्र री परिभाषिक शब्दावलिया री निर्माण करणो चाहिँजै। इणरँ बिना राजस्थानी री विकास सभब कोनी लागै।

शब्दकोश री निर्माण—आ भी भाषा री एक जवर्दस्त चुनौती है। राजस्थानी मे ओजू ताई वण्योडा शब्दकोश अछूरा, अँकागो अर अपर्याप्त है। इणा री अँक बड़ी कमजोरी आ है कँ उणा माय कोरी साहित्यिक सदभँता मौजूद है। जीवन सदभँ रा सगळा आमामा सँ जुडियोडी शब्दावळी अर उणारी अर्थ-निष्पत्तिया री निर्धारण किया बगैर भाषा री विकास असभव है। इण वास्तँ अठीनँ भी ध्यान दियो जावणो बहुत जरूरी है।

राजस्थानी अँक व्यापक क्षेत्र री भाषा है। आज राजस्थान माय ही नहीं उण क्षेत्रा माय भी इण री व्यापक प्रसार है जठँ प्रवासी राजस्थानी लोग व्योपार कर रँया है। अँ प्रवासी लोग इण भाषा नँ बगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु रँ अतिरिक्त विदेशा माय ताणी फैलाय दी है। पण इण री व्यवहार धरेलू भाषा रँ रूप मे हीज हुय रँयो है। मध्ययुग मे राजस्थान रा व्योपारी लोग इण री व्यावसायिक हस्तेमाल कियो हो अर महाजनी रँ रूप मे इण नँ अँक व्यापक क्षेत्र रँ व्यवहार री भाषा बणाय दी ही। कोई भाषा जद ताई धरेलू भाषा रँवँ उण री विकास को हुम सकँनी। इण वास्तँ राजस्थानी री महत्ता नँ अँक बार औरू स्थापित करण सारू इण नँ व्यावसायिक-औद्योगिक क्षेत्र री भाषा रँ रूप मे विस्तार देवणो जरूरी है। इण खातर राजस्थानी मे पारिभाषिक शब्दावळी री विकास भी करणो पडसी। इण शब्दावळी रँ सिरजण रँ बिना राजस्थानी री उन्नति या प्रगति री बात मान भावुकता सँ करघोडी कल्पना भर हुयर रँय जासी।

भाषा रँ तेजी सँ विकास खातर अखबारा-पत्रिकावा री मोकळी आवश्यकता है। इण क्षेत्र मे राजस्थानी मे इण कमी नँ दूर किया बिना उणरी समस्यावा नँ पार कोनी पायो जा सकँ पण दुख री बात आ है कँ आपा राजस्थानी मे अँक भी दैनिक अखबार तो निकाळ सका कोनी अर सरकार सँ आ अपेसा करा कँ बा राजस्थानी नँ सरकारी कामकाज री भाषा बणाय देवँ। (कोई सँतीस बरस पहली श्री रंगाभाई जयपुर सँ जागती जोत नाब री राजस्थानी मे अँक दैनिक पत्र निकाळघो हो। वो अनियमित हो अर थोडँ असेँ पछँ बढ हुयगो) इणी भात आपाणी राजस्थानी

भाषा जठं ताई सगळें ज्ञान-विज्ञान रें विषया री भाषा रें रूप मे इस्तेमाल नी हुवें, उणरी समस्यावा का मिट सकसी नी। ओजू ताई आ सिफें साहित्य री भाषा हे। सौ-नचास साहित्यकार इण रो प्रयोग पुस्तक लेखन मे कर रेंया है, पण जद ताई इण नें सगळें वाङ्मय री भाषा रें रूप मे इस्तेमाल नही कियो जासी आ पिछडघोडी भाषा होज वणी रहसी।

इण भास ससार री दूजी भाषावा ज्यू होज राजस्थानी री भी आपरी मोकळी समस्यावा हे। समस्यावा हुवणी भूडो वात कोनी, आ तो खुशी री वात हुवणी चाहीजें। इण खातर निराश हुवण रो कोई कारण कोनी। जठं ताई भाषा रें सामनें समस्यावा खडी रंसी, बा जीवत अर चुणौतिया सू जूझण आळी भाषा वणी रहसी। बिना समस्यावा रें भाषा मृत भाषा वण जावें। राजस्थानी री मोकळी समस्यावा इण रें जीवन रें घडकण री सूचना देय रेंयी है। इण वास्तं इणा सू भय खावण री या निराश हुय जावण री किंचित् भी जरूरत कोनी है। आज री प्रत्यक्ष जरूरत आ है कें आपा राजस्थानी रें तेजी मू बिकास सारू सचेष्ट हुवां ब्यू कें ओ कोरी भावुकता रो प्रश्न नी है। ओ आपा री सगळी आस्थावा रो, विश्वासां रो अर आपा री सगळी वैचारिक सामर्थ्य अर बौद्धिक जागरूकता रो प्रश्न है। इण ओळघा रें लेखक रें आशा ही नी, अटूट विश्वास है कें आपा इण परीक्षा म खरा उतराला।



(राजस्थानी रणा मे प्रकाशित)

राजस्थानी साहित्य की नूवी कविता

साहित्य हरमेस परम्परा ने जीया करे पण आपरे निरास अन्दाज म । एक परम्परा सू द्रोह दूजी परम्परा सू भूतपात रो कारण हया करे । जूनी परम्परा रो विरोध नूवी काव्य प्रेरणा रो हतु वण ने उण रो प्रवर्तन करिया करे । हर टेम री नूवी काव्य चेतना बदलियोडो जीवण दसावा माय जूनीडो भीत री निजरा रे दूटता खण्डहरा मार्य मायो ऊचो कर ने गरब सू ऊभो होवण री चेष्टा किया करे । बदलाव री ऐडी वाता हर युग म सामी आवती रँवे अर नूई नूई अनुभूतिया ने नूअे नूअे डग सू परकट करण री आपरी निजू शेलिया रो सिरजण करती रेह्या करे । आगे जायन ऐ परम्परावा भी प्रयोग री मोकळी पुनरावृत्तिया रे कारण फीकी पडती जावँ । जिण सू द्रोह रो भाव आपी आप नूवा चितेरा म दोसण लाग जावँ । परम्परा रो आ अनूठो डग साहित्य री नित नूवी सिरजण चेष्टावा आगीने धकसती रँवे ।

नूवी कविता री सज्ञा सू हिन्दी म जिकी चेतना उभरी ही उण रा आधार बोरो मोरो परम्परा सू विद्रोह रो भाव हीज बोनी हो । उण रो आधार बदलियाडा युग री एक अणदवीसती माग ही । दूजोडा महापुढ र पाछे दुनिया भर म जिको विचार मथन हूया वो जूना मूल्या अर आदर्श न अचाणचक म हीज भूठा अर निबन्मा बणाय र परे नास दिया । इण भावना न देस री आजादी अर उण र पाछ री सगळी जीवन दसावा घणसरि पुष्टता दिरायी । ऐडी टेम रचनाकार रा हिबडा मोहमग रा अनुभावा सू भरीज न नूवे युग री माग न रचना रा विषय बणावण खातर आगीने आयो । आ लोगा री चेष्टावा प्रयोग न हीज आपरो इष्ट मानियो अर नूवी पगडडिया मार्य आपरा पगलिया घरता थका साहित्य सिरजण किया । इण काव्य आन्दोलन न नयी कविता रो नाव दियो गयो । छठो दशक हिन्दी म ता नई कविता रो दशक वण र सामी आया जदे के उणी युग म उणी जीवन दसावा मे जीवण आळा राजस्थानी रा रचनाकार उण बोध न कोनी पकड सक्या । पण परम्परावा सू द्रोह रा भाव इणा माय भी वूरियोडा छाणा जिया माय ही माय सुलगतो हा इण म भी किणी भात रो सन्देह कोनी है ।

नूवी काव्य चेतना एक आवश्यकता— राजस्थानी रचनाकार र वास्त नूवी चेतना ने सामी लावण री चेष्टा आज रा बाध न धारण करण री वारी एक चुनोती हीज बोनी हो एक तरासू उणा री मजबूरी भी है । डिगल री वेळा सू ही

राजस्थानी साहित्य की चेतना माथे आचलिकता अर लोक संस्कृति की छाप मोकळी गहराई ॥ छापीजियोड़ी ही । अठे की ऊजळी अर बीपती लोक संस्कृति अठे रे लोगा रे सोच ने सागीडे भाव मू जकडियोड़ी ही । इण अचल की आपरी निजू पिछाण जिण रूप मे कायम ह्वयो ही उण सू नीसरणो सोरो काम कोनी हो ॥ सिरजण की वेळा उण की चेतना माथे संस्कृति रा सगळा पंलाव ह्वयो रेंवता । उण सू आतरे जावती वेळा उण ने ओ गतरो हरमेस रेंवतो के आचलिकता रो पल्लो छोटती वेळा कंठ ही उणा की खुद की निजू पिछाण ही खतरा मे नी पड जावे । आजादी रे पूठे इणी कारण अठे रो रचनाकार और गहराई सू जूनी परम्परावा सू जुडग्यो । गोरडी रा गीता रा के घोरा की महिमा रो संगीत होज गुणगुणावण लाग्यो । उण की आख्या रे सामी वेंवती समान्तर जिनवाणी जाणे उण रे वास्ते की भी महत्व कोनी राखती । अर बा आख्या मीच'र जूनी बाना मे हीज आपरी शक्ति खरच करतो रेहो । आ बात नूआ मिरजण रे वास्ते मोकळी चुनौती ही जिण सू जूझण मे के की भी भात रो मकोच कोनी कियो ।

नूआ हस्ताक्षर—राजस्थानी साहित्य मे नूवी कविता की चेतना रो विकान दोबडी अपेक्षावा ने धूरण की कोसिस ही । एके कानी तो युग की माग ही जिण ने हिन्दी आळा कवि धूर रह्या हा अर जिणा रो सीधो असर आ कविया माथे पडतो जरूरी हो । दूजी कानी अठे रा कवि की खुद की माय की माय कसमसीजती चेतना ही जिकी के परम्परा सू मुक्त ह्वण खातर आपरी धूरी साकत सू कोसिस कर रया हा । फेर भी राजस्थानी मे नूवी कविता की सधवात सातवा दसक ताई कोनी हुई सकी । हालाके उण कानी नदम बडावण रा सागीडा सकेत मिलण लाग्या हा । इण अणन्युत्तोडी दीडती आवती काव्य चेतना सू परहेज करणी अब सोरो काम कोनी हो । नानूराम संस्कृती, नारायणमिष भाटी, देवतदास चारण, गजानन धर्मा, मयप्रकाश जोशी सारीसा कवि नूवी जमी की पिछाण रा आसार खडा करण लाग्या । इणा मे नूव जमाने की जीवती सम्वेदनावा ने माहाणी नकारण की प्रवृत्ति फोकी पडनी । नूआ भाव बोध रे वास्ते ऐ लोगा राजस्थानी साहित्य रा दरवाजा खोल दीया । डा मनोहर शर्मा रा अ बोल करवटीजती परिपाट्या रो प्रमाण हे— 'कवि वरूपन' रो हस/मन भावतो हे ता यथार्थ की कोचरी भी कम रूपाली कोनी/ हस रे गीता रे साथे/अव कोचरी रा भी गीत गावो ।'

नूवी कविता की ओळखाण—इण नूवी कविता की साथी ओळखाण सन इबातर मे प्रकाशित काव्य संकलण 'राजस्थानी-एक' सू हूय सकी । जूनी चाल आळी कविता ने इण संकलण की मोटी रूपरेखा हिन्दी मे अजय सू सम्पादित 'तार-मन्त्र' सू प्रेरणा लेय ने मिरजिन हुई । नूवी चेतना रा गाँव कविया ने सामी लावण

वालों ओ सकलन पण तार सप्तक री कोरी मोरी सही नकल हीज कोनी है । पंसन री चाल ने अपणावता थका भी इण सकलण री बवितावा रे माय राजस्थानी री आपरी मिठास, रचनावा रो निरालो अन्दाज अर कव्य री आपरी ओल्लाख मौजूद है । सकलण रा पाँचऊ कवि मोरघन सिंह सेखावत, पारस अरोडा, आँकार पारीक, मणि मधुकर अर तेजसिंघ जोधा एकण कानी नूवी चाल ने लीक देवण री सचेत विचारधारा राखे है तो दूजी कनी आपरा निजूपणा ने भी दरसावण म पाछे कोनी रवे है । इण सकलण सूं राजस्थानी री नूवी कविता रो पिछाण कायम हुई । जिण माथे आजरा मोकळा कवि आपरा कदम बढाय रह्या है । इण माप चन्द्रप्रकाश देवल, साधर दइया, नन्द भारद्वाज, विश्वनाथ शर्मा विमलेस, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, लक्ष्मीशकर दाधीच, हरमन चौहान, पुरुषोत्तम छगानी, सत्येन जोशी, प्रेम जी प्रेम राजेन्द्र बोहरा जेडा एकदम नूवा कविया रे सागे साने मोहम्मद सदीक, मोहन अलोक, शिवराज छगानी, अन्नाराम सुदामा, रघुराजसिंह हाडा जिसा कवि सामळ है ।

भाटी रो अणभावतो कोड—राजस्थानी री नूवी कविता हिन्दी री ऐसी कविता स घणखरी दिसा लेवता थका भी उण री पिछलमू कोनी है । नूएपणा रा सस्कारा ने ऐ लोग हिन्दी रे सागे साने सीधा बिबेसी साहित्य सूं भी अपणावण री कोसिस की है । इणा रे माय भाटी रो कोड सातरे भाव सूं सम्बेदनावा सूं गुपी-जियोडो धीसे । ऐ कवि नूवे भाव बोध रे मिनख रे रूप मे निजूपणा ने खोजता थका भी आपरे ओळू धोळू री हुवा री ताजी महक ने छोडणो कोनी थावे । भीडतन्त्र रो एक अग होवण रो अहसास इणा माय अनुभवा सूं पापीजियोडो निराश भाव भरे है । पण इण रे सागे गांव री आपरी पिछाण राखण री दर्दीली अनुभूतिया भी इणा री चेतना मे जमियोडी है—‘ओ गाव म्हारो है/राजनीति सूं मूत्योडो ।’ इणी तरा सूं जूनी परम्परावा री निरर्थकता रो अहसास भी जीवते रूप मे उभर्यो है—‘आ भायला/हेलो पाडा चूच भिडावा/तमासो करा/आ मितर/घतूरो घोट/मसाण जगावा/साथे मरा ।’ (मणि मधुकर)

परम्परा सूं द्रोह अर बीद्व्या रो आतरोषण—आजादी री अणओपती बाता इण कविया ने बिद्रोही बणावे । सामाजिक जीवन दसावा गीय वगं भावनावा, मिनख विरोधी आचरण रो विरोध इणा री कवितावा माय उग्र भाव सूं सामी आई है । ऐ कविया रो सगळो विरोध, कविता रो जुझारूपण अर भासा री गुस्सेल तवियत, आर्थिक असमानतावा ने खासतौर सूं चवडे लावण रो एक मोटो उपक्रम है । मोहमग री ला पीडा दर्द रा दस्तावेज वणर इणा री कविता ने भिभोडती निजर आवे है—

सोम केतु सूरज ऊगो, पण बढे गयो परकास
 हाथ हाथ न लावण दोहे विण री रासा आस
 मुलक री मा बंडी भाजादी
 पूत पितर में मन्वी छिनासी
 चारु दिस बरवादी । - (गणेशीलाल साल ब्यास 'उस्ताद')

आज री अराजक जीवन दसावा जिन अमूजे रो सिरजण बरे उणा मे जिनगी
 री आस्था पूरी तरे सू भम्पोजगी है । ऊगते सूरज रो उजास अधारा रो जिवो
 फंसाव लीयोडा है उण मे सोम घोखे मे पडियोडा भरमीज रेंग है । जिनगणो
 आजीवन बारादास री यातना भोगती, कंद हुयोडी साफ साफ निजर आवे है—
 'काच रं वैपरवेष्ट मे बन्दी किणो रग पुसण री भात/अंक पार दरसी कंद मे/बाट
 उडीकती जिवगणी ।' (पारस अरोडा) । मोहम्मद अर व्यवस्था री अराजकता
 अणदबियोडा भाव सू इण कवि रो चेतना रो अग बणियोडी है जिण री हिसोरा
 ऐणी कविता री ओळो ओळी भाव निसरती रेंवे है ।

अमूजे रो उकळतो लावो—दिवाळा रा सगळा सिरकारी भूडा समारोहा रे
 नारे मेह सू वेला री जाळी पीळी भांघी तेजी सू बेवती आप रह्यो है । ऐ कवि
 लोगा ज्यू आस्था मीच'र माडाणी नकारण री भूत कोनी करे । अराजक जीवन
 दसावा रा हेतु रूप राजनीति अर उण री सगळी सुगली-भूणडी बाता ने मैहदी रा
 माडिमा ज्यू बारीकी सू कविता मे उठार्या है—

'प्यारे भैणो और भाइयो/आज आपन मैं बताव न आयो हू मे/मैं चुनाव मे
 गडयो हुमी हू/ जीयाँ पैल्या बीरबली धी हुनुमानजो/सब मे जाकें असोक बाटिका
 उजाडी बैया ही मैं टेबल कुरसी उठा उठा के पटक पटक मारुगा विरोधिया रे सिर
 म/आध्या तीस मारुगा भी बारे भागता विरेगा' (विश्वनाथ शर्मा बिमलेश) ।
 अमूमती मिनल चेतना री उकेर इण कवितावां भाव ऊडी घणी है । सत्ता रो अलक
 उण ने घणी देर तई अने दबाव को राख सकें नी इण मे इणा री पूरी आस्था है—
 'आगणे रो अमूजो/घरती वर/भम्पाड़ वण'र पूटती बार लो मोसम/मायले अमूजे
 री/रोकधाम/करण बढ आडो आपो/बढ आडो आसी ।' (मोहम्मद सदीक)

नूवी जर्मी रा ओळखीजता आखर—राजस्थानी री नूवी कविता री पिछाण
 बरावण आळा ओळखीजता आखरा री भाषा अवे भणियोडा रो सन्तोष कोनी रेंगो
 है । इण कविता री यात्रा गिरती पडती उणी दिसा माय आगोने जाय रेंह्यो है ।
 जिण दिसा में आज री हिन्दी कविता हो बडं सगळी भासावा री कविता री यात्रा
 घणवरी वढती छीसे है । बोध रो ओ स्वरूप ऐणी रचना-प्रयासा रा ऊजलेपल री
 साव्य भरे है । इणा री कवितावा मे जिनगणी री ऊब घुटन अर वेकालतूपण—

राजस्थानी साहित्य री नूवी कविता

जिया घर मूँ दहतर/दफनर सू घर/जिया म्हे जिया/तो फकत ओ सफर/जिया' (मोहन आलोक)। मूल्यहता आचरणा ने चवडें लावण खातर मूल्यहीनता अर जडता आदि रो चितरण जिया—'बयू एक रघुनुसी ऊभो है भुबयोडो/जर्ग जर्ग सू दूट्योडो तिडक्योडो/जमानो/नी जाणै किण री स्वतन्त्रता सारू निरन्तर कर रैयो है सग्राम (रघुराजसिंह हाहा)। संगामू ज्यादा विडम्बनावा ने सामी लाअणवाळो व्यय रो हथियार भी इणा री कवितावा माय आपरी जुदी पिछाण करावे जिणनं आचणो दोरो कोनी है—'घारें मे वाई गुण है/कै तनं नया, गैला मास्टर' (रामेश्वरदयाल श्रीमाली)।

ऐ प्रवृत्तियां राजस्थानी री आज री कविता री दिसावा ने सागीडे भाव सू प्रकट करती दीसे। इणा सू अब ओ भरोसो लियो जाय सके के राजस्थानी मे अब कोरी मोरी कल्पनावा आळा 'गोरडी रा गीत' के 'धोरा री धरती रो सगीत' के 'मारू री प्रेमकथावा' रा दिन लदग्या। इण धरती मे बीरा रा रगत री छापा ने सोधणो बीकर सम्भव है बयूके जमी रो एक एक कण अबसरवादिया-भ्रष्टाचारिया री लीखा सू रळीजियोडो गिधाय रैयो है। अवे तो आज रा उबळता सवाला ने घाचणो जरूरी है। जिण सू सायत जिनगाणी रे साथे, आज रा मितल रे साथे, मितला री दूटयोडी आशावा रे साथे, अर पाठका री अपेक्षावा साथे किणी भी भात रो न्याय कियो जाय सके। नूवी कविता रो प्रयोग करण आळो राजस्थानी रो आज रो कवि इण मुजब री जागरूकता री मोकळी ओळखाण करावे इण मे किणी भात रो भी सन्देह कोनी है। ऐ सगळी घाता राजस्थानी री नूवी कविता री घोखी सम्भावना रो भी भरोसो दिरावै है।

□

(जायती बीत में प्रकाशित)

धरती री आस्था रो रचनाकार :

कथाकार अन्नाराम सुदामा

धरती री आस्था री साव—अन्नाराम सुदामा धरती री आस्था री रचनाकार है। धरती ही इण रो विश्वास, इण री रचना—प्रेरणा अर इण रो प्रतिपाद्य है। धरती सू छेड़ै इण वास्तै न तो किणी भात रो कथा क्षेत्र है, न किणी भात रा जीवन री आचार सहिता। इण री रचनावा मे न तो धोरा रो रजत सिणगार है, न गोरडी री घाकी छिबया, न प्रेमकथा रा सबइका है, न मोढ़ावा रा पौपेय करतव। इण री रचनावा माय राजस्थानी रा लेखका री ऐडी बेडिया सू दूर आज रे गाव रो मयार्थ साचै रूप म उपस्थित है। वे गाव जिणा मे गरीबी है, पिछड़ोपण है दोवडा आदर्श है, फालतू री रुडिया है, मस्कारहीण आचरण है, अगिशा रे सार्ग उण रा मिनता री मजबूरिया है। इण बाता नै चित्त सृ सामी ताय नै ओ लेखक आपणा ओलखियोडा गावा ने नूवी ओलखाण दिरायी है। ऐ बाता इण लेखक री अनूठी पिछाण हीज कोनी करावै बल्कि मानवीय आस्था रो ओ रूप सगळे राजस्थानी साहित्य रे नूवे अनुभव रो दरसाव भी करावे है। आम भादमी रे हवै री आ ओलखाण राजस्थानी गद्य री आगामी सम्भावनावा नै उजगार करण रा ठोस काम भी करै है।

गाव रा मयार्थ रा वरणन करण वाला सगज रचनाकारा माय एक मुजब री उपकार चेतना दीसिया करै। गाव रो अग्रण करता यका ऐहा लेखक आपरी निजता ने कोय बिरमाय सबे। भारेसू आयोडा संतानिया अयू गाव री घणकरी बाता न ऐ जाणे मूबी कंमेरा री सहायता सू पकड न पाछो वरणित कर देवण म हीज वे आपरे लेखक कर्म री इतिथी कर देवे। गाव री बाता ने समाज अर देस री मोटी मोटी समस्यावा सू जोडनवाळा अे रचनाकार भाटी रा जुडाव री साची पिछाण कोनी कराय सर्व। वैन वास्ते गाव साची कोनी हुवे आपरी खुद री विचारधारा माची हुया करै। जमी रो कोड वैन रचनाकर्म रो आधार कोनी हुवे। यश रा कोड उणा ने जमी सू जोडिया करै। इणी वाम्ते उणारी लेखनी जमी रा माच सू सागीडे भाव सू एकमेक को हुय सवेनी। एक्ण कानी उणा री खुद रो जुदो आस्थावा रवे तो दूजी कायनी धरती री सोचियोडी बाता काल्पनिक घटनावां माथे टिकयोडी रंग न

जुदो-जुदो असर निपजाया करे । धरती रो साच उणा री कलम सू सामी तो आवे पण उणा रो आप रो सोच उणा माथे मौकळी तरा सू छायोडो रेखा करे ।

पण अन्नाराम सुदामा रे वास्ते आपरे सोच सू भी बेमी आपरी जमी रो महत्व है । वो साधक रे भाव मू रचनाकर्म कीनी है । पाठका तई उणारा विचार सम्प्रेषित हू जावे तो मेहनत सकारण नही तो कोई बात कीनी । सोचरा स्थूल वंचारिक आधारों ने रचना मू अलगावण री ऐ भागीरथ कोशिका इणा री सगळी रचनावा मायने दीसे है । इण कारण इणा री कथा मृष्टिया माटी री ताजी महक मू रळियोडी है । ऐ इण महक रो इस्तेमाल निजर ने ऊपर सू भाव मू जोडण री जागा गाव री इच-इच जमी मे जायोडा साच ने सामी लावण खातर कियो है ।

ग्रामीण पद्यार्थ—अन्नाराम री रचनावा रो गाव घटनावा री घमकती मोत्या री लडी कीनी है । न 'भारतमाता ग्रामवासिनी' वाळो पूज्य भावा रो धोवो प्रदर्शन ही है । इण रो गाव आप री सम्पूर्णता मे मुघियोडी एक इकाई वाळो गाव है । कथा री रचाव इण री रचनावा माय आपरी निजता मे सम्पूर्णता खोजण रो बन्धण तो म्दीकारे पण पोध्या सू निपजियोडा ज्ञान रो नकळी आडम्बर री किणी भात री पिछाण कीनी राखे । उपन्यासा री एक एक ओळी आपरी सगळी ताकत सू गाव री जीवनधारा मे प्राण फूकण री चेष्टा करती निजर आवे है । जिण माटी मे मीगणी भी है, जमी सू रळियोडा काटा भी, है धोरा रो सपाट फँराव भी है पण इण रे मागे मागे उणा मे बीजा मे फळावण रो उपजाऊपणो भी है । इणा रे कथावा रो जीवन मिनत्व रे व्यक्तिपणा री पिछाणा रो प्रयास है, जिणने आपरी चेतना री सगळी आस्थावा सू ओ रचनाकार सामी लायो है । जाने धरती एक चोखी तरऊ फँलियोडी एक रचनापट है जिण माथे अन्नाराम आपरी कलम री कोरणी सू खोखा-मूडा, ओपता अणओपता, पूठरा टाटा सगळो तरे रा मिनत्या न जुदे जुदे रग रूप सू उकेरिया है । इण कारण इणा री रचनावा न पढती वेळा पाठक जाणे गाव री जमी म सामे लेवतो सा अनुभव करे । इणा री धरती चोखी तरें मू ओळखियोडी हूवता हुवा भी नूवी नूवी है । इणा रा चरित्र सामान्य मिनत्वा मायला होवता थका भी आपरी पिछाण राखे है अर कथा मृष्टिया आपरी कमजोरिया रे वावजूद आपरो प्रभाव पैदा करण री ताकत राखे है ।

अन्नाराम री रचनावा माय धरती रो साच आपरी सगळी अमंगतिया रे सागे मौजूद है । लेखक मे एक ऊडी छटपटाहट है बे धरती रो सोवणो रग आज रा हालात मे बदरग वयू हूय्यो है । इण री सगळी सोभा मिट'र वयू पीकी पडती जाय रेयी है । लेखक री इण अकुताहट में किणी भात रो छद्म या दिखावो कीनी है । न इणा रे मन्तव्या माय किणी भी भात रो नकलीपण है । माटी री पीडा

इण री पीडा है और रचनावा जाणे लेखक री हीज व्यथा कथा री फँलाव है। घरती री महकती कथा मे जहर फँलावणिया धतूरे रा बीज जीसा साच इणने टीसता रेंव। कलम री रापी सृ ऐ जहरीला बीजा ने उपाडण मे हीज ओ आपरी मेहनत री मार्थकता समझे। तस्वीर रे रंगा ने बदरंग करणवाली सगली ताकता ने चेतना री छटपटावती ऊर्जा सू ओ लेखक पूरी तरँ सू नष्ट कर देवणी चावे है। इण अनुभव मे पाठका री सहभागिता ने जगावण खातिर, जाणे उणां री आस्था मे ऊभी आगली घाल'र उणा ने समाज री सगली विसंगतिया रे रुवरू खड़ी कर देवणी चावे। इण चेष्टावा सू अन्नाराम मुद्रामा जाणे मिरजण री नूवी चाल री सूत्रपात करती निजर आवे है।

देशप्रेम री भावना—घरती री आस्था री भाव निराधार कौनी है। उण रा दोबडा—तेबडा आयाम इणा री रचनावा मे फँलियोडा है। मानवीयता अर देशप्रेम री भावना भी कथावा री अग हुयने बद आस्था खोलती नजर आवे है। अन्नाराम री मानव विश्वास भावनात्मक आवेश री प्रतीति करवावण सू ज्यादा उणरा वैचारिक आधार री पुष्टि बिया करे। शोपण, उत्पीडन री घणसरी नुभावणी रूप सृ अर शास्त्रीय रूप रे मोहजाल सू ऊपर ऊठ ने ते आपरा उपन्यासा माय उणरे घटित रूप री अरुन कियो है। पूजी रे आधार माये सामाजिक वर्गा री अन्दरूणी अमानता ने चित्रण करण खातिर उणा रा सामाजिक पहलुआ ने मोकळो सम्मान दियो है। आर्थिक असमानता ने मिनला रे आचरण सू जुदा कर देवण री बनिस्पत आचरण रा सत्या सू शोपण रे रूप ने सामी लावण री भरसक कोशिश इणा री रचनावा मे निजर आवे। वर्ग रे पिछडेपणा रा हेतुआ ने सामी लाईजियो है। अकर्मण्यता, भ्रष्टा, मूर्खता न पिछडा वर्गा रे मिनला मे देख'र सुधारवाद री नूवी रूप कर्म माये टेक'र परकट कियो गयो है। उणा मे शराब आदि री लता घणसरी बुराईया ने निपजावे अर उणा सू उणा री सामाजिक दशा आपोआप बिगडती जावे। शोपण रे हेतुआ री आ खोज शोपिता री खुद री कमजोरिया रे साथे साथे शोपका रा ओछापणा ने सामी लावण न निसरती बीमे। गाव रा आज रा शोपक बदलियोडी सामाजिक दशा मे नूवे रूप मे सामी आया है। प्रजातन्त्र मे महाजन लोगा रे हाथा मे गाव री मगली सत्ता भेली हूगी है। जिणने गाव रा सरकारी अमला आपरे व्यवहार सू अमानवीय जामो पहरावण री काम बिया करे। शोपका मे पूजी माये सगळे भाव सू कब्जो कर लँवण बाळा धन्नानेठा री दोबडोपण, उणा री भीठी बथनी अर खोरी करणी आपरी सगली मूगली चतुराई रे साथे वरणित कर ने लेखक उणा रे प्रति शोपिना रे उमडते बिद्वेप ने परकट कियो है। सेठा री धार्मिक ढोक, सेवा री नाटक अर हर दशा मे लाभकारी वाता री सिरजण री चेष्टावा पूरे जोश सू बथाना मे वर्णित हुई है। अन्नाराम री घरती री आस्था री मारी दिशा उत्पीडण रा ऐ दोनऊपक्षां ने उजागर

करण मे मोयली मलगनता लियोडी है। ओ इण दोषा रे परिष्कार रे वास्ते ध्याकुन होय रह्यो है। अर आपरी समूची चेतना मे इणने माडण मे एक्ण ठोड भेली कर राखी है। भरती री वास्तविक महक रो आ गोज इण लेखक रा मानव विश्वास ने माकार करण मे सफल रैयी है।

देश प्रेम री भावना भी अेण कथानका रो एक और बोलतो स्वर है। गाव ने नरक बणावण मे जिका तत्व मन्त्रिय भूमिका निभाय रैया है वंणी लम्बी चवडी रूपरेखा इणा रा उपन्यासा मे सामी आई है। सत्ता री राजनीति एकण कानी प्रशासनिक गतिविधिया ने नियन्त्रित करती निजर आवे तो दूजी कानी शोषका री अणभणियोडी अशोध चेष्टावा उणा रे खुद रे पना म ही बेडिया ने और काठी करती जावै। अन्नाराम मिनस अर सत्ता रे विचाले पड़ण वाली सगली श्रृणारमक सावता मू टकरावण रो उद्धाह पाठका मे भरणी आवे है। इण अन्तराल ने इणा रा उपन्यासा रा कथानक पूरी ईमानदारी मू सामी लावण म सफल रेखा है। जातिवाद, बढ़ती जनसंख्या, नारिया री जड भावनावा, निष्ठलोपण, संगा न ए चवडे लावण री काशिता की है। समाज सापेक्ष राजनीति रो महाजना रे हाथा मे खेलण रे रूप म बिरम्ह खाड म पतन, राजनीति रो मुधारवाद रोडोग, धर्म रा आधार री बुराईया, प्रशासन रा बाहक सरपच, पटवारी, ग्रामसेवक, पुलिस रो आतकवादी रूप अर विकास योजनावा न स्वाय सिद्धी रे रूप म इस्तेमाल करण री भूगसी चेष्टावा रचनाकार रे माचे देश प्रेम री भावना न परकट करे है। लेखक रे वास्ते आपरी इण भावनावा ने दरमावणो सोरो कोनी है जिके मू ऐ उपन्यासा रे कथानका री कीमत माये भी आपरी राष्ट्रीय चेतना ने अलग मू भी जागा-जागा परकट कर दीनी है। कथा न छेडे मेल र उपदेशक रे रूप म लेखक रो ओ ओतार पाठका न भला ही जागा जागा खटकतो व्हेला पर अन्नाराम र वास्ते आपरा ई माच न अर आपरी अणमाप राष्ट्रीय भावना ने दबावणो सोरा कोनी है।

लोक चेतना— राष्ट्रीयता री आ भावना आपरे व्यापक रूप म सगळे देश म जुडियोडी है तो सूछम रूप मे लोक चेतना ने कथा रो विषय बणावण म जुडियोडी निजर आवे। पण अन्नाराम री लोकचेतना कोरा कोरा लोकतत्वा ने परिभाषित करण री तलछट सी योजना भर कोनी है। लोकतत्वा न पूर्य भाव मू सामी लायन लोका भला ही ऊभो जस टूट नियो हुवै पण इण मू लोकजीवन रा भोगणिया रो की लाभ को हूय सकियो है। घोर स लोकगीता मू, अठेरा परब त्योहारा मू ओ रचनाकार प्रेरणा लेवतो रैयो है। उणा ने महदी रा माडणा ज्यू माडतो रैयो है। पण ऐडा जादातर रचनाकारा म लोक मू जुडावा रा आन्तरिक मूत्रा रो अभाव ही दोसिया करे। 'अहोरात्र' वाला अदाज मे राजस्थान री लोक संस्कृति री अनुठी महिमा ने या

वीर सपूता ने निपजावणवाली जलममोम रे रूप मे आदर्शवादी निजरा सू माड ने सामी सावण री भावुकतापूर्ण मूर्खता अठे रा रचनाकार हमेसा सू करता रया है। पण अन्नाराम रे वास्ते लोक सस्कृति रे साज आज रा जलक्रियोडा जीवन री साची बानगी देवण रो ठोस आधार कोनी बण सके। लोकजीवन कोई शाश्वत अवधारणा कोनी है। युग रे बदलाव रे सागे-सागे वा भी आपरा रूप बदलती रवे। आज रे गाव रो पीडित समाज माइणा री सौंदर्य कोनी व्हे सवे इण रातर मुलाघो कोनी जाय सके। ओ रचनाकार न तो लोकजीवन रा गौरव ने ही अन्तिम माने न परम्परा ने बलावण री भाटवृत्ति ही राखे। मुदामाजी तो आज रा जुगसत्या ने सीधी-सादी माली मे वरणिता वरण रो बोसिस की है। धोरा री धरती रो अंडो अकन राजस्थानी गद्य री नूवी परम्परावा री सूचना देवे। जुगसत्य ने गाव री जमीं सू हीज पकड'र खीच ले आवण भे इण लेखक री भूमिका सोरेसाज कोनी भूली जावे।

अन्नाराम रा उपन्यास आज रे गाव रा दर्पण है। दर्पण ज्यू हीज इण लेखक रो ग्रामीण बिम्ब नू रागात्मक जुडाव उजागर हुयो है। उणा ने हीज निर्विकार भाव सू प्रतिबिम्बित करण मे ओ आपरी सफलता समके। अधिकारी भाव सू गाव रा धोप, लोगा री कमजोर्दा, धरम रा पान्ण्ड, महाजना री कमजोर्दा, जातीम भावना, सस्कारहीणता सब री सब इण रचनावा मे उतरती आयगी है।

गांधी युग रो आदर्श भावना—अन्नाराम कोरी कूर यथायं रो चित्तेरो भर लेखक हीज कोनी है। इण मे आदर्शगत भावना भी कूट कूट ने भरियोड़ी है। उण दृष्टि नू इण री चेनना जूनी पीढी रा मूल्या ने अन्तिम साज मानती निजर आवि है। समस्यावा री विनाशकारी विकरासतावा सू भी जादा ओ लेखक आदर्श सारु मोकळो भुवाव राखे। नंतिक मूल्य इण रे बिचारा री खाद है तो पुराणा आदर्श वां थाळो है जिण मे ओ आपरी कथा ने बीजतो दोसे है। समस्यावा नू लेखक रो ओ ट्रीटमेंट कथा री दिसावा ने जबर्दस्ती आदर्श कानी घडी घडी मोडतो रवे। इण सू कथानका री विश्वसनीयता की कम हूय जावे। पाठका माथे सुधारवाद रो ओ मोटो प्रयास घणखरो उल्टो असर ही डाले। जिण जटिल सामाजिकता ने पकडण री लेखक कोशिस की है उण नकसा मे जूना मूल्य बेमेळ है। पण लेखक रो आदर्श-वादी मन इण रे उपरान्त भी बासी मूल्या ने धोपण मे कमी कोनी राखी है। कठे, कठे ही तो आपरा ऐहा उछाह री भौक मे लेखक उपदेश देवण लाग जावे। गांधी वासी युग रा आदर्श ने आज रे जुगसत्य माथे यू धोपण रो भाव नूवी चादर माथे जूना पंचन्द ज्यू अणजोपता दीसे है।

नूवी लड़ाई रो छातर जूना हथिपार—राजस्थानी गद्य ने नूवा अनुभवा नू सस्कारित करण वाळो ओ रचनाकार कथ्य रे धरातल माथे जितो खरो है शिल्प रे

धरातल माये बुरी तरफ़ पिछड़ियोडो हे । बात री महिमा उण रा साच रा स्तर माये जिती निर्मर किया करे उणरे प्रस्तुतीकरण माये उण मू भी जादा निर्मर करे है । नूवी लडाई रे वास्ते पुराणा हयियार काम कोनी देवे उण वास्ते तो नया हयियार ही घडणा पडे । आ बात अन्नाराम रे लेखन री दुर्बलता री सूचना देवे बयू के इण रा ओजार एकदम भोतरा हुयोडा है । जीवन्त अनुभवा ने पुराणी शैली मे टूसण री मजबूरी रचना रा प्रभाव ने कमजोर कर देवे । उपन्यासा री रचाय मोकळी कमजोरिया लियोडो है । कथा री उठाव साधारण है । गति पागळी अर अन्त आदर्शा मू रुधियोडो है । अति नाटकीयता कथा री निरन्तरता तोडे तो रचनाबन्ध बिलकुल दुलभुल है । कथा माये लेखन री पकड पूरी रचना मे कठे ही कोनी दीसे । वो तो जाणे घटित सत्य री पिछलंगू बणियोडो लिखतो जावे । कथानक ने समाज री दर्पण बणाय ने कथा मे स्थूलता सूँ खडो कर दियो गयो है । इण दर्पण मे वे बाता भी पाठका ने साफ साफ दीसे है जिण सू कहाणी माये ऋणात्मक असर पडे । दर्पण रे दोप सू बिम्ब किस्ती ही साफ बयू कोनी हुयो प्रतिबिम्ब साफ कोनी भलकिया करे । अन्नाराम री रचनावा रा कथानक बलई चतरयोडा काच ज्यू बध्य ने साफ दीसण जोगा कोनी बणाय सकिया है । कथा मे वे बाता भी है जिणरी कोई जखरत कोनी है । कथा री डोरो भी हत्ती पतळो है बि ठोड ठोड टूट जावे । कथा ने आपरे आदर्शा रे धक्का सू लेखक आगे धकियावतो जावे । बात ने है ज्यू रे ज्यू कह दिवण सू पाठका न ऐडो लागे जाणे वे कथा री पारायण कोनी करे बल्कि लेखक रा घटित सत्या रा मस्मरणा ने पड रँया है । राजस्थानी बाता री परम्परित शैली री छाया म कथा ने आगे बढावता जावण सू लेखक रा पाका अनुभव भी काचा पडग्या है । अर आ लागे जाणे लेखक री रचना मे खुद री कोई सरोकार कोनी है । वो ता बस जिकी की भी आपरे गाव मे देख्यो है अणपचियोडा अन्न ज्यू उणनेपाछो उगळ दियो है । कथा म ऐडी बाता भी है जिकी लेखक रे अबिवेक ने परकट करे । जुग री सत्य भासमान रँव तो रचना मे आपरी प्रभाव राखे पण वो ही जद पारदर्शी ज्यू ज्यो री त्यो सामी आ जावे तद उणसूँ पाठक ऊब जावे । अन्नाराम सुवामा रे उपन्यासा रा पाठक इण ऊब सू उबर कोनी सवे । उणा ने या तो अर्द्ध आधुनिक चेतना रा पाठक बणतो पडे (जिण रे वास्ते ऐडा प्रसंग राबडिये रा लच्छा ज्यूँ स्वादिष्ट हुय सके) । या पछे ऊब ने ठेठ तई डोवण री मजबूरी स्वीकारणी पडे । बरना अबार तई तो अ रचनावा बस्वाई मानसिकता बाळा पाठका ने तो भले ही प्रभावित बर ले प्रबुद्ध पाठका ने पणीसीव लुभा कोनी सवे ।

रचना ससार—अन्नाराम री रचनावा एक ही सोच री क्रमश विकास कानी है । इणा री कथा साहित्य विचार री प्रौढता सागे सागे मोकला जिम्मेदार हवतो गयो है । कलम री धार ज्यूँ ज्यूँ सवरती गई है इणा री रचनावा उत्ती हीज

गम्भीर समस्याका सू जूझती गई है। नया री सूक्ष्मता ने पकड़ण में सवेष्ट हूयती रेहती है आ कथा री वैचारिक आधार और भी गहरो हूवतो गयो है। 'मैंकती धरती मुळकती काया' सू लेयर 'मैंवे रा रुख' तई फेंसियोडी अणी कथायात्रा एक व्यक्ति री अनुभव यात्रा री दस्तावेज है। इण में ऊजली धरती रा सत्य घिरपीजता दीसे है, जीवन अधिकाधिक विविधतावालो ने विचार अधिकाधिक प्रौढ हूवता निजर आवे। जाणें उणा री रचनायात्रा जमी सू आपरें जुड़ाव रा पख करण री खातिर उण में और ऊडी ही ऊडी घसती गई है। लेखक री भाषा री पक्क अर मुहावरा आदि री ओपत्ती उपयोग इणा री बात ने पाठका रे हिये मय घिरपण री क्षमता राखें है। जमी री ऐडी पिछाण अर गाव रे जीवन रा ऐडा धितराम दूजी ठोड मिलणा दुरलभ है।

अनाराम री उपन्यास यात्रा री पेंसडो पड़ाव 'मैंकती धरती मुळकती काया' रे रूप में सामी आयो है। इण सू हीज लेखक आपरा मन्तव्या ने साफ करण में सफल रह्यो है। साहित्यिक निजरा सू बी पोची हूवता थका भी रचना कथ्य ने उजागर करण री दृष्टि सू चोखी तरऊ मुफ्त दीसे है। इण में धोरा री विस्तार आपरी सगळी सुन्दरता रे साथे ऊभो है। रेतीला टीवा माय जीवन री ओपत्ती छविया आजादी रे पेळडा जुगसय सू सरू हूयने ठेठ चीन रा आक्रमण तई री घटनावा ने समेटियोडी दीसे है। 'किया काई म्हारो सिर, आपा ने न डर चीण रो अर न बापडे पाकिस्तान रो ही - अर भळे जू जित्तो ही नहीं। आपा नैं तो जद कद सगळा सू मोटो डर है एक आपा सू ही' इण मान्यता ने पोसण सारू रचना री कथा गूधीजियोडी है। नानी री बिबावा री आ कथा एक सुगाई री जीवन भर री नी होय'र सगळे युग रो दरसन भी है। सामती छाया में पळण आळा गावा में सामाजिकता ने तोडण आळा जिका सत्य निपजिया उणा माय व्यक्ति रे आचरण ने भूठा मूल्या रा दितावा अर घरेलू पडयन्त्रा सू तोलणो सेवाक बडो बाम है। नणदरा पडयन्त्रा री शिकार सुगनी (नानी) आपरा बीद अर टाबरा सू बिछुड ने धोरा रा समुन्दर में जाणे उछाल दी गई है। अर वा इण समन्दर सू अनुभव रा जिका काचा पाका मोती बटोर्या है उणा री हीज तरतीबवार कहाणी इण उपन्यास में है। समाज रा साचा सेवक तो घर छोडण ने बाध्य व्हेवता रेंया है तो डाका डाळणिया, औरता री इज्जत सू खेल्णिया लोग उण टेम सू हीज पनपता रेंया है। धरती री ओपत्ती मैंक नैं सामीडे भाव सू घिरपण री तेलक री कोशिश मिनख रे आचरण रा बेमिन्खपणा रे माय सूँचवडे आई है। सुधारवादी दृष्टिकोण रे कारण उपन्यास रो अन्त नानी री कथा ने समेटतो समेटतो उपदेशक री आदर्श भावना धारण कर लेवे।

‘मैवे रा रुख’ में लेखक की मुद्रा थोड़ी आक्रामक है। गांव ने सुरंग बनावणरो लेखक जिका सुपना लेवतो उणा नै सेठ-साहूकार भूखा गोघ ज्यू जीम रँह्या है। अर फँकीजियोडा गांव की हालत बिखरियोडी आतडिया अर हाडवा की ठठरी भर हूय’र रँयग्यी है। गरीब नवकी घूर्न बाणिये रे फौलादी निकजा म फसियोडो परायी सास नय रँह्या है। गरीबा की जीवन जाणे उणा रो खुद रो जीवन कोनी रँह्य ने परायो धन हूवतो जाय रँह्यो। फेर भी ऐ लोग बलियोडी जेवडी ज्यू परम्परावा रा बट कोनी छोड रँह्या है। वे तो जाति या वर्ण’ रो दम्भ पाळ रँह्या है अर यू आपरो खुदरो आपो बिसराय ने सगळा आर्थिक, राजनीतिक दबावा सू बेखबर हूय रँह्या है। ‘मैवे रा रुख’ की लेखक इण दशा ने देख’र जाणे आपरो धीरज खोय रँह्यो है। आपरी छटपटाहट ने किणी भी भात सू दबाय कोनी सकियो है। उण की अडीक जाणे खूटीगी है अर लेखक रो अधीर मन आपरे मायसी पीडा ने साकार करण खातर पोधी रे रूप में आपरी उण अकुसाहट ने लिखण सायग्यो है। इण पोधी माम अन्नाराम सुदामा की अभिलाषावा अर उणा की दिसावा साकार हुई है। एकण कानी धो गांव की विगलित दशा रो बिबरण देखण की खातिर एक एक नजारा रो, छोटी मू छोटी घटना रो स्थिर धामीजियोडो रूप बडे धीरज सू उकेरे है तो दूजी कानी पाठका की चेतना में समाज रा बँरी मैवे रा रुखा ने काठा झाल’र फफेडण की प्रेरणा भरतो जावे।

सिनाय रे रूप में जाणे गांव रा एक सचेतन पीरेदार सगळी कमजोरा रे माय ऊडो भावतो जावे। अर उणा की जडरूप गांव की खुशहाली माये कुण्डली मारियोडे नागा ज्यू बँठा सेठ धनजी अर हरजीराम जिता लोका की धिनीनी करतूता ने उघाडता जावे। शोपण रा नूवा नूवा रूप, बेगार, मिठबोसोपण, एहसाना ने पराया माये घोपण की कला, स्वास्थ्य साधण की सगळी पैतरेबाजिया, धरम रो आडम्बर, भलमनसाहत की ओछी वाता अर मोठी छुरी जिता अमानवीय क्रिया-व्योपार एक रे पछे एक पाठका रे सामी आवती जावे। आख्या मदियोडा मूरख लाग इण चतुराई रा शिकार हूय’र रोजीना लटीजता जावे। शिकारी असलो, पुलिस, ग्राम सेवक, सरपच भी इणी सेठा रे नाख्योडा हाडका ने चूसता कुत्ता ज्यू ऐणे मामी पूछ हिलावता रँवे अर सीधा सादा गांव आळा ने भूसता रँवे। गांव की आ सजीव चितराम आपरी साची पिछाण मू पाठका ने आवेशा मू भरतो रँवे। अन्नाराम की उपन्यास कला की मुखारखादी रूप भी ‘मैवे रा रुख’ में दीसे है। सगळा रे हित रो आदर्शवादी समाधान उपन्यास ने जूनी जेवडी सू कथा न बाधियोडो दीसे है।

अन्नाराम सुदामा की ताजी रचना ‘बेसर’ एक बार फेरुं गांव की ही बया है। धरती की आस्था रो रूप इण में भी उणी तरा सू निजर आवे है। ‘बेसर’ उपन्यास में पैलडीवार एक केन्द्रीय चरित्र माये कथा की रचना हुई है। ऐणा पैलडा

उपन्यास व्यक्ति रे व्याज सू समष्टि रो छवि साकार करता दीसे । पण इण मे व्यक्ति ने केन्द्र मे राख'र उण रे साच ने जियावण रो कोसिम दीसे है । बिना बाप रो बेसर बाबे रे घर रो सगळो कारज सार्या पछे भी उणा रो पिछाण नी कराव सकी है । मां रो मोत सू जूझण खात'र वा भूत प्रेता रो भी परवा बोनी करै । पण आपरो कोसिसा मे सुफल कोनी हूय पावे । 'बेसर' भी इणा रो पैलडी रचनावा ज्यू हीज अन्धविश्वासा ने चुनौती देवे है । इण रूप मे आ रचना भी लेखन रो उपन्यास शिल्प परम्परा रो हीज आगळो रूप कंयी जाय सके है ।

अन्नाराम रो कहानीकार रूप एणा उपन्यासकार रूप रो पूरक है । कहाण्या रो विषय भी गाव ही है । उणा रो ट्रीटमेन्ट भी सुधारवाद सू रळियोडो पगियोडो है । अर यथार्थ रे माय सू हीज आदर्श ने ढूढण मे लागियोडो है । इणा मे उपन्यास आळा हीज विषय उठाइजिया गया है । चरित्र अर निजर रो विस्तार भी वेडो हीज है । 'ढकीजता मानवी' भी पैलडी रचना 'मैवे रा रूप' ज्यू हीज गाव रे सामाजिक जीवन रा अंग रूप मे अन्धविश्वासा अर आडम्बरा भावे आक्रमण कर ने सचेत करण रो चेष्टा करतो दीसे है । व्याज रो धन्धो करण आळा रा सिकारा रो कथावा इण रे माय भी चवडे आवती दीसे है ।

इण रूप मे अन्नाराम मुदामा रो रचनाकार दरबसल धरती रो आस्था ने सामी लावण मे पूरी तावत सू जुटियोडो है । गाव रो चितराम खँचता यका भी धोरा रो धरती रो यथार्थ इण रो रचनावा मे साकार हुवतो रँवे । इण लेखक रो गाय रो आस्था, शोषण रे सामी ऊभण रो पुरजोर चेष्टावा, भितलपणे रो विषवाम अर जमी रा यथार्थ रा मोलता चितराम राजस्थानी गय रो सामी आवती सम्भावनावा ने उजागर करै है । राजस्थानी उपन्यास ने खडो करण मे इण लेखन रो योगदान हरमेम याद कियो जावतो रँवेता ।

□

(जायतीशोन मे प्रकाशित)

मीरां रे साहित्य सूं जुड़ियोड़ा की अणसुलझियोड़ा सवाल

मीरा रे साहित्य सूं जुड़ियोड़ा अणसुलझियोड़ा सवालं रे खोज री कोशिश आपोआप मोक्खो महत्व राखे है। ब्यू के मीरा रा साहित्य माथे मोक्खो नाम हूया पाछे भी उणरो जीवन अर साहित्य पूरी तरामूं निविवाद कोनी हूय सकियो है। मीरा रे साहित्य रा अध्येता कठे-कठे तो फालतू बाता माय आप रो श्रम जाया कियो है (जियां के उणरे साहित्य री परख करण री आगा उण रे नाम रे उद्गम री खोज रे कोशिश माय हीज सगळी ताबत घरब कर दीनी है)। इण वास्ते मीरा रे साहित्य रा समीक्षक उण रे साहित्य रा सौंदर्य रा हेतुवा ने पूरी आस्था अर भरोस गूं उजागर कोनी कर पाया है। जद के दूजे कानी आम जनता उण रा पदा ने पूरी आस्था सूं मान'र उण माय दधि लेवती रंथी है। मीरा रा साहित्यिक महत्व अर जन भावना री स्वाभाविक दधि रे बिचाळे रो ओ आतरोपण इण बिचार ने सामी ले आवे के आखिरकार बिद्वाना अर सहज विश्वासा आळी जनता रे सोच रे आतरेपण रो कारण कई है? इण सवाल रा जवाब सारू मीरा रे साहित्य रा अणसुलझियोड़ा सवाल माथे बिचार करणो जरूरी है।

मीरा रे पदा री कम व्यवस्था री सवाल—मीरा रा पदा ने दीयोडी आज री क्रम व्यवस्था ठीक कोनी कंथी जाय सके। उणा सूं भी मोक्खो मतभेद पंदा हूया है। मीरा रा पदा माय उणरो खुद रो जीवन अनेक रूपा मे सार्भित हूयो है। इण सूं इण बात ने मोक्खो बल मिले है के मीरा आपरो साहित्य सर्वेन करती रहेला खुद रे जीवन प्रसंगा सूं सीधो प्रेरणा लीवी ही। बीद रे गुजर्या पाछे राणा सूं ताणातर्णा, जहूर पीवण री घटना, बिन्द्राबन जात्रा प्रसंग या द्वारिकाजी सूं जुड़ियोड़ा पद तो साफ-साफ निजर आवे है। पण समयो दशावा रा या उण रे जीवन री दूजी बाता सूं जुड़ियोड़ा पद उण रे पदा ने दीयोडी आज री क्रम-व्यवस्था माय साफ साफ निजर कोनी आवे। जिया के योगी ने सम्बोधन देवण आळा पदा ने जुदी-जुदी ठोड भेळा करीजियो गयो है। इण सूं आ बात और उलझी है।

भगती रा सस्कार तो मीरा मे उण रे बचपन माय हीज पद चूका हा पण उण रा साहित्य सिरजण रा मस्कार कदे पड़्या हा आ बात अजे तई साफ कोनी हूय

सकी है। जिया महाप्रभुबलभाचार्य सू दीक्षा लिया पछे सूरदास मे अचानक भावा रो बदलाव निजर आवे है उणी तरासू कई मीरा माय भी विघवापण री मार सू अचानक नाव्यत्व फूटियो हो के कबीर रे जीया जुदा-जुदा सता रे सम्पर्क सू अचानक ही उभरीजियोडा भाव बिम्बां ने उभारण री चेष्टा दीसे है। क्यूके इणा माय सू अगर तारली बात साची है तो इण ने लेय'र मीरा री जिनगाणी सू जुडियोडी मोकली बाता सू नूवा नूवा साचा ने ढूडिया जाय सके है। इणी भात उण रे काव्य सू उण री जिनगाणी रा मोकळा अणदीठता प्रसगा ने भी सामी लायो जा सके है। इण वास्ते मीरा रा पदा ने उण जीवन प्रसगा सू प्रत्यक्ष जोड'र उणारी पुनर्व्यवस्था करणो जरूरी है।

मीरा री ईश्वर परिकल्पना : मूल उस्तां री खोज—मीरा रा आराध्य कुण हा इण बात मे सन्देह करणो एक तरासू पूनम री रात माय चाद ने दूढण जीसो मूरखता री नाम है। 'मेरे तो गिरधर गोपाल' रे घोषणा पत्र रे साथे उण री रचनावा जिण रूप माय सामी आई है उण माये सन्देह करण री कोई गुजाइस कोनी है। क्यू ने कृष्ण रे वास्ते मीरा रे मन ध अनुराग री भाव इत्तो गहरो हो के उण कारण दोना माय अन्तर करणो दोरो ध्ये जावे। मीरा जाणे कृष्ण-कृष्ण रटता कृष्ण रूप हीज थैगी। मीरा री ऐही भगति भावना पाठका ने भी उणी तरा सू सत्कारित करती रंवे है। इण वास्ते मीरा री ईश्वर विषयक भावना माये तिणी भी भांत रे सन्देह री गुजाइस कोनी है।

फेर भी म्हाई मुजब मीरा रे आराध्य री खवाल अजं तई अणसुलभियोडा है। सवाल उण री दिशा ने लेयने कोनी है। न सवाल उण रे सक्ष्य ने लेयने है। सवाल तो उण रे साधन ने लेय'र है। भक्ति सू सम्बन्धित मीरा रा जुदी जुदी भावना रा पद इण विवाद ने सामी लावे है के मीरा रा भक्ति सम्बन्धित पदा ने उण टेम रा प्रचलित कृष्ण भक्ति रा जुदा-जुदा सम्प्रदाया माय सू आखिर किण सम्प्रदाय सू जोड'र देखणो चाहजे।

मीरा र वास म कृष्ण भक्ति रा जिता भी सम्प्रदाय फैलियोडा हा उणा री धार्मिक मान्यतावा इतरो न्यारी न्यारी ही के सदाय एक होवता बबा भी उणा माय मोनळो वंभिग्य हो। मीरा रे जीवन न उजागर करण आळी सामग्री सू इण बात रो इसारी मिळे है के उण ने कृष्ण भक्ति रा एकाधिक सम्प्रदाया रे जुदा-जुदा व्यक्तित्वो गू मिलण रो मोकी मिलियो हो। आ बात भी आसानी सू गिरपीज सने है के मीरा रे आपरे टेम हीज उण रो नाव धारऊकर फल खूबो हो। इण वास्ते कृष्ण भक्ति रा न्यारा न्यारा सम्प्रदाया माय इण बात री होड जरूर मची थैला के के किणी तरासू

मीरा ने निज रे सम्प्रदाय मायने खीच लावे । इतिहास सू भी इण बात री गवाही मिले है के मीरा रो वल्लभ सम्प्रदाय रा पुष्टिसम्प्रदाय, चैतन्य रा गोडीय सम्प्रदाय अर हितहरिवंश रा राधावल्लभ सम्प्रदाय रा अनुयायियों सू सम्पर्क हो ।

वल्लभ सम्प्रदाय अर मीरा—वल्लभ सम्प्रदाय रा व्यवस्थापक महाप्रभु रा पुत्र बिट्ठलाचार्य रो छे छे द्वारवा यात्रावा समयत उणा रे सम्प्रदाय ने बढावण री कोशिला रे वास्ते हीज बरीजी ही । आपरी दण यात्रावा रे माय वे खुद कदे ही मीरा स मट कीनी ही वे कीनी कीनी इण री जाणकारी कानी है । पण आ बात बिलकुल पक्की है के मीरा न लेयन बिट्ठल अर उणा रा सम्प्रदाय रा दूजा लोग म एब सरं री फास जरूर ही । इण बात री पुष्टि 'दा सी बावन वेणवा की बाता रा मोकला प्रसंगा सू अर दूजा प्रमाणा सू हुवे है ।

केह्यो जावे है के कृष्णदास (जिका के पुष्टिभाग रा खास भाठ बबिया री टोली भट्टछाप माय सू एक हा) मेडता मायने मीरा सू सप्रयोजन भेंट कीनी ही अर एक तरा सू उणा मीरा ने अपमानित कर ने पाछा वृंदावन फिरग्या हा । द्वारिका सू पाछा फिरती भैल्ला ए मीरा रे गाब गया हा अर उण री भेंट करण री प्रार्थना न ठुकराय ने ब्रज पधारग्या हा । आ घटना मीरा रे वास्त वल्लभ सम्प्रदाय री नाराजगी न प्रकट करे । आ नाराजगी इण वास्ते उपजी ही वे उण टेम मीरा आपरी ख्याति र चरम माये ही अर वा वृष्ण भक्त होवता बका भी वल्लभ सम्प्रदाय र वास्ते उपेक्षा बरत रेही ही । मीरा रे जीवण री ऐसी हीज बूजी घटनावा भी इण हीज विचार न धिरपीजे है ।

मीरा री एक सति (जिण न कोई काई उण री रिश्तदार भी बताया करे है) अजबकुवरी बाई री हार्दिक इच्छा पुष्टिभाग मे दीक्षा ग्रहण करण री ही । पण इण मुजब मीरा सू बात करण सू उण ने प्रोत्साहन कोनी मिलिया । केह्यो जावे है के मीरा रे मना करण रे बावजूद वा आखिरकार पुष्टिभाग माय दीक्षा ले लीनी । दा सी बावन वेणवा की बाता रे माय आ बात इण बात माझियोडी है के मीरा जद बिट्ठलाचार्य जी ने आपरी सौगात देय र पाछी फिरण लागी तो उणा इण री सौगात लेवण सू इनकार कर दीनी । उणा रो एब चेसो मीरा न समझायो के गुभाईजी तो आपरे चेला सँ हीज सौगात लिया करे दूजा सँ कोनी लिया करे । उण टेम अजबकुवरी बाई मीरा सू केह्यो के थे केवा तो म्हे इणा री चेसो बण जाऊ पण मीरा इण री हाभी कोनी भरी । फेर भी इण घटना पछ अजबकुवरी बाई मीरा री राय नी मान र बिट्ठलजी री चेली बणयो ।

आ घटना दीसन मे भलाही साधारण सी लागे है पण आ मीरा री मनो भावनावा ने जरूर दरसावे है । एक क्षी आ घटना बिट्ठल अर मीरा री भेंट री

पुष्टि करे है। दूयजी बल्लभ सम्प्रदाय रे वास्ते भीरा री अरुचि अर सम्प्रदाय रा अधिष्ठाता री भीरा रे वास्ते री ईशका भरी भावना ने भी सूचित करे है। इण रे वावजूद इण साच सू भी इनकार कोनी कियो जाय सके है के वल्लभ सम्प्रदाय रे वास्ते भीरा रे मन माय एव सरे रो आकर्षण थो। दूयजी कनी इण सम्प्रदाय आळा भी उण ने आपरे कनी सुभावण रे वास्ते मोकळा प्रयास कर रेह्या हा। इण कारण इण सम्प्रदाय रो भीरा माये सीधो के गुप्त-प्रभाव सू इ-कार कोनी कियो जाय सके है।

वल्लभ रो पुष्टि मार्ग ईश्वर रे अनुग्रह रो आधार लेय ने जिण विनिष्ठावैतिक दार्शनिक सिद्धान्त रो निरूपण करे है उण ने व्यावहारिकता देअणआळा अष्टछाप रा कवि आपरा साहित्य मायने दाम्पत्य सबध री भक्ति माये हीज मोकळो ध्यान विरायो है। उणा श्रीमन्नूगवत री कृष्ण कथा सू एव खास मौलिक उद्भावना करी है। कृष्ण री परम्परिज कथा रे मायने भ्रमरगीत रा प्रसंग ने इणा व्यवस्थित कथावृत्त बणाय दीनो। सूरदार जिको नूवी परम्परा ने भ्रमरगीत रे रूप में सरू कीनी उण माये अष्टछाप रा सेवा सू छोटोडा कवि नददास तक आपरे उण सू कलम चलाई। इणो कविया रा भ्रमरगीत साहित्यिक दृष्टि सू तो मोकळो महिमा राखे हो है इण रे साथे साथे उणा री आध्यात्मिक महिमा भी कम कोनी है। इण सू दो मुक्तवा री सिद्धि हुये है। पेलो मुक्तव भक्ति रा अधिकारी ने नियत करण माय दीने है। मोप्पा ने प्रेम भावना री परम अधिष्ठात्री रे रूप माय स्थापित कर न आ प्रमग ईश्वर बिषयक रति री पराबाष्ठा न करसाया करे। समाज री भगसी बर्जनावा - निषेधा - अवरोधां ने छेदे मेल'र मोप्पा कृष्ण रे साथे जिका प्रेम रो निभाव करे वो भक्ति रो आदर्श वण जावे अर दूयजा भगता रे वास्ते अनुकरणीय मारम प्रगस्त करतो दीने है।

भ्रमरगीत सू सदारम हुवण आळी दूनी प्रवाजण सिद्धिया भी कम महिमा कोनी राखे है। इण बहाना सू सूर आदि भजन ज्ञान माय भगती री, योग माये भांग री अर निर्गुण माये मगुण री जीत स्थापित करण माय समरम रेंवा है। भ्रमरगीत रो कथारूप मूं बोरी मोरी साहित्यिक सुन्दरता हो कोनी राखे है मोकळी आध्यात्मिक अर दार्शनिक सिद्धियां भी अंगीकार करण मे समरम दीसे है।

भीरा रे आराध्य रो निर्धारण करण रे वास्ते ये इण जाना कनी आपरी ध्यान गीवणी चाहू जिण रे वास्ते ऊपरता भगता विषयांतरा ने इण परचा माय समेटियो गयो है।

इतिहास भना हो इण बात न पुरो तरा सू प्रमाणित कोनी करतो रहैता पण भीरा रा विचारी माय कटे हो इण सम्प्रदाय रो अंतर जरूर हो इण बात ने नजरानो

आसान कोनी है। अर एन बारू आपा जद इण तथ्य ने मान लेवा तो मीरा रा पदा री दिशा पछे वेही कोनी रैय पावे जेही बी आज तई स्वीकारती रैयी है। अठे इण बात माये ध्यान देवणो जरूरी है कि मीरां रे पदा मायने भ्रमरगीत री साफ साफ धर्चा तो कोनी है पण उणा मे भ्रमरगीत री मोटी रूपरेखा अवसर वणती दीसे है। 'हो जी हरि वित्त गये नेह सगाय' सृ सरहोय'र भ्रमरगीत रा प्रमग स्पुट रूप मे इणा रा पदा मायने निजर आवता जावे।

(1) कृष्ण रो मयुरा जावणो दु स रो वारण बणे—

हो गए स्याम दुइज वे चदा।

मधुवन जाय भये मधुवनिया हम पर डारे प्रेम को कदा।

(2) कुब्जा सू परपूठ ईप्यां—

'स्याम म्हासू ऐंडो डोले हो, औरन सू खेले पमात'

(3) अक्रूर रे वास्ते विरोध रो भाव—

'कठिन क्रूर अक्रूर आयो साजि रथ रथ कह नई'

(4) ऊधो सू बतलावण—

'अपने करम को वो छे दोस काइ दीजे रे ऊधो'

(5) राधा रे वास्ते ऊधो द्वारा सनेस लावणो—

'कृष्ण बाचे पाती बिणा प्रभु कृष्ण बाचे पाती

बागद ले उधोजी आयो कहा रह्या साथी।

(6) ऊधो रे ब्याज सू आरम निवेदन—

'ऊधो मैं वरामण हरि की'

भ्रमरगीत सू बल्लभ सम्प्रदाय रा भक्त वेला परकट कीनोड़ी जिकी सिद्धिया हासल कीनी है उणा माय सू पेयली सिद्धि गोपिया रे प्रेम रे आदर्श री बात है जिकी मीरा रे सदर्म मे फालतू व्हे जावे। क्यू के प्रेम री मतवाली मीरा मे जेहो भाव गाभीर्य अर राग सलमनता है उण रे सामी गोपीया तो कई कोई भी भक्त कोनी टिक सके। गोपियां तो सायत आपरा जीवन मे कुटुम्ब कबीले री मरजादावां ने नारी रे शील ने चुनौतिया दीनी ही के कोनी दीनी इण री ठा कोनी पण मीरा इण भावा ने आपरो जिनगाणी माय परतछ कीनो हो इण मे किण भी बात रो सन्देह कोनी व्हे सके। इण खातर मीरा रे प्रेम भावना रो ऊडोपण गोपिया री प्रेम भावना सू मोकलो ऊडो, मोकलो भरोसमद अर मोकलो प्रामाणिक है इण मे सन्देह कोनी है।

भ्रमरगीत की दूधजी सिन्धी ने भी मीरा के पदों से जोड़-र-देखणो जरूरी है। मीरा के पदों से भ्रमरगीत की जिकी रूपरेखा बनी है वा अधूरी होय'र भी उण कनी उणा के हम्मान ने अवसर परकट करे। मीरां रा पद इण हिसाब से मोकळा सवाल खडा करे। ज्ञान माये भगति की जीत ने दरसावण की मीरा ने किणी तरें की जरूरत कोनी ही। बयू के सरूपोत से हीज वा भगति भाव माये इणी दृढता से टिकियोडी ही के ज्ञान के कनो ग्राहण तक की उण ने कोई जरूरत कोनी ही। पण योग माये भोग की अर निर्गुण माये समुण की जीत दरसावण में मीरा के सामी मोकळी सुनौतिया या रुकावटा ही।

मीरां अर योगमत्त—मीरा रा पद इण भक्ति से हीज सामीपांग जुडियोडा कोनी है उणा में योगमत्त की भी मोकळो उल्लेख है। जे एकर उण ने योगमत्त की प्रभाव न भी माना तो भी जोगी के वास्ते मीरा रा हम्मान ने नकार्यो कोनी जाय सके। उण की पदावली के माय जोगिया से प्रेम ने बतावण आला जिका पद मिले है उणा ने लेय'र विद्वाना में मोकळो मतभेद है। कोई कोई विद्वाना इण बाबत ओ मतों राखे है के ऐहा पद या तो बाद में जोड़ीजिया है या फेर इणा की कोई खाम महत्व कोनी है। भूने इण धिरपणा माये भरोखो कोनी है। बयू के जोगी से जुडियोडा पद मीरा पदावली सामने उता घणा है के उणा ने आसानी से नकारणो सोरो कोनी है। इण वास्ते जोगी से जुडियोडा मीरा रा पदा की व्याख्या किण तरा से की जावे ई सवाल माये बिचार करनी जरूरी है।

इण पदा ने देख'र एव घात तो आहीज बेहरी जाय सके के मीरा ने सांची में किणी जोगी से प्रेम हो। जेडो के इण पदा से जाहिर हुवे है—

- (1) 'जोगी मत जा मत जा मत जा' वाला पद के आखिर मायने 'जोत में जीत मिला जा' केवणो।
- (2) 'जोगिया के प्रीत बिया दु ख होई' वाला पद में ओ केवणो 'ऐसी भूरत या जग माही केरि न देखी सोई'।
- (3) 'जोगिया की प्रीतड़ी है दुखड़ा की मूल' वाला पद के माय उण की निरमोही भाव से जावण की बात परकट करणो।
- (4) कोई कोई पद तो ऐहा भी है जिणा में जोगी से साफ साफ प्रीति की बात परकट हुई है अर पद के अन्त में उण ने प्रभु रा दरसन से जोड़ण की बात भी परकट कीनी हुई है—

जोगिया निरदिन जोक बाट

पाव न चालें पण दुहेरी आटा ओपट घाट

नगर आई जोगी रम गया रे मो मन प्रीति न पाई
 मैं भोली भोलापण कीन्हो राख्यो नहि बिलमाई
 जोगिया कू जोषत वोही दिन बीता अजहूँ आयो नहि
 बिरह बुभावण अन्तरित आवो तपन लगी तन माहि
 कै तो जोगी जग मे नाही, कैर विसारी मोई
 काई करू कित जाऊ री सजनी नैन गुमायो रोई
 आरति तेरी अतरि मेरे, आवो अपणि जाणि
 मीरा व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलहत प्राणि ।

कोई कोई विद्वाना जोगी री प्रिय या प्रियतम के रूप में अरथ कीनी है अर यू
 ऐडा पदा में योगी रो अभिघायं हृदाय ने उण ने प्रियतम रो पर्याय मानण रे वास्ते
 लक्ष्यार्थ प्रदान कीयो है ।

सीजी तरा रा व्याख्याकार जोगी शब्द न भगवान श्रीकृष्ण रा विशेषण
 योगीराज सू जोड न उणा री व्याख्या कीनी है ।

ऐ सगळी दृष्टिया किसी भ्रामक है या इणा माय सू किसी दृष्टि माच है इणा
 री परख करणी जरूरी है । पण दुर्भाग्य सू इण सवाला ने मोकळी तवज्जो कीनी
 दिरीजी है ।

मीरा रा पद अर नाथपन्थ—मीरा रा जोगी विषयक पदा माय कोई कोई ऐडा
 भी है जिण माय यागिया रे साधना पदा रो प्रभाव भी निजर आवै है । सेली, सिंगी,
 सघडा आदि शब्दावली रे सामे सामे मोकळा पदा मायने उणा री साधना पद्धति रो
 उल्लेख इण बात ने पुष्ट करे है । जियो—

माळा मुदरा भेलळा रे बाला सप्पर लूगी
 जोगिन होई जुग दूडसू र म्हारा सार्वळिया रो साथ

योग साधना रो प्रभाव मीरा माथे और कारणा सू भी प्रमाणित कियो जाय
 सके है । हजारिप्रसाद द्विवेदी वज्रयानी सिद्धा ने देश रे बीचले हिस्ते हूँ हट ने
 गाडहवाल राजावा री टेम सीमावर्ती प्रदेशा मायने फैसल री चरचा कीनी है ।
 नाथपन्थ भी इणीज कारणा सू देश रा आयूणे सीमाडे माथे फैल गयो । इण पन्थ
 री एक पीठ अजे तई जोधपुर मे महामन्दिर मे स्थित है । म्हूँ कोनी जानू के ओ पीठ
 कितरो जूनो है । पण मारवाड माय नाथा री चेष्टावा मीरा रे पेरी सू देखणो किणी
 तरं री आपत्ति खडी कोनी करे । मीरा रा पदा माथे योग रा प्रभाव ने इण कानी
 बीयोडा शोध रे आधार माथे आसानी सू खोजियो जाय सके है । इण सू मोकळा
 अणसुळभियोडा सवाला रो जबाब मिल सवेला इण मे की भी सन्देह कोनी है ।

मीरा अर रंदास—मीरा रा पदा मे निरगुण माये सगुण रे जीन रो बात साफ साफ कोनी मिले है। उण रो जामा इणा रा पदा माय निरगुण रे वास्ते भी आस्था उणी भाव मू दीसे है जिन भाव मू सगुण रे वास्ते सामी आई है। इण रो कारण मायत ओ होज छै सके के मीरा माये पड़ियोडो सन्ता-योगिया रो प्रभाव उण ने भ्रमरगीत रे बथारूप मे थापित निर्गुण माये मगुण रो जीत रा बरणन करण मू परे धकेलतो रह्यो है।

मीरा रो रंदास मू जुडाव रो बात भी इण सू जुड़ियोडी है। मीरा रा पदा रे मायने सन्त रंदास रा मिलण आळा नाम ने लेय'र भी विद्वाना मोक्ळा तेतराज बिया है। साफ है के कृष्ण भक्त मीरा रो सन्त मत आळा रंदास मू समीकरण लोगा ने पसन्द कोनी आयो है। केर भी ऐडा पदा रे कारण इण बात ने नकारणो भी आसान कोनी है। कृष्ण भक्ति रो बात बरता बवा भी मीरा 'महजसुन्न'अर 'पधरण बोला'री बात भी उत्ती ही आसानी सू कर जावे है—

(अ) 'बाला वा अगम देस, बाल देह्या डरा
भरा प्रेम रा होज, हस केत्या करा।'

(ब) 'बरन कर्या अविनासी म्हारो, बाल ब्याल न खासी'

ऐडी ओळिया मीरा माये सन्ता रा साफ साफ असर ने प्रमाणित बिया करे। कृष्ण भक्ति ने कोसी तरळ धारण करण वाली मीरा रो ओ केवणो भी विचार करण जोग है 'हरद की मारी बन-वन डोलू बंद मित्या नहिं कोई' कृष्ण रो प्रेम कई इत्तो अपर्याप्त हो के उण ने सन्ता रे जिया ही आपरी मनोव्यथा ने इण तरा सू प्रकट करणो पड़्यो। अस्तु, सन्तमत रो ओ प्रभाव मीरा मू पड़ियोडो निरगुण-मगुण समीकरण रो सफल हेतु बण्यो है के उण रे उल्टे भाव ने प्रस्तावित करे है इण कनी भी ध्यान देवणो जरूरी है।

मीरा अर आल्वार सन्त—सता रे मदमं म मीरा रे सामे उण रे जुडाव ने सन्ता रे विकास रे सामे भी जोड़'र देवणो जरूरी है। व्यावहारिक भक्ति रा मूल आस्थाता दक्षिण रा आल्वारा मायने भी भक्ति रो बेडी ही उत्कट भावना दीसे है जेडी मीरा रे मायने है। आल्वार 'शरणागति' या 'प्रपत्ति' रो जिन परम रूप रो धारणा की ही उण ने पाछे रा कविया रे वास्ते आदर्श रे रूप मे देरयो जाय सके है। मीरा रा साहित्य मायने शरणागति रा सगळा तत्व उपस्थित देख्या जाय सके-

(1) अनुकूलता रो मकल्प—म्है तो लियो है गोविन्दो मोन

(2) प्रतिकूलता रो वर्जन—मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोय

(3) गोप्यत्वकरण—यें तो पत्तक उचाडो दीनानाथ म्हे हाजर नाजर कद की खडी

(4) इतर वाता रो निषेध—पग घुघरू बाध मीरा नाची रे

(5) बापंण्य भावना—मै तो सरण पड़ी रे रामा, ज्यू जाणे त्यु तार

मीरा री आ प्रपन्न भावना उण ने सीधो आत्कारा री परम्परा सृ जोडे है । उण रो प्रेम भाव, मिलण री आतुरता, वेदना भाव, अकुलाहट तकरीबन वेडी ही दीसे है जेडी आत्कारा माय दीसिया करे । मीरा आत्कारा री उण परम्परा ने कियो सुरक्षित राख सकी ही इण रो पतो लगावणो भी जरूरी है ।

मीरा अर गौडीय सम्प्रदाय—वत्सल सम्प्रदाय रे असावा कृष्णभक्ति रा हूजा सम्प्रदाया रो भी मीरा माये घोडो बहुत असर निजर आवे है । चैतन्य महाप्रभु रा गौडीय सम्प्रदाय रा शास्त्रीय आस्थाता रूप गोस्वामी अर सनातन गोस्वामी बंधुवा सू भी शायद मीरा री मेट हई व्है सके । इणा रो भतीजो जीव गोस्वामी रो पुत्रपणे रो घमण्ड तो मीरा हीज तोडिया हो । इण रो 'त्रियामुख न देखण रो प्रण' मीरा हीज छुहायो हो । इण घटना सू गौडीय सम्प्रदाय रे वास्ते मीरा रा भुकाव ने देखियो जाय मके । जद इण भुकाव ने स्वीकारला तद उणरा प्रभावा न भी देखणो जरूरी व्है जावे । रूप गोस्वामी री पोधी 'भक्ति रसामृत सिन्धु' ने भक्ति रो आधार ग्रन्थ केयो जाय मके । उण मांय भक्ति री शास्त्रीय व्याख्या जिता बिस्तार अर प्रामाणिकता मू हई है उत्ती नारद या घाण्डिन्य रा भक्तिसूत्रा मांयन भी बोनी हई है । पण 'भक्तिरसामृत सिन्धु' रो स्वर चैतन्य भक्ति परम्परा मू बोडो भिन्न है । भक्ति ने ओ सुलभ-मरल बोनी मान'र दुरलभ माने है । उणरी दुरलभता हीज भक्ति री कठिनाईयो रो हेतु है । मीरा रा पदा ने गौडीय मत रे मिद्वांता भाष डाळ'र उण री ईश्वर री परिचयना न निर्धारित करणो अजे तई बाकी है । गौडीय सम्प्रदाय रे मायने मधुरा भक्ति रो जिको स्वरूप है उण रो मीरा माये मोवळो असर पडियो हो । चैतन्य महाप्रभु मे जिकी तन्मयता प्रेमानुभूति री जेडी उद्देक्षित दसावा दीसे है अर 'नवधामभक्ति' मांय सू मिरर कीर्तन ने स्वीकारण री जिकी भावना है उण ने मीरा रा पदा मायने भी उसे हीज उद्देखण मू उपस्थित देखियो जाय मके । इणी भान मीरा अर चैतन्य दोनऊ माय एक् अद्भुत समानता भी देखी जाय मके है । चैतन्य री नृत्य अर कीर्तन री प्रवृत्ति मू जुहाव मीरा मे मोवळी आस्था मू उपस्थित देखिया जाय मके है । 'पग घुघरू बाध मीरा नाची रे रूप ॥ मीरा रो नृत्य रे बाग्ने गग भुकाव उण ने चैतन्य री भक्ति जंसी मू जोड देवे । चैतन्य महाप्रभु री भक्ति भावना मू मीरा री भक्ति भावना री आ जुहाव री बात महाप्रभु मन्त्रभाषाये री 'पुष्टि तदनुग्रह' री जंसी मू गामी आतरे है । इण बाग्ने चैतन्य अर वत्सल दोनो री विचारधारा री मीरा रा पदा मांय हाजिरी एक् अणमुखानियोडा मवान है जिको मे की जबाब री उडीव मने है ।

मीरा अर हितहरिवंश—इण भात हीज राधावल्लभ सम्प्रदाय रा प्रवर्तक हितहरिवंश सू भी मीरा री भेंट रा प्रमाण मिले है। केह्यो जावे है वे वे खुद मेड़ते आय ने मीरा रा मेहमान बण्यो ह्य। हितहरिवंश रो राधा-भाव उण टेम रा दूयजा कृष्ण भक्त सम्प्रदाय सू अलग-थलग ही हो। मीरा तो खुद औरत ही, राधा जीमी ही पीड़ित अर कृष्ण माये रीभियोडी। इण कारण मीरा रे वास्ते हितहरिवंश रे राधा-भाव ने स्वीकारणो मुश्किल कोनी हो। मीरा तो एक ठोड खुद ने लारला जनम री राधा तक बतलायो है—‘रास पूणो जणमिया री राधा का अवतार।’ मीरा पदावली रे माय राधा रो घणो उन्नेख तो कोनी है फेर भी वो मामो तो है हीज। जिमा—

- (1) आवत देखी किसन मुरारी छिप गई राधा प्यारी
- (2) ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, मुणजे किसन मुरारी
- (3) राधा प्यारी दे डारो जु बशी मीरी
- (4) भूलत राधा सग गिरधर भूलत राधा मग।

पण मीरा पदावली री राधा बल्लभ सम्प्रदाय री राधा उय ‘प्रोषितपतिषा’ कोनी है। मीरा री राधा दरअसल कृष्ण रे सागे भूनी भूळण बाळी या कृष्ण री मुरली ने हृदिपाय ने उणा ने विजावण आळी राधा है। वा कृष्ण रा विरह मे भूरती रंजण बाळी राधा कोनी है। वा उपेक्षिता नायिका नी छैयर प्रेमतृप्ता प्रगल्भा नायिका री बाणगी देवती दीसे है। इण वास्ते मीरा री राधा परिक्ल्पना हित-हरिवंश री राधा भावना सू कितरी समता या बिपमता राखे है इण ने देवणो भी जरूरी है। बगू के इण सू उण री भक्ति री ग्रास दिमा तय की जाय सकेला।

मीरा अर गीतगोविन्द री परम्परा—कृष्ण भक्ति री एक गैर शास्त्रीय परम्परा भी चालू रंथी ही। जयदेव रा ‘गीत गोविन्द’ सू चालती आवती आ परम्परा माधुर्य भाव री भक्ति रो चरम निदर्शन है। इण मे राधा अर कृष्ण रे रति रा परम सौंदर्य मू भरयोडा भात भात रा चित्र आकियाडा हे। यू तो ‘गीत गोविन्द’ कृष्ण भक्ति रा सगळा सम्प्रदाय ने थोडो घणो प्रभावित कियो है। पण उण री सुतन्तर परम्परा भी आगे तई चालती रंथी है। जयदेव रे पछे चण्डीदास अर हिन्दी मे विद्यापति उणन आगे बढ़ायो। कृष्ण रो ओ लोकरजन पक्ष अर उण रो सौंदर्य शास्त्रीय रूप मीरा माये भी अगरे डाळ सक्यो के कोनी डाळ सक्यो ओ भी विचारणीय है। कंहा जावे है के मीरा खुद भी गीत गोविन्द रच्यो हो पण विद्वाना उण न नकली रचना माने है। पण मीरा रा पदा माय कृष्ण री रूप माधुरी रो सौंदर्य, कृष्ण री वकट छवि मायने अटकियोडी मीरा री आस्था, कृष्ण रा सौंदर्य ने ‘निरग्य म्हारो मनडो पम्या,’ कृष्ण री रूपमाधुरी रे ‘अग अग मीरा बनि जाई’ बाळा सारा

प्रमग सयोग शृंगार री सगळी सोभा अर विप्रलभ री सगळी आतुरता ने मीरा जि रूप में वर्णित कियो है वो ओ प्रमाणित करे है के मीरा कृष्णभक्ति री गैर शास्त्री परम्परा ने भी निभायो हो । इण री जाच भी अजे तई बाकी है ।

अस्तु, मीरा री ईश्वर परिवर्तना रा माचे रूप री खोज बहुत जरूरी है ऊपरला विवेचन सू आ बात आसानी सू समझी जाय सके है के स्थूल आधार सू निसरण बाळी बाता रे आधार माथे उण रा आराध्य रो निरधारण कर ने उण हीज साच मानतो जावणो कितरो भ्रामक न्है सके । इण वास्ते मीरा रे साहित्य जुडियोडा ऐ सगळा अणसुळक्रियोडा सवाला रे रूप मे मै इतरा बिन्दुओ ने आ विद्वाना रे सामी पेश करणो चाहू हू —

- (1) मीरा रा पदा रे क्रम रो खोबी तरऊ निर्धारण किया बिना उण माथे जुदा-जुदा स्रोता सू पडियोडा प्रभावा री जाच बरतो जावणो कितो उचित है ? उ रे जीवन मे काव्य चेतना री सरूआत हुवण मू सेयने जीवन री खाम खा घटनावा रे आधार माथे उण रा पदा री व्यवस्था करणो जरूरी है ।
- (2) एक औरत रे रूप मे मीरा रा बिद्रोह ने इतिहास री घटनावा रे परिप्रेक्ष्य मे देखण री जागा उण रे युग रा सामाजिक साचा, समाजशास्त्रीय मान्यतावा आधार माथे देखण परखण री भी अपेक्षा है ।
- (3) मीरा री ईश्वर परिवर्तना री खोज रे वास्ते उण रे साहित्य मे मिलण बाळा इत्ता समीकरणा रे खास उत्सा ने बूडणो जरूरी है ।
 - (क) महाप्रभु बल्लभाचार्य रे पुष्टिमागं रा सिद्धान्ता सू, चैतन्य मत री भक्ति सम्बन्धी मान्यतावा सू अर हितहरिवंश रे साम्प्रदायिक विचार सू मीरा रे पदा सू तालमेल बँठावणो अर उण री भक्ति री मूळ चेतना न खोज निकालणो ।
 - (ख) कृष्ण भक्ति से आगे नाथपन्थ री योग भावना अर ज्ञानमार्गी सन्ता री भक्ति अर साधना पद्धति मू मीरा रे पदा रो तालमेल बँठावणो ।
 - (ग) कृष्ण भक्ति रा शास्त्रीय स्वरूप बाळा सम्प्रदाया री मान्यतावा रे साथे मीरा री पदावली रो गीत गोविन्द री शुद्ध शृंगार बाळी परम्परा रो तालमेल बँठावणो ।
- (4) भारत री सामाजिक दशावा रे मायने नारी री दशा अर मीरा रे व्यक्तित्व रो तालमेल बतलावणो । सास्कृति री रूढ निजरा अर मीरा री भक्ति चेतना रे बिधाळे तालमेल बिठावण री कोशिस बरणो ।

□

(राजस्थानी मन्दासरी सारू पडियोडा परबो)

गांव रे जीवन रा चितेरा : रवीन्द्र नाथ ठाकुर

रवीन्द्र नाथ ठाकुर भारत की आत्मा रा पूठरा चितेरा रचनाकार ह। उणा की कलम सँ उकरियोहो देश की माटी रो कण कण मन भावते उजास सँ वेणी रचनावा मे जगमगाय रँयो है। घरती की मोकळी आस्थावा अर गाव की माटी की महुक सँ उणा की साहित्य सांगोपाग भोजियोहो है। कवि, लेखक, संगीतकार, चित्रकार रे रूप मे जठीने भी इणा की प्रतिभा आगेपावडा भरिया है उण मे कल्पना माये टिकियोहो सपनीली रहस्मात्मकता रे सागे सागे जमी रो कोड अर उण रो मधार्थ साकार हूबतो दीसे है। आदर्शा रो घर्णी ओ रचनाकार भारत रे गावां मे रेवणवाळी आत्मा ने खुद पिछाण ने लोगा सँ उण की सौंदर्य सँ रलियोहो पिछाण करावण सारू कोशिश करतो रँयो।

जमीदार रे परिवार मे जलम लेबन रे कारण इणा ने जादातर नगरा रे जीवन रो हीज अनुभव मिलियो। पण इण कारण टेगौर रो सौंदर्यचेता मन बधियोहो कोनी रँयो। गांव मे हीज भारत की साथी जिनगाणी है अर गाव ने छोड न हूजी ठोड़ भारत रा माचा दरसन को रूप सके इण बात ने सामी तरा सँ पिछाण ने के हरमेम गाव रा दरसन सारू छटपटावता रेवता। गावा रे वास्ते आपरे हम्मान न टेगौर खुद सँ बरनित कियो है— “मै गाव की जिनगाणी ने मोवळी बारीकी सँ दपण की इच्छा राखतो हो। म्हारी आ कर्तव्य भावना म्हने नदिया, नहरा अर पूजा जल मारणा सँ म्हने दूर दूर रा हिस्तावा बनी लेयगी। इण सँ म्हने जिनगाणी ने एक बदलियोहो दृष्टिकोण सँ देखण रो मोको मिलियो। गाव रा भावा की दिनचरमा अर उणा रा कामकाज की बदलियोहो दिसावां ने देख रे म्हारी हिवडो तादनुब सँ भरग्यो। नगर रे माय पालीजियोहो होबता थका भी मै गावां रे सौंदर्य रे बिचाळे खुद ने सेयग्यो अर उणा रा आकर्षणा सँ खुद ने सांगोपाग भर लियो।”

गाव की जिनगाणी सँ टेगौर की आ पिछाण उणा की रचनावा की नूवी दिसा बगनी। हालांकि टेगौर रहस्यवाद अर प्रकृति रे पूठरे सिणगार रो चितेरो कवि हो पण गावा रा लोगा की अभावा अर कष्टां रे माँय भी यस्ती अर विश्वास सँ रिलिजियोहो निराळी जिनगाणी ने देख ने उणा की हिवडो पछतावे सँ भरग्यो। उणा ने लागियो के जार्ने के मिनन-मिनन रे बिचाळे रा इण आतरापण ने देख रे

भी अणदेखणो करतो रेह्या है। उणा ने लागियां के वे जमींदारी री सगली सुविधावा ने भोग ने जाणे आपरी हीज माटीवाळा गावावाळा माथे अत्याचार कर रेह्या है। टेगौर री आ पछतावे री भावना उणा रे साहित्य री नूवी प्रेरणा बणगी। इण बात ने वे खुद इण मुजब स्वीकारियो है—“होळे होळे गाव रा लोगा री गरीबी अर वेचारगी म्हारे सामी सजीव हूयगी। मैं विचार करण साम्यो के उणा रे वास्ते म्हने की न की कोशिसा करणी चाईजे। जदे म्हने आ बात मोकली सरमावण लागगी के म्हे एक जमींदार हू जिको के कोरा-मोरा आर्थिक उद्देश्या सू प्रेरणा लेवतो हो अर टेक्स उगावण माय साम्योडो हो। जदे आ बात मैं अनुभव कर सीवी उण रे पछे मैं गाव वाळा लोगा रे भी मना मे आ चेतना भरणी सुरू कर दी के उणा ने आपरी जिम्मेदारिया खुद रे काधा माथे लेवण लाग जावणी चाईजे।”

इण अनुभव रे पाछे उणा रे मन मे आ बात घिर हूयगी के नगर री सुविधावा भोगण आळा लोगा ने गाव रा भोळा-भाळा भिनसा रो शोषण करण रो कोई हक कोनी है। उणा रा साहित्य मे भी इण चेतना रा जीवता दरसन हुवे है। जाणे टेगौर गाव री आत्मा सू खूबसूरत सामेलो करण री कोशिसा सुरू कर दीवी।

उणा री मोकली कवितावा भारत रे गावा रा दुख दरद ने सामी लावे। इण कवितावा मे उणा री लेखनी आपरा रहस्यवादी तिसिम ने खोखी तरा सू तोड़ न सामी आई है। धरम सू पीड़ित हूवण आळा बूढ़ा भारत री रीत्या री साकळा माथ अर परम्परावा री जडता माथे चोट करता वे ‘प्रेतात्मा’ कविता माय केह्यो है—‘देश रे चारउपेर जेळ री भीता तणगी। कोई का जाणतो क इण अणदीठती भीता सूपार किया पायो जाय सके। उणा रा भगवान मन्दिरा मे निवास कोनी करे। गावा म जठे सकडहारो लकडी चीरे है किसान जठे हल बावे है उठे म्हारा भगवान बस है।’ इणी भात ‘ए बार फिराओ मोरे’ कविता मे किसाना री जुम्माक भावना ने बतलावता वे केह्यो है—‘इण कुम्हलायोडा मुखा ने भापा देवणी पडेल, अे धाकयोडा, सूखा, टूट्योडा हिवडावा माय आशा गुजावणी पडेली। इणा ने तेवडो देव न केवणो पडेल के अरे घा लोगा एक बार तो माघो उचो कर ने खडा हूय जावो तो थे देख सकोला वे जिण लोगा सू थे डर रेह्या हो वे तो खुद यासू भी मोकळा डरपोक है। पारे खडा वृद्धतई वे भाग जावला। रस्ता रा कूकरा ज्यू डर ने गायब हूय जावला। मसू के वे तो बस मूडा सू हीज उची ऊची बाता छाटे है खुद रे हिवडा म वे आपरी कमजोरी पिलाणें है’।

टेगौर रो कथा साहित्य भी गाव री जीवन दसावा न समेट ने सामी आयो है। माटा तीर सू उणा री कहाणिया ने चार भागां माय बाट'र देखियो जाया करे है। इणा में सेंग सँ ज्यादा कहाणिया उण वरग री है जिण माय गाव रे जीवन ने कथा रा विषय बणायो गयो है। इण कहाणिया री रचती बँळा टेगौर जमींदारी रे

रत रत्नबाज के खातिर गावा ऋषणी दिना तई रहेला ह। इण बारण उणा ने गावा
 रा जीवन ने नेहे सू देखण रो मोको मिलियो हो। 'पोस्ट मास्टर', 'मेघ ओ रोड',
 'नप्टनीड', 'प्राणरक्षा', 'कर्मपल', 'कवास', 'क्षुधित पाषाण', 'निशीमे' आदि कथावां
 गावा री जिनगाणी रे यथायं माये हीज निरमित हूओड़ी है। इणी भांत रा चितराम
 अर चरित्र रवीन्द्रनाथ रा नाटका मे भी मोकळा निजर आवे है।

इणा रा साहित्य मे गावा रा चितराम कीरी मोरी साहित्य री रचना
 प्रेरणावा हीज भण'र कोनी रंगी है। गावा री दसावा रे मुधार री रचनात्मक
 नजारी भी इणा रे साहित्य मे निजर आवे है। गावा री इसार जिनगाणी री
 एकरसता ने तोड़ ने उण ने गति दिरावण सारू टेगौर आपरी रचनाबा मे जिण
 आदर्श ने बिरपियो है उणा मे महात्मा गांधी रे प्रयासां जेडी गरिमा निजर आवे
 है। गाव रा सामाजिक जीवन रा उरधान सारू टेगौर री दृष्टिकोण स्वस्थ समाज
 रे थापना री बोधित करतो दीसे है। वे आपरी रचनावां मे गावा रे पुननिर्माण री
 बात ने मोकळी धुलदगी सू उठाई है। "समाज अर स्र्वास्त" जेडा निबन्ध इण
 भात री सामाजिक चुराईया माये सीघो सीघो आक्रमण करे है।

गावा री आर्थिक उन्नति रे वास्ते टेगौर शिक्षा रा साचा आदर्श ने प्रोत्साहन
 दियो है। इणा री रचनाबा मे मशीन रे स्वागत तो करीजियो है पण मे मिनत माये
 मशीन रा अधिकारा न पसन्द कोनी करता। गावा रे सामुदायिक उन्नती री जिण
 बाता री आजकल मोकळी चरचा की जावे है उण ने टेगौर आपरी रचनाबा मे पूर
 तावद सू परकट करता रहेला है। सहकारी आन्दोलन रे बिवास रे खातिर वे मोकळा
 तर्क दिया है। उणा री आ मानता ही बँ सहकारी आन्दोलन सू हीज भारत रा
 सुरुपोत रा सामाजिक जीवन मे ग्रामीण समाज रा समाजिक उत्तरदायित्व री
 बिरपणा हूय सकी ही। इण वास्ते टेगौर री आ मानता ही के देख रा सगळा बिकास
 रे वास्ते गाव माये टिकियोडी अर्थ व्यवस्था हीज उपयोगी हूय सके है। सामाजिक
 न्याय खातिर उणा आपरी आवाज पूरी बुलदगी सू उठाई। आ आर्थिक भेदभावा न
 हटाप न साचा सामाजिक हित री विधान करण आळी ग्रामीण चेतना इणा री
 रचनावां मे पूठरी गरिमा सू गामी आई।

टेगौर री साहित्य साजे अरथा मे भारत री आत्मा री साहित्य ह। वे उणरी
 घटकन ने गाव री जमी रा बण बण सू सुणन री चेष्टा की हो। इण कारण हीज उण
 री साहित्य अमर है अर उणरा भारतीयता री साची आस्था रा आदर्श भी गावा सू
 जुडाव रे कारण जुगा जुगा तई अमर रहेला।

□

[(भावासावाली सू प्रचारित)]

‘वेलि’ रो वस्तु सौंदर्य : एक पुनर्मूल्यांकन

‘वेलि’ रे कथानक रे सौंदर्य सँ सम्बन्धित म्हारी बात शुरूकरण सँ पेसी में आप रो ध्यान इण बात कनी सोचणो चाहू हू बे साहित्य रे मायने जदे भी एक् रचना रो सांगोपाग मूल्यांकन होय ने उणरो सगळी विशेषतावा सामी आ जावे पछे उणरो पुनर्मूल्यांकन करण रो ब्यू जरूरत पड़े ? पेलडा मूल्यांकन रो सारी स्थापनावा ने छोड़ ने जदे उण रा पुनर्मूल्यांकन रो बात उठाई जावे सो बेडा प्रयासा रो सायंकता कई है ? ज्यादा समभावण ने वास्ते ओ कह्यो जाय सके के पुनर्मूल्यांकन रो प्रयोजन कई है ? कई नई दृष्टि रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? के स्थापित विचारो रो विरोधकरण रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? के बे प्रतिमान जिका के युग रे बदलण रे सागे सामी आवे बंणे आधारों सँ कियोडी समीक्षा रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? ओ कुछ मुद्दा है जिका के सेंगळ पेसी सामी आवे ।

ओ सारा सवाला ने ध्यान मे राख ने जद आपा विचार करा सो शुरू मे हीज आ बात चोखी तराळ साफ हूय जावे के साचे अरथा मे पुनर्मूल्यांकन पेसी कियोडी चेष्टावा रो विरोधी कोनी हुया करे बल्कि उण री जगा ऐडा प्रयासा ने पूरक री सजा दी जा सके है । ब्यूके जद आपा कोई रचना रो मूल्यांकन किया करा तो उण टेम आपा रे साम्हे कोरी पोधी हीज रह्या करे । उणरी अच्छाइया ने दूब निकालण रे वास्ते आपा ने खुद ने कोशिश करणी पड़े । इण वास्ते ई बात रो घणी सम्भावना है के बी टेम आपाणी पूर्वधारणावा आडी आय जावे । आपाणी परपरानुगतता या विचारो रो प्रतिबद्धतावा आपाणी दृष्टि रे माये इत्ती हावी हूय सके के उणरे रंग रे कारण आपा कृति सँ ग्याम करण री जागा आपाणी खुद री स्थापनावा रे प्रति घणा सचेत हूय जावा । अगर आ बात साच हू जावे तो पछे इण दोष रे कारण पेलडा मूल्यांकन मे सांगोपाग दृष्टि रो पैसाव कोनी होय सके । इणी तराळ आ बात भी ध्यान मे राखणी जरूरी है के समय रे बदल जावण सँ लोगा रे सोचण विचारण मे भी अन्तर आ जाया करे । इण कारण नूवे युग रा लोगा ने कोई बात सिरफ इण वास्ते हीज चोखी कोनी लागे के बा पेलडा लोगा ने घणी पसन्द ही । मूल्यांकन रा जिका आयाम एक खास टेम मे घणा पसन्द किया जावे बे हीज युग बदलण रे सागे सागे पुराणा पड ने वासी, बोदा ब्हेय जावे । पैमाना रे दोष सँ पण कृति ने दोषी कोनी कह्यो जाय सके । इण वास्ते पुनर्मूल्यांकन कर ने आपा पेलडा प्रयासा री पूति कर देवा

अर कृति रा साहित्यिक महत्व एक् बार पाछो सवारे सामी खेच लावा । इणही तरऊ नूबोडो दिशावा ने चानणा म लावण रे खातिर ओ जरूरी है के आपा समीक्षा रा जिका नूबोडा प्रतिमान निर्धारित हुया है उणा ने ध्यान मे राख न जूनोडो पोयिया री विशेषतावा बतावा । इण वास्ते मूल्याकन किछोडो होवता थका भी पुनर्मूल्याकन री जरूरत पड़े । ए बाता न ध्यान मे राख ने म्हें आज आप लोगा रे सामने 'बेलि' रे वस्तु तत्व रो पुनर्मूल्याकन करण री चेष्टा कर रहो हूँ ।

'बेली' री वस्तु री तात्पर्य निर्णय—आपरी रचना लिखण सू पेला हर कवि उण री बधा रो एक न एक तात्पर्य अवसर त कर लेवे । पण काव्य री क्षती रे कारण वो केने स्थूल रूप म प्रकट कोनी कर सके । कविता री सुन्दरता वो रे चमत्कार अर रमयादित्ता सू तय हुवे । पण वेणा कोरा कोरा नाम गिणा देवण सू उण री सारी महिमा खसम हूय जावे अर कवि री सारी मेहनत बेकार ब्हेय जावे । सजग कवि इण वस्ते रचना रो तात्पर्याय न अप्रत्यक्ष ढंग सू कथा रे मायने मिला दिया करे । ऊपरली निजर सू देखण सू पाठक वा ने कोनी पक्क पावे पण आलोचक सू वस्तु रो तात्पर्य छानो कोनी रैय सने ।

'बेलि' रे बचानक री विशापतावा रे पुनर्मूल्याकन रे वास्ते आ जरूरी है के सगाळ पेला ई बात रो निर्णय हा जावणा चाहीजे के रचना निर्माण रे लारे कवि रो मूल तात्पर्य कई हो ? 'बेलि' न भक्ति या शृंगार प्रधान रचना कही जावे है पण म्हारी समझ म जे बाता तो कथा रा मोटा मोटा आधार है न के रचना रो तात्पर्य । इण भेद न पिछाणिमा यिता आपा पृथ्वीराज री वस्तु चिन्तास जला ने पिछाण कोनी सना । इण वास्ते आपा न धाडी देर तई कृति माथे सू ध्यान हटाय ने खुद कवि कनी ध्यान देवणो पडेला ।

पृथ्वीराज अगर शुद्ध शृंगारिक रचना लिखणी चावतो तो इणरो सबध उणरे खुद रे जीवन सू जरूर होवतो । पण आ बात उण रे खुदरे व्यक्तित्व अर उणरी राजनैतिक स्थिति मू मेल कोनी खावे । आ बात तो सब जणा जाणे है के कवि एक बहुत बडो योद्धा हा । खुद अकबर ई री बीरता सू प्रभावित हो । नरोत्तमदासजी तो ई कवि रे वास्ते इत्तो तब क बतायो है के पृथ्वीराज अकबर रे दरबार रा नवरत्ना मे सू एक हो । बेणा हीज शब्दा म -'पृथ्वीराज री प्रतिभा सू सम्राट अकबर उणा कती आकषित हुया अर ओ उणा रे साथे रंजण लागग्यो । सम्राट रा दरबारिया माय पृथ्वीराज रो बडो आदर हो । अक्बरी दरबार रा नौ रत्ना म एक पृथ्वीराज भी हो । सम्राट उण ने बहुत चावतो हो । उण रो कह्योडो निम्नलिखित दोहो प्रसिद्ध ह

पीयल सो भजलिस गयो, तानसेन सो राग ।

रीझ बोल हस खेलवो गयो बीरबल साय । ।

आ बात अगर साची है तो इण सू ओ प्रश्न सडो कियो जाय सके के पृथ्वीराज ने अकबर खातिर इत्तो सम्मान नयू दियो । अकबर रे नौ रत्ता मे जिवा जिवा लोगा री चर्चा आवे वंणे आधार सू अगर पृथ्वीराज ने देखा तो उण ने ऐडी गरिमा सू महित करण आळो एक ही आधार निजर आवे अर वो है पृथ्वीराज रा स्वाभिमान । इण सबध मे टेसीटरी साफ साफ वेह्यो है के—‘पृथ्वीराज पराक्रम अर अदम्य स्वाभिमान रा घणा प्रशंसक हा ने दैन्य गुलामी अर नैतिक पतन रा कट्टर दुश्मन हा । जिण आदतण उदारता सू वे दोस्त या दुश्मन री आपरे काव्य मे तारीफ कर सकता हा उणी सच्चाई सू वे खुदरा भाई बीकानेर रा राजा री ही नही, खुद अकबर तक री भी, कोई ओछी हरकत ने देख न, सीखी आलोचना कर सकता हा ।’

इणी तरङ्ग पृथ्वीराज रे ब्यक्तित्व मे जातीय गौरव अर देशाभिमान रो भाव किस्ती गहरो हो जिण रो प्रमाण राणा प्रताप रो वो पत्र है जिको के अकबर बादशाह रा खुद पृथ्वीराज ने दिखलायो हो । बादशाह रो ओ व्यवहार डं बात ने सिद्ध करण रे वास्ते घणो है कि वो पृथ्वीराज री बीरता, तेजस्विता, अर स्वाभिमान रा जानकार हो । वो इण रूप म हीज पृथ्वीराज रा ब्यक्तित्व री पिछाण भी करतो हो । इण रो एक और प्रमाण कर्नलटाड रो ओ विवादास्पद कथन है के पृथ्वीराज दरअसल स्वाभिमानो राजपूत हो । वो अकबर री अधीनता कोनी मानी । इण वास्त बादशाह उण ने बन्दी बनाय ने आपरे अठे राखतो । जद प्रताप रो पत्र बादशाह न मिलियो तो वो पृथ्वीराज रो गर्व तोडन री, खातिर हीज वा चिट्ठी उण ने दिखलावी ही । श्री भूपतिराम साकरिया टोड रा ई कथन ने इण तरङ्ग बतलायो है के—‘प्रताप रा उण पत्र ने बादशाह पृथ्वीराज नाम रो थोष्ट राजपूत सरदार न दिखलायो । पृथ्वीराज बीकानेर रे राजा रो छाटो भाई वो अर वो इण दिनो म अकबर बादशाह रे अठे कंदी थो । उण रे कंदी हूवण रो कारण ओ थो के उण म मोकळो राजपूती स्वाभिमान थो । दूजा राजावा री तरें वो अकबर री अधीनता स्वीकार करण खातिर तैयार कोनी थो । इण वास्ते कैद कियो गयो थो अर बन्दी अवस्था म वो बादशाह रे अठे जीवन व्यतीत कर रह्यो थो ।’

ऊपर रा विवेचन सू ओ निष्कर्ष निकले है के पृथ्वीराज न केवल एक बडो योद्धा हो बल्के घोर स्वाभिमानो अर जातीय गौरव ने राखण आळो आदमी हो । अर आ बात आपा सब अच्छी तरें सू जाना हा के जीवन मे हर आदमी रा खुद रा की न की जीवन मूल्या दूया करे है । हर आदमी वे मूल्या रे वास्ते खुद ने समर्पित कर देव पण किणी भी तरे रो समझौता करणो पसन्द कोनी करे । पृथ्वीराज जेडा

आदमी सूँ तो ई बात री हरमिज अपेक्षा कोनी की जाय सके के व जीवन रे किता भी क्षेत्र मे स्थितिया रे सामने या थोडा सा फायदा रे वास्ते या समाज मे नाम मिलन री खातिर किणी भी तरे रो समझौतो कर लेवे । पृथ्वीराज ऐडा ब्यक्तित्व रो धनी हो तो ऊरे ई ब्यक्तित्व रे बरडे धने रो असर उणा रो रचना माथे भी पड्या बिना कीकर रैम सब्यो चूला ।

ई बात ने 'बेलि' रै तात्पर्य निर्णय रे वास्ते अगर घटित कर ने देखा तो इण रा वस्तु मे शृंगार भावना रो निरूपण वृत्ति रो चरम उद्देश्य कोनी ठहरीजे । इण रा शृंगार वर्णन मे तो प्रसंगानुरूप उदित होवण आठो दशा या स्थिति रे रूप मे हीज देखी जा सके । अर्थात् पेली महत्वपूर्ण बात तो आ है के पृथ्वीराज जेडा ब्यक्ति सूँ जिको के वीरता, तेजस्विता ने स्वाभिमान ने जीवन रा चरम मृत्या रे रूप मे धारण करतो हो, आ अपेक्षा कोनी की जाय सके है के वो रसिक जणा रे मनोविनोद रे वास्ते कोरो शृंगारिब रचना लिख सके । दूसी आ बात भी ध्यान मे राखणी जरूरी है के आपरा जीवन काल मे कवि एक् श्रेष्ठ शृंगार कवि रे रूप मे पापित नही हो बरिक् आपरे ब्यक्तित्व रे अनुरूप हीज वो ओजस्वी बाणी रो महत्वपूर्ण कवि रे रूप मे निजीजतो हो । ई बात रे वास्ते एक् बार फेर बर्नल टाड रो कथन ध्यान मे राखणो जरूरी है के 'पश्चिमी देशा रा राजावा री भात पृथ्वीराज आपरे सभे रा राजावा मे श्रेष्ठतम वीर हो जिको के आपरी ओजस्वी काव्य शक्ति सूँ लोंगां मे प्राण पूक सकतो ने वनत माथे लडाई रा मैदान मे खुद रा दीर्घ रो भी परिचय दे सकतो हो । उण टेम रा चारण कविया रा समुदाय मे वो राठौड वीर सबसू ज्यादा प्रशंसा रो भागीदार हो । (साकरिया-पृष्ठ 23) टोड तो पृथ्वीराज री कविता री शक्ति ने दस दस हजार घोडा री तावत रे बरोबर बतलायो है ।

ऐ सगळी बाता ई राठौड कवि री कविता ने तेजस्विता अरु दीर्घ भावा रा प्रदर्शन करण चाळी कविता रे रूप मे स्थापित करे ने कोरा भोरा शृंगार ने हीज पुरी तराळ प्रकट करण आठो कवि रे रूप मे नही । अठे आप लोगा रे मन मे ओ प्रश्न खडो हूय सके के तो पाछे 'बेली' मे शृंगार ने इतो विस्तार सूँ वर्णित करण री कई आवश्यकता ही ? इण प्रश्न री बर्धा आगे 'बेली' रे काव्यरूप रे अन्तर्गत बियोडी है । अठे तो ओ हीज कह देवणो पर्याप्त है के शृंगार भावना वस्तु रो तात्पर्य निर्धारण नही करे है बल्के आ तो 'बेली' रे रूपक रे कारण, चरित्र नायक कृष्ण रा स्थापित ब्यक्तित्व रे व्याज सूँ अर वृष्णवाक्या री परम्परा रे व्याज सूँ ग्रन्थ मे प्रस्थापित हुई है, वस्तु रे चरम लक्ष्य रे रूप मे वर्णित कोनी हुई है ।

अगर 'बेली' शृंगार रे वास्ते हीज लिखियोडी रचना नही है तो ई रे शुरू मे ही शृंगार रे प्रति सपर्ण रो भाव क्यूँ वर्णित किमो गयो है । आ आपत्ति भी की जाय सके । ग्रन्थ मे वो अतिसौख्य ओ है

सुखदेव व्यास जेदेव सारिखा

सु-कवि अनेक, त अवे-सय

ओ-वरणण पहिलऊ कीजइ तिणि

गुणियइ जेणि सिगार ग्रय ।

ई छन्द रे मुजब शृ गार ग्रन्थ गुंथण बाळा हमेशा स्त्री री सुन्दरता रे वर्णन सू कथा री शुरुआत करे आ कवि री विचारधारा तय हुवे । इण छन्द सू शृगार ने हीज कवि रो चरम प्रतिपाद्य मानणो चाहिजे लोमो री आ धारणा है । और ई स्थापना रे कारण खो भी कवि परम्परा रो हीज पालन कियो है । जठं परम्परा निभावण री बात आ जावे उठे कवि मौलिक नही रेह्या करे आ बात खोली तरा सू जाणो हो । इण भात कवि आपरे निश्चित जीवन मूल्या रे बावजूद कथा री शुरुआत शीघ्र वृत्ति सू करण री वनिस्पत बी वृत्ति री प्रेरणा स्रोत सू की है । इण मू अधिक ई छन्द रो ने ग्रन्थ री शृ गार भावना रो महत्व नही है ।

वस्तु सू शृ गार भावना ने नकार ने उण रो तात्पर्य निर्णय करण मे दूजोडो आधार भक्ति भावना रे रूप मे सामने आवे है । कथा रे अन्त मे जिका महात्म्य री चर्चा कवि की है उण रे आधार मू रचना मे कथ्य री दिशा भक्ति रे बनी प्रवाहित होवती पणी दीखे है । पण कई सचमुच मे भक्ति कवि रो इष्ट है इण बात ने भी देख लेवणो जरूरी है ।

हिन्दी मे रीतिवात्त रा कविया री भक्ति भावना रे वास्त एन बात इती सटीक भाव सू कंयोडी है ने वा खोडा मे ही वे कविया रा तात्पर्य रो निरूपण कर देवे है । कह्यो गयो है के—

आगे के सुकवि रीझि हैं तो कवितार्ई है

न तु राधिका कन्हार्ई सुमिरन को बहानो है ।

अर्थात् ऐहा कवि राधा और कृष्ण री भक्ति र बहाना सू रचना कोनी करता वे तो काव्य रे माध्यम सू लोगो ने रिभावण रो प्रयास करता हा । अगर आ प्रयास सफल कोनी होवतो तो इणी बहाने भगवान रो नाम भी लिरीज जावतो । पृथ्वीराज कृष्ण ने खरिय नामक बणायो इण रो ओ मतलब बीकर लियो जा सवे ने वो बेणी भक्ति र आदाओ री स्थापना करनी चाहतो । आपरी लाचारी न सो खुद मू प्रकट कियो है के—

जिणि सस सहस पण, पणि-फणि बि-बि जिह

जीह-जीह नव नवउ जस,

तिणि-ही पार न पाय प्रीरम ।

वयण डेहरो किसउ वस ? ॥५॥

दर असल जयदेव कवि रे 'गीत गोविन्द' रचना मू हीज कृष्ण री शृ गारिक वृत्ति आकर्षण रो विषय बणयो । पछे कविया रे सामने बेणें चरित्र रो ओ दाचों पूरो तरक स्थापित होयम्हो । हिन्दी म विद्यापति आपरो पदावली मे ने सूरदास आपरा कूट पदा मे जिण तरक कृष्ण रे व्यक्तित्व ने शृ गार रे नैसर्गिक स्वरूप मे वर्णित कियो है वे श्रुतिया 'गीत गोविन्द' री परम्परा ने निभावण रे कारण हीज पनप सकी है । बेहोज चेष्टा पृथ्वीराज भी की है । अयात् बी री रचना सिफं कृष्ण रो नाम चावती हो बी री भक्ति नही । आ बात शायद आप नोगो रे गळे सू दोरी उतरे पण साब जा हीज है । बयू के भीरा री भक्ति भावना मे जेडी वेदना, समर्पण ने प्रपत्ति या शरणागति री भावना है जेडी भक्ति भावना 'बेलि' म निजर कोनी जावे । इणी भक्ति रो जिवी खुद रो स्वरूप है वो भी 'बेलि' मे कोनी है । 'भक्ति' री व्याख्या भज सेवायाम धातु सू करने शाण्डिल्य उणने 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' कहाँ है । बेडी परानुरक्ति रो भाव भी रचना मे दोखे कोनी है । और न नारद री वा भावना भी है जिण ने वो 'सा त्वस्मिन् परम प्रेम रूपा' केय ने उण री ग्यारह आसक्तिया रो उल्लेख कियो है । मागवत मे जिवी नवधा भक्ति गिणाई गई है वेणां दर्शन भी ईश्वर कथानक म कोनी हुवे ।

कुल मिला ने आ बात निरूपित की जाय सके है के 'बेलि' मे न तो आत्मार भक्ता री प्रपत्ति या शरणागति री भावना है, न भीरा री भक्ति री तर रो वेदना भाव है, और न शाण्डिल्य या नारद भक्ति सूत्र मे वर्णित भक्ति रो शास्त्रीय भाव हो है । अर्थात् पृथ्वीराज रे वास्ते कृष्ण इकमणी रो नाम भक्ति रे अभिप्रेषण रे रूप म लेवणो जरूरी कोनी हा । वो तो कृष्ण रो नाम आपरा ग्रन्थ रा चरितनामक रे रूप म लेवणो बावता हो । रीतिकाल रा हिन्दी कविया री भक्त 'रीति है तो ब्रजिताई है न तु राधिका कहाई सुमिरन को बहानी है' वाली उक्ति भक्ति री दृष्टि सू 'बेलि' माये भी पूरी पूरी साची बँडे है ।

शृ गार या भक्ति ने छोड ने किसी खास बात है जिण ने 'बेलि' रे तात्पर्य निर्णय रे रूप मे देखी जाय सके । झूठी दृष्टि मे वा बात है शीर्यं वृत्ति । पृथ्वीराज जिण स्वाभिमान रा घणी हो न अकबर रे दरबार मे रेवतां थकां भी वो जिण उत्साह म उण री प्रतिभा ने नगर सजतो उण रो आधार उण री आ शीर्यं वृत्ति हीज है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भक्तिकाल रे उदय रो एक कारण ओ बतलायो है के आपरे देश मे हीज समर्थ होता थका भी जद हिन्दू लोग पराजित होयया तो बँणे कने ईश्वर री भक्ति करण रे अनावा और कोई दूजो विकल्प कोनी रह्यो । आ बात अगर साची है तो ओ कहाँ जाय सके के सामान्य आदमी तो खुद ने आसानी म बदल लिमो । बयू के उण री राजनैतिक दृष्टि म ऊंची आवासावा भी कोनी हुवा करे

पण पीघल जेहा घोर स्वाभिमानी राजपूत रे मन म गुलामी री आ भावना अवसर्ग
 बचोट पंदा बरती हुवेला । आपरा मूल्या रे रेवता बका वो खुद रे अह ने कोंकर बढा
 सकियो व्हेला आ बात भी ध्यान म राखणी जरूरी है । बेलिकार आपरी इण
 असमजस री दशा मे हीज कृष्ण ने, जीने वो आप रो आराध्य मानतो हो, आप
 काव्य रो नायक बणावण ने बाध्य हुयो व्हेला । पण कृष्ण रे स्थापित चरित्र
 वीरता रे वास्ते घणी गुजाईश कोनी है । वेंगे बचपन री वे बाता जिका मे उणा र
 वीरता सामने आई हो जदपि शूरता रो चोखो नमूनो है पण उण अवस्था रा बाळक
 सू स्थायी शौर्य वृत्ति रो अपेक्षा कोनी की जाय सने । वेणे अलावा कृष्ण रो व्यक्तित्व
 गोपी बल्लभ रे रूप मे शृंगार भावना रो आधार तो बण सके पण कृष्ण रा उण
 रूप म परपाटुति रो प्रदर्शन सम्भव कोनी हो सकतो । कृष्ण रे शृंगारिक भावना
 सू भरयोडा जीवन रे मायने कोरी रक्मणी हरण हीज एकली ऐडी घटना है जिका
 मे कवि न कृष्ण री वीरता ने प्रकट बरण री गुजाईश निजर आई । इण वास्ते
 पृथ्वीराज कृष्ण रे चरित्र री इण घटना ने आधार बणाय मे खुद रो काव्य लिखियो ।

अठे आ बात भी उठाई जाय सके के नायिका रो हरण करण सू कई शौर्य
 भावना रो प्रदर्शन कियो जा सके ? उल्टे म्हारी समझ म तो हरण मे वीरता
 दिखलावण रो काम नायक री मानना घता या उण री छिछली स्थिति ने तो प्रकट
 कर सके पण ऐडो नायक पाठका रे मन मे वीरता री किणी भी तरह री छाप
 छोड सके ई बात मे सन्देह है । ई बात मू स्वयं कवि भी चोखी सराळ परिचित हो
 इण वास्ते वो रचना रा नाम हरण परम्परा रे अनुरूप रक्मणी हरण नाम देवण
 री जागा इण ने कृष्ण रक्मणी रे प्रेम री बेनि नाम दियो है । जठे बराबरी रे दर्जा
 री प्रेम भावना हुवे उठे नायिका ने पावण री बात हरण कोनी कैदी जाय सके ।
 कवि री आ भावना वस्तु रा उण छ द सू सिद्ध हुय जावे जिण माय रक्मणी हरण
 कर ने कृष्ण कायर ज्यू भाग खडा कोनी हुवे बल्के भागा ने जोश खरोश सू चुनौती
 देवे के अगर कोई रक्मणी रो बर है तो साम्ही आयने लडले । म्हें तो रक्मणी रो
 हरण कर रह्यो हू— बाहरि रे वहरि/छद कोई वर हरि हरिणासी जाइ हरि ।
 कृष्ण री ऐ १ चुनौती सू सैनिक भी कृष्ण ने वीर रूप म वर्णित करण री जागा उणा
 न गोप र रूप मे साधारण करने वर्णित बरे— माखण चोरीन हुवई माहव/महियारी
 ने हुवड महर । कृष्ण रे कोमळ अंग रे कारण हीज जर उण री माखण चोर रे रूप
 मे स्थापित त्यागि रे कारण शिशुपाळ समेत उण रा सैनिक उणा ने अति साधारण कर
 ने देखे जिकळ हीज वे कृष्ण री वीरता म युद्ध मे पराजित हुयल्या । हरण रे कारण
 जिका विवाह सम्पन्न हुवे वो राक्षस विवाह बह्यो जावे । ऐडो विवाह सस्कार
 स्थायी सस्कारा रो अनुपासन कोनी करे । कवि रे मन म आ कुष्ठा भी ही ।

वधानक मे कवि इण प्रवरण सू हट बोनी सकियो है । हरण रे पछे जद वसुदेव देवकी विवाह रे वास्ते पण्डिता ने बुलावे तो वे भी डरता-डरता ई बात ने प्रकट करे के एक ही बीनणी सू बार बार हथळेवा कीया हूय सके । क्यूँ हथळेवा तो हरण री वसत हीज हूययो । इण वास्ते वे हथळेवा ने छोड ने बाकी रा सारा सस्कारा री हीज इजाजत देवे—

वेदोगत धरम विचारि वेद विद्
कपित चित सामा कहण
हेकणि सु-प्री सरिस बिय होवइ
पुनह-पुनह पाणिग्रहण ? ॥148॥

इण कपल सू ओ माफ हूय जावे के पृथ्वीराज री स्वाभिमान एक कनी तो दूमरा री अधीनता मानणो बोनी चावतो तो दूजी तरफ वो हरण ने हरण हीज मानतो इण वास्ते वो मन मे आनवित भी हो । पण उण री मजबूरी ही के कृष्ण ने छोड ने वो आपरे अह री तुष्टि दूजी जाग बोनी कर सकतो हो । और कृष्ण रे जीवन में उणने दमणी री प्रसंग हीज निजर आयो जिवाने आधार बनाय ने आपरी बात केय सकतो । जिया सू वो कथा री ओ रूप हीज प्रकट कियो है ।

इण विवेचना री निष्कर्ष ओ हीज है के बेलि कृष्ण दमणी री वस्तु री मूल प्रयोजन न तो शृंगार भावना री प्रदर्शन करणो हो ने न भक्ति भावना री । वो तो एव राजपूत री हृदय राखतो हो ने उणी अभिव्यक्ति रे वास्ते वो राजस्थान री कवि परम्परा रे अनुरूप वीरता भर तेजस्विता ने बोली तरेक प्रकट करणी चावतो हो । 'पृथ्वीराज रासो' मे ज्यू युद्ध रे समय नायक री युद्ध वीरता री प्रदर्शन है ने शान्ति री टेम उणरो काम वीरता वर्णित की गई है उणी तरक 'बलि' मे भी शृंगार भावना नायक री काम वीरता रे वास्ते हीज वर्णित हुई है ।

'बलि' रे वस्तु सौंदर्य रा आधार तत्त्व—बेलिवार री काव्यकला री सयगू बड़ी बात उणरा वस्तु बिग्यात कला रा घणा सारा आयाम है । उणा भांगने सू शृंगार भर भक्ति भावना री चर्चा उपर की जाय चुकी है । पण फेर भी उणरी वस्तु री के दूजी बातों ने सामने राखवो भी जरूरी है जिणां रे कनी समीक्षा री मा तो ध्यान ही बोनी गयो है या बहुत छोडो गयो है । उणां मे वस्तु री प्रच-पातयकता भर उणरी नाटकीयता री चर्चा करनी जरूरी है । अठे 'बलि' रे वधानक री जे बातों हीज सामीक्षा री जोरिदा करीजी है ।

बलि री प्रवचनमयता—'बलि' मे मन्दकाव्य री गज्ञा दिरीजी है । नागरियाजी चारी उणरा भावुकता मे आय न 'बलि' मे महाकाव्य घोषित करण री प्रयास कियो

है। पण आज तब प्रबन्ध काव्य री एक मांची रचना रे रूप मे बेलि रो मूल्यावन करीजियो कोनी है। प्रबन्धात्मकता रो निर्धारण बिया बिना रचना ने सण्डकाव्य या महाकाव्य केवणो घणी समझदारी रो काम कोनी है। क्यूके ऐहा प्रयास दरअसल आलोचक रो पूर्वधारणावा ने स्थापित करण रा भोटा प्रयास हीज हुया करे। वे धारणावां कृति मू न्याय करण री जागा उणरो अहित हीज अधिक् करती निजर आवे। इण वास्ते 'बेलि' री प्रबन्धात्मकता री चर्चा करणो जरूरी है।

शुक्लजी प्रबन्ध रा तीन लक्षण निर्धारित किया है—मार्मिक स्थला रो पहचान, पूर्वा पर सम्बन्ध निर्वाह ने स्थानीय रंगा रो समावेश। ऐ तीनऊ बाता बेलि री वस्तु री सौंदर्य अर प्रबन्ध पटुता री भी चोम्बी आधार है। अठे उणां री चर्चा करणो जरूरी है।

बेलि रा मार्मिक स्थल—प्रबन्धकाव्य कथा रो प्यू रो र्यू इतिवृत्त हीज कोनी हुवे। अगर कवि कथानक रो स्थूलता रे मांघने मू बल्पना कर ने कुछ ऐहा प्रसंग उठाय कोनी सके जिका के उण री वस्तु ने हृदयस्पर्शी बणाय देवे तो उण स्थूलता मू दब'र काव्य री सुन्दरता नष्ट हूय जावे। बा लय, गति आदि रो पालण करण वाली कविता तो वण जावे पाठका रे हिवडे रो हार कोनी होय सके। काव्य रो ऊचापणे रो आधार वस्तु रा मार्मिक स्थल हीज हुया करे। 'बेलि' री कथा स्यात कथा मांघे टिकियोडी है। इण वास्ते कवि रे सामने कथा रो ठाचो पैला मू हीज गडयोडो हो। मागवत री कथा मू कथानक सेय'र भी कवि उण रे मांघने मार्मिकता रे अनुसन्धान री चेष्टा कीनी है। उण रो सुन्दर नमूनों दक्षमणी री व्यथा ने प्रकट करण वाला संदेश म देखीजे है। कृष्ण रे गुणा हे मू रीभियोडी रुक्मणी शिशुपाल रे साथे खुद रा विवाह ने सिंह रा हिस्सा ने सिपार ने त्वावण रे रूप मे देखने उणा ने संदेश भेजे है—

बलि-वन्धन मूळ, सियाल सिंघ बलि

प्रासद, जउ बीजउ परणई

कपिला घेनु दिन पात्र बसाई

तुलसी करि चशाल तणई ॥55॥

इणी तरऊ देवपूजन रा प्रसंग अर युद्ध रा वणन म शृंगार रे वास्ते पद्मवतु वर्णन भी प्रभावशाली है। इण रे वावजूद सारा ग्रन्थ म मार्मिक स्थला रो अभाव हीज देखीजे। वस्तु मे वर्णना री भरमार है ने कहानी मे मौलिक उद्भावना होवता हुवा भी इण म मन म हीज बस्योडा रे जावे ऐहा प्रगगा री कमी है। कवि री दृष्टि वस्तु ने अभिव्यक्त्य वणावण री बनिस्पत उणने राजस्थानी वाता ज्यू कोरी कोरी कह देवण ने कनी जादा है।

बेलि में पूर्वापर सम्बन्ध की निभाव—मुक्तक काव्य में अर्थ की आत्मनिर्भरता हुया करे पण कथा में ध्वन्यवस्था देवण रे वास्ते प्रबन्धनाय्य में वस्तु की निरन्तरता होवणी जरूरी है। ऐसी रचना में कथा रे सूत्र में पिरोयोडा छन्द आगला छन्द मू बध्योडा रैय ने उण बात ने हीज आगे बढ़ावे। 'बेलि' रो वस्तु ध्वन्यवस्थापन राजस्थान रा गेय परम्परा वाला काव्या की भाव है। ऐडा काव्या में कवि रो भुकाव लोकतत्वा ने समेटण की ओर घणी हुया करे। ऐडा प्रमाप्ता में कथा रो सूत्र घणी बार टूट जावे या चोगी तरा मू निभावीजे कोनी। ऐडा काव्या में कथा विश्वासा मू आगे बढ़े पूर्वापर सम्बन्ध तिवाहू सू मही। आ बात 'पृथ्वीराज रासो' में भी दीवे है न 'बीमलदेव राम' में भी। अठे तक के 'दोला माकू रा दूहा' में भी है। पण ऐडा काव्या में कहानी में गैप रह जावे जिणा ने पाठक आपरी पूर्व जानकारी मू या आपरी खुद की उर्वर कल्पना मू भर लिया करे। केर भी आ बात लोक काव्या की कथा में जादा नहीं छटके। पण जइ प्रबन्ध की दृष्टि मू वेणो मूल्यांकन की बात उठे उठे ई प्रवृत्ति ने दोष की मज्ञा हीज दीरोजी जाय मवे। क्यूँ के कथा की जाणकार पाठक तो ऐसी बेछटा कर सके पण जिको के उणरो जाणकार कोनी है उणरे वास्ते वस्तु रे जम ने निभावणी भारी पड़ जावे। ऐसी अनिरन्तर कथा समन्वित छाप छौडन में समर्थ कोनी होय मवे। 'बेलि' की वस्तु भी ई दोष मू अलग कोनी है। इण में कथा रो सूत्र इतना पतलो है के उण रे आधार माथे कवि की प्रबन्ध पटुता निरूपित कीनी की जाय सकै। ई में कथा निर्घाज ढंग मू बध्योही लीक माथे कोनी चाले जदवे प्रबन्ध रे रूप में ऐडो होवणी जरूरी हो।

स्थानीय रंगों की समावेश—प्रबन्ध काव्य में उपस्थित प्रमगा रे अनु रूप स्थानीय रंग या मोरल कलर की निभावणी जरूरी है। 'बेलि' में लोकतत्त्व रे आधारों रे कारण स्थानीय रंगों की समावेश इसी चोगी तराऊ हुयो है के दण बारें में की भी केवणो पैला क्योडा ने दुवारा दोहरावण की बात हीज कही जाय मवे।

'बेलि' की प्रवर्धात्मकता की साधोपाध विवेचन करण मू आ धान साफ हुय जावे के इण माय वस्तु की प्रवर्धात्मकता की सूत्र थोड़ी फीकी ही है। इण रा मर्म-स्पर्शी वर्णना की कमी ने वर्णनजनित स्थूलता रे कारण इण ने घणी सराहनीय दरजी की दीया जाय मवे। पण ऐ वाता कवि की लेखनी की कमी रे कारण मामूली की आई है। ऐ दोष कवि रा सप्रयोजन उनेरियोडा दोष है। क्यूँ के वो कोरी प्रवर्धात्मकता रे प्रति हीज समर्पित होवण की जागा एकाधिक बाता ने खुद रे काव्य की विषय वणावणो चावतो हो। जिण मू दण काव्य की वस्तु में मार्मिकता की अर प्रबन्ध पटुता की जरूर ज्ञान हुयम्हा है।

वस्तु की नाटकीयता—बेलि की आधिकारिक कथा में नाटकीय तत्त्वों की समावेश इण की मोदय ने इणी तराऊ बकायत दीवे है। केर भी विद्वान लोग उण

कनी घणो घ्यान कनी दियो है । डा. नरोनमदाग स्वामी बेति रे वस्तु व्यापार में टणरी अलग अलग कार्य की अवस्थाओं को जरूर वर्णन कियो है पण वस्तु रा ड्रेमेटिक प्रसंग ने भर उणा रा लाभकारी परिणामा कनी वे भी कनी देतियो है । आधिकारिक वस्तु रे कार्य या फल रे रूप में अगर स्वमणी की अभिलाषा ने गिणा तो फलागम भी बीने होज होवणो चाहिजे । कार्य की जुदा-जुदा अर्थ प्रकृतिया बी रे विनास की जानकारी देवे है । बीज मूल्य में कार्य की अवस्था तक की हीज उल्लेख होवण मूल हीज वस्तु को नाटकीय व्यापार सम्भव हूय सवे है । 'वेलि' की कथा में अगर स्वमणी रे पण लिखण की बात में वस्तु की प्रारम्भ अवस्था गिणा तो पछे कार्यावस्था की दृष्टि सँ कार्य की मिट्टी भी बीने होज होवणी चाहिजे । इन वास्ते जदे वस्तु व्यापारा में देयां तो कृष्ण मूल विवाह हूया पछे वधधारण में फलागम में देखणो पछे । पण प्रवर्तन पथ में एक बार सचेष्ट हूया पछे स्वमणी घणी सन्निध कनी रवे । हुजे कनी कृष्ण हीज दरअमल स्वम जेडा प्रति नायक मूल जूझे ने स्वमणी रे माथे विवाह रे रूप में फलागम बीने होज हूवे । अगर इन में प्रमाण माना तो कृष्ण ने सन्देश मिलने मूल पेला की कथा आरम्भ अवस्था में कनी राखीजे ने इन दृष्टि मूल निरर्थक ही ठहरे । इन वास्ते कथा में प्रारम्भ मूल्य ने फलागम रा वस्तु व्यापार न तो पूरा पूरा स्वमणी रे प्रयासां मूल मिट्टि हूवे ने न कृष्ण रे क्रिया व्यापारा मूल हीज । कवि वस्तु की इन दशा मूल परिचित हो जिकऊ को वस्तु रे दीर्घक रे प्रति सचेत रँयो है ने ग्रन्थ ने 'कृष्ण स्वमणी की 'वेलि' नाम दियो है । ओहीज कारण है के इन की वस्तु में आधिकारिक कथा रा मगळा व्यापार उभयपक्षी है । इन वास्ते बाध्य की वस्तु की आ एक बहुत बड़ी खासियत है के आ एक नाम नाटकीय रूप की सिद्धि कर सकी है ।

'वेलि' की वस्तु में इन्वेन्ट्स या घटनावा की अभाव है । घणी जगा व्योरेवार वर्णना की भरमार है । इन प्रकृति रे उद्गम की खोज करती टेम आ बात सामी भाव के ऐ विवेकतावा उण काळ की वे सारी रचनावा में देखी जाय सके है जिकी प्रेम ने आधार लियोडी है । ज्यू जायसी रे 'पद्मावत' की प्रेम कहानी में वर्णन बहुलता है ज्यू हीज बीसलदेवरास में भी विवाह वर्णन, ऋतु वर्णन आदि की बहुलतायत है । ऐडी सारी रचनावा रे मायने लोकतत्वा की मोकळो आधार है ने ऐडी रचनावा में हीज घटनावा में नाटकीयता रा चरम रूप सामने आयो है । भले ही गेडो करण मूल ग्रन्था माय अम्बाभाविकता आयगी है । पण वस्तु की स्वतन्त्रिकता अर नायक की प्रभावशालिता घणी उभर सकी है । 'वेलि' की कथा में भी ऐ बाता उभर न सामी आई है । ये सगळी नाटकीय सिद्धिया अर लोकतत्वा रा आदर्श 'वेलि' रे रचनाकार की उण इच्छा कनी गकेत देवे है के कवि आपरी रचना में कोरो प्रबन्ध की सीमा मायन बाध ने देखणो कनी चावतो हा । वो तो कई बाता में ममेट न खुद की बात में न खुद रा चरित नायक रे शीर्ष की बात में कवणी चावतो हो ।

निष्कर्ष—अन्त में ऊपरला सारा पुनर्मूल्यांकन की विवेचना में समाप्त कर ने पृथ्वीराज राठौड़ की ज़ेनि रे वस्तु रा सौन्दर्य रे वारें म आ बात स्थापित कर मवा के इण की सुन्दरना कोरी इण बात म हीज कोनी है के आ एक शृंगाररम प्रधान चोखी रचना है, के इण में भक्ति भावना चोखी तरा सृ भर्योड़ी है, के इण में राजस्थान की आतीय विशेषतावा अर लोकतत्वा की सुन्दर समावेश कियाओ है, के इण म गण्डवाव्य रा सुन्दर नमूनों पेश हुयो है, वन्के इण बात म अधिक है के इण की कथा म कवि आपरे स्वाभिमान अर शौर्यवृत्ति ने मही चतुराई मू निभाय मकियो है । उण रे सामन राजनीति की, तत्कालीन समाज की, हरण काव्या की नें स्वयं नायक रे स्थापित स्वरूप आदि की धनी सारी दिक्कना ही । ओ ऐ मबा नें पार कर न जेनि की कथा वस्तु न मत्रायो है । इण वास्ते हीज 'त्रिलि' एक अमर रचना है ।



(आगतीशोन में प्रकाशित)

राजस्थानी की जूनी पाण्डुलिपियाँ की विवेचना

जूनी पाण्डुलिपियाँ रा सम्पादन के बास्ते कीयोड़ी कोशिसा ने दो बगैँ मायने बाट ने देग्यो जाव मके है—पेलडो पोधी रो उट्टार करण की उपकार-भावना भर दूयजो स्तुतिगुरुण बाळी मोह भावना । पेलडो भावना मू भरियोड़ी कोशिसा के माय सम्पादक की चेष्टाबा उण रे इण घमण्ड सू भरियोड़ी व्है के बो पोधी रो सम्पादन कोनी करने जाणे उण रो उट्टार कर रह्यो है । इण बास्ते पोधी के साथे म्याय करण की जागा बो इण घमण्ड ने मन मायने पोयिया करे के उण सू पेल किण भी पारसी पोधी की महिमा कोनी पहिषाण सक्यो हो । अर संगा सू पेली ऐडो कर ने बो एकण कनी पाठका माये एहसान कर रह्यो है दूजी कनी पोधी रो सम्पादन कर ने कवि रो उपकार कर रह्यो है । ऐडी कोशिसा माय पोधी की उपलब्धिया उण रो खुद रो अजिन हक नी बहैय ने सम्पादक मू दीयोड़ी अवसर की उपकार चेतना बगैँ जावे ।

जई के दूजी कोटि रा सम्पादन जलम भोम के आकर्षण के कारण या निजु भापा रो कवि होवण के मोह के कारण या ऐडा हीज दूजा कारणा सू कवि के सांग अपनापो मेहसूम करे । इण कारण बो कवि भर पोधी सू थडा भाव मू हीज जुडियोडो रँवे । पोधी की हर ओळी ने गरिमापूर्ण मान र बो पोधी की तारीफा ने सामी नावण की हीज कोशिसा करतो रँवे । इण बास्ते सम्पादन कला के नाम माये बो उण रा दोपाने दूर करण ने अर आपरे हिमाब मू उण मे मुधार करण की कोशिसा करतो रँवे । खुद आगे आय ने ओ सम्पादक मूरखपणा मू पाठ मू छोडछाड करण लाग जावे । मर जरूरी प्रसंगा ने भेटण के रूप मे, अर दोषा ने मिटावण के रूप म मूल पाठ र मायन घट-बढ़ करतो रँवे । होमर के काव्य रो पेलडो सम्पादक जेनोडोटम भी पोधी रो सम्पादन करती बहैला आपरे कनी मू होमर रा सम्पादक प्रसटका न बाट' र पँव दीना, दूजा गमगा ने मनमानी सँ बदल दियो । ओ सारो कारण बो इण तरा मू ठीक कोनो जिया बो आपरी खुदरी पोधी मे करतो (विलियम स्मिथ-डिविशनरी ऑफ ग्रीक एण्ड रोमन बायोग्रेफी एण्ड मायबोलोजी) राजस्थानी की प्रसिद्ध पोधी 'पृथ्वीराज रामो'ग बार-बार संस्करण के मिलण रो भी कारण सम्पादक रा आपरा दायित्वा रो उल्लेखन होज है । 'बीसल देव रातो' रा सम्पादन मानाप्रसाद गुप्त भी खुद रा तय बियोडा मिढान्ता मू मित्रियोडा अधिकारा के

आधार माधे सत्यजीवन वर्मा सू सम्पादित पोथी रा मोटा आकार ने काट छाट ने पोथी ने लघुकाय बणाम दीयो ।

'बेलि' रा सम्पादन री चर्चा करण सू पला इण दो वर्ग रा सम्पादन कोशिश गी जाणकारी जरूरी है । आपाणे वास्ते बा परम सौभाग्य री बात है के 'बेलि' किसन कर्मणी 'री' रा पेला सम्पादन थी एल पी टेस्सीटरी इण रा सम्पादन करती व्हेला दोनऊँ अतिया सू बच ने सम्पादन के वास्ते अपेक्षित लाग लपेट हानता मू इण रो सम्पादन कियो है । अर टेस्सीटरी मू कियोडी पेसडी चेष्टावा के कारण होज उण रा पाछीला सम्पादन ठाकुर रामसिंह अर सूर्यकरण पारीक आपरी निजर माय स्तुति करण रो भाव राख' र भी इण के कती वैज्ञानिक दृष्टि सँ होज आगे बढ सकया । मायड भोम री रचना हूवण री मोहान्यता ने पाळ 'र भी 'बेलि' रे मूल पाठ सागे मनमानी को कर सकया ।

'बेलि' रे सम्पादन रो इतिहास—अजे तई 'बेलि' रा खास छे सम्पादित रूप सामी आय चुका है । टेसीटरी मू इण रो सम्पादन किया पछे हिन्दी अर राजस्थानी माय होज इण री सम्पादन चेष्टावा कोनी हुई बरन् थी नटवर इच्छाराम देसाई सँ 1955 ई. मे गुजराती भाषा तक मे इण रो सम्पादन कियो जाय चुको है । हिन्दी रा अजे तई रा प्रयास माय थी टेस्सीटरी रो प्रयास जिको के रायल एधियाटिक सोसायटी मू 1919 ई. मे छप्यो, श्री सूर्यकरण पारीक अर रामसिंह रो प्रयास जिंका हिन्दुस्तानी एकेडमी मू 1931 ई. मे छप्या अर श्री नरोत्तमदास स्वामी रो प्रयास जिको के श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा मू 1953 ई. मे छप्यो खास महात्म राखे है । 'बेलि' सम्पादन के प्रयास ने परखण सारु ऐ तीन रूप होज विशेष विचारणजोग है ।

टेसीटरी मू बीयोडो पाठ—टेसीटरी आपरा सम्पादन प्रयास के मायने उपलब्ध हाभण बाळी आठ पाण्डुलिपियो के अलावा दोय राजस्थानी री अर एक संस्कृत री टीकावा रो उपयोग आधार सामग्री के रूप मे कियो है । उण री सम्पादन रीति नीति के माय पाण्डुलिपिया मू भी मोकळो महात्म उण टीकावा रो निजर आवे है जिना न बी काम मुक्त किया सँ पेला होज प्राप्त कर चुको हो । इण तथ्य ने के खुद स्वीकार कियो है । इण टीकावा के माय टेसीटरी पोथी री अरोसेमदगी पायी ही क्यूँक ऐ तीनऊँ 'बेलि' के रचना के गणना बरसा माय माय होज लिखीजगो ही (अर्थात् सवत् 1637+50 = 1687 मू पेला पेला ऐ टीकावा सामी आय चुकी ही) अर इण वास्ते पूरी तरा मू बिश्वस्त बोनी होवता यका भी टेसीटरी ओ भी माने है के ऐ तीनों भाग मू एक या दो तो खुद पृथ्वीराज के जीवता यका होज लिखी जाय चुकी ही । जिन माय मू पेलावाटी दूधारी टीका के निखी जावण री सम्भावना

वा सवत् 1673 सँ पला-पेला बिया करे। हालावे ओ सवान अणसुलभियोडो ही र जावे है के कवि रे गुद रे जीवणकाल माय लिखी जावण भर सू हीज वे प्रमाणिव कीया हू जावे है ? म्हाणी इण धारण री पुष्टि इण बात सू भी हूय जावे है के उण रे जीवणकाल माय ही टीकावा रे निम्बीजण रे बावजूद पोधी रो असल रचना-काल अजे तर्क निर्धारित कोनी हू सक्यो है। टीकावा रो आपसी अतिविरोध इणा ने राजस्थानी रा जूना साहित्य रे माथे लगायो जावण बाळो प्रश्नचिह्न 'अप्रामाणिकता या असदिग्धता' रे आरोप सू बचाय'र कोनी राख सवे। इण वास्ते वे मूल पाठ रा निरधारण खातर सहायक कीकर हूय सके आ बात इण विवेचन मू आपो-आप खडी हूय जावे।

उपलब्ध हूषणवाळो मगळी टीकावा, पांडुलिपिया माय सू टेसीटरी उगूणे राजस्थान माय लिखियाडी दूढाडी टीका ने हीज मंगा सू ज्यादा प्रमाणिक मानी ही। अर 'बेलि' रा लारला सम्पादका भी टेसीटरी री चेष्टावा माये निर्भर रेय'र सम्पादन रो कारज कियो है। इण मू आ सिद्ध रहे है के आज जिन रूप मे 'बेलि' आपा ने मिले है उण रो मूल पाठ रे रूप म उगूणे राजस्थान मे लिखियोडी दूढाडी टीका हीज पोधी री पाठ ने तय करणवाळी पाण्डुलिपि सिद्ध हुवे। पण टेसीटरी खुद (उण माथे पूरी तरा सू निरभर रेवता थका भी) उण टीका सँ जाणें पूरा निश्चित कोनी हुवे। उणा री आ बात आ इशारो करे है के इण टीका मे वे मोकळा घट-बढ पायो हो अर जठे उणा ने की भी अस्पष्टता दीसी उठे वे खुद आगे आय ने ससोधन कीयो है। टेसीटरी री इण भातरी सफाई इण तथ्य कने आपा ने ले जावे है के जिन नीब माथे 'बेलि' रे सम्पादन रो आलीशान महल खडो है उण दूढाडी टीका रे मायने हीज थोडी बात ऐडी कमजोरिया है जिकी के 'बेलि' रो मौलिक पाठ स आपा ने छेडे करतो जावे।

टेसीटरी री सम्पादन कला री एक और कमजोरी भी है जिन कनी आपारो ध्यान खेंचणी खातर पारीक जी आपरी पोधी री भूमिका माय केह्यो है- 'आपा ने स्वर्गीय डा. टेसीटरी रो धन्यवाद करणो चाइजे के जिका पेलापोत 'बेलि' री महिमा मू 1917 ई माय मूल पोधी छपवायी अर उण री एक् सारगमित भूमिका भी लिखी। पण डा टेसीटरी डिगल आपाशास्त्र रा आधा पढदा नोट देयर छोटी सी भूमिका भी लिख दीनी इण सू वे साहित्य प्रेमिया री उत्कण्ठा तो बढायी पण सागे सागे इणा रे मना मायने आ अशका भी भर दी के सायत इण धान्य ने और सरल अर भणनजोग बणावणी मुश्कल है।' (भूमिका पृ. 52) पारीक जी री आ बतलावण टेसीटरी रा उण दोष कनी इशारो करे जिन ने म्हे इण निबन्ध रा सुरु-पोत मे हीज पोधी रो उद्धार करण री उपकार रे भावना रे रूप मे माडियो है।

उपरला विवेचन सू इण वास्ते आ बात सामी आवे है के टेसीटरी री सम्पादन कोशिशा पूरी तरा सू निभ्रान्त बोनी है। इण कारण उणारी कोशिशा रे बाबजूद दूजी अंरु कोशिशा री भी जरूरत महसूस हुई अर इण कारण ने हाथ में लेवण रो श्रेय ठा रामसिंह अर श्री भूपेवरण पारीव ने है।

हिन्दुस्तानी एकेडमी सू प्रस्तुत कियोडो पाठ—ठा रामसिंह अर पारीव जी 'बलि' रा मूल पाठ तई पहचण री खातर चार हस्तलिखित पाण्डुलिपिया ने अर टेसीटरी री रायस एशियाटिक सोसाइटी स छप्पोडो पोंथी ने आपरी आधार सामग्री बणायी। इण वास्ते ऐ दोनुई 'बलि' रा पाठ सम्पादन मू पैलाहीज आपरी ओ मानस बणाय चुका हा के उणा ने इण पांच पाठ सामग्रिया माय सू हीज मूल पाठ खोजणो है। एण ऐ पाचऊ रे माय ने मोबळो पाठ भेद देख'र इणा भी टेसीटरी रे जिमा हीज पाठ सम्पादन रा वैज्ञानिक तरीका ने अपनावण री जागा निज रे निर्णय ने मोबळा महत्व दियो है। इण वास्ते जदे पाठ सम्पादन रो काम करता ऐ लोगा रे सामी उत्तम पंदा हुई अठे ऐ लोग निज रा विचार ने हीज पाठ सम्पादन रा आधार बणाय दियो। उणा खुद केयो है—'म्हाणी सुविधा सू म्हा लोग ने जिको पाठ संगाऊ सरल अर उपयुक्त लाग्यो उणी पाठ ने इण पोथी में स्वीकार लियो है। बाकी पाठान्तरा ने जिज्ञासू पाठवा री सूचना अर मनन रे वास्ते अठे पैलडा बोहला रो नम्बर देय में अलग सू माड दियो गयो है।' (पृ 273) इणा री आ बतलावण दोनऊ सम्पादका री ईमानदारी ने तो उबागर करे एण इणने वैज्ञानिक कोशिशा बोनी केह्यो जाय सवे। सम्पादन रो जिम्मेदारी ने 'सुविधा' रे रूप में नी लेवणा चाईजे। इण रे बाबजूद इणा री कोशिश इण खातर महत्व राखे है के ऐ लोग खुद री सुविधा सू भी जादा पाठवा री सुविधा री बात ने जादा तक सयत दग सू सामो रखी है। ऐ लोग इण तथ्य ने ना भुलाव सक्या के 'बलि' री भाषा साहित्यिक दृगल है जिकी के बिलप्ट हूवण रे कारण हिन्दी बाळा रे वास्ते हीज दोरी बोनी हुई तास राजस्थानी भाषा जानन बाळा रे वास्ते भी आसानी मू समझण जोसी बोनी है। (पृ. 50.)

ऐ दोनऊ सम्पादका री कोशिश मोबळा कारण मू उत्तेज जागी कोशिश बण सगी है। ऐना मू मोबळा उत्तेज जोगी बात आ है के इणा आधारभूत सामग्री री प्रमाणितता ने जोषणो जरूरी समझियो हो। जिकी पांच प्रतिपों रे आधार माये ऐ लोग पाठ निर्धारण कीयो हो उणा रे वास्ते ऐ बाह्यो है के—'वास्तव रे माय के हीज प्रमाणिक प्रतिपों राख्यो है। निर्माण बाल रे हिमाय मू भी के प्रतिष्ठित अर प्रमाणिक समझीयो है।' (पृ 273) इण वास्ते ऐ लोग पूरी तरा मू टेसीटरी रे पाठ माये हीज टिकबाहा बोनी रेखा है दुयजा पाठान्तरा रो लाभ भी उठायो

हा। पण टीकावा अर हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ रे प्रमाणिकता रो कोई ठोस पमानो ऐ कोनी दियो है। कोरी मोरी जूनी होवण री बात ने हीज ऐ पोधी रे प्रमाणक हूवण रो आधार मानिया है—'म्हाणी जाण म तो मंगा सू जूनी टीका होज मुलायं र विषय माय प्रामाणिक बेह्यो जाय सवे है क्यूबे समसामयिक हूवण र कारण अपने आप हीज वा 'बेलि' रा भावा ने जादा सफाई मू समभावण म सियरथ हूवणी चाइजे।' (पृ 51) समसामयिकता ने हीज यू प्रमाणिकता रो एकलो कारण मानण रो भरम टेसीटरी भी पाळ चुका हा। इण हिसाब सू ऐ दोनऊ संपादक भी उणोज बात ने पुष्ट कर ने आपरी सम्पादन कला री कमजोरी खुद हीज प्रकट कर दीवी। ग्रासतोर सू उण टेम जदे बे ऐ दोनऊ संपादक भी दूढाडी टीका री मोकळी कमजोरिया जाण'र भी उणा ने सिरफ चलताऊ दग सू प्रकट कर दी है। ऐ दोनऊ संपादक मारवाडो अर दूढाडी दानऊ टीकावां ने पृथ्वीराज री जीवणवेळा री हीज रचनावा मान'र भी दूढाडी टीका ने मोकळो महत्व दीयो है। उणा रे हीज शब्दा माय 'ओ भी सम्भव है ये दूढाडी अर मारवाडी दोनऊ टीकावा कवि रे जीवण-वेळा मे हीज गणमी ग्हे, पण बे है दोनऊ सुततर अर उण दोनो माय भी दूढाडी टीका जादा जूनी अर प्रामाणिक जचे है।' (पृ 52) म्हा रे जाण तो इण आधार सामग्री रे निरधारण रे वास्ते ऐतिहासिक, भाषा वैज्ञानिक अर साहित्यिक परम्परावा री तुल्य भावनावा माथे घणो ध्यान देवणो चइजतो कोरो भरोसो प्रकट कर देवण भी सू हीज पाण्डुलिपियाँ प्रामाणिक को हूम जावे।

इण दोना री सम्पादन छेप्टा टेसीटरी रे ज्यू छोटी टिप्पणिया अर धाडा बात पाठ भेदा भर सू ही जुड'र पूरी कोनी हूयगी है। इणा गम्भीर छेप्टावां वाळी सम्पादन कला दरसायी है। इण सोवा पोधी री लाम्बी भूमिका रे रूप मे कवि रे व्यक्तिव री टीका रे अलावा 'बेलि' री टीकावा, उण रो नामकरण, उण रो प्रतिपाद्य निरूपण आदि रो भी मोकळो प्रयास कियो है। सम्पादन रेकर्तव्या रे पालन सारू ऐ 'बेलि' रा मूल पाठ रे अलावा सगळा पाठान्तरा ने उणा रा हिन्दी नोट ने, शब्दकोस मेलण रे सागे-सागे सेंगा सू उल्लेख जोगो कारण ओ कियो है कि इणा बेलि री दूढाडी अर संस्कृत टीकावा ने पोधी रे सागे हीज छाप्यो है। इण सू इणारी सम्पादन छेप्टा घणी प्रामाणिक अर भरोसेमद वण सकी है। पाठान्तरा ने भी अलग सू उल्लेख कर न ऐ आपरी कोशिश ने घणाखरी वैज्ञानिक बणावण मे सफलता पायी है।

श्री नरोत्तमदास स्वामी सू प्रस्तुत पाठ—श्री नरोत्तमदास स्वामी जद 'बेलि' रा सम्पादन कीयो उण टेम तई इणरा दोय संस्करण सामी आय चूका हा। इण वास्ते इणा रे सामी ज्यादातर बे दिक्कता कोनी ही जिनी के आयला सम्पादका रे

सामी हो। इण वास्ते स्वामी जी जिका प्रयास कीयो है उण भ पेलटापन री सांज बेव्ण नी हूय'र विश्लेषण करण री आलोचन री निजर मोनळी हो।

स्वामी जी 'बेलि' रे मूल पाठ रे मायने दोय मुद्दा उठाया है—ऐणो पेल्ला मुद्दो जिको मे सम्पादन कला रे हिसाब मू घणो वैज्ञानिक है, ओ है के साची मरया माय 'बेलि' रा छन्दा री मर्या कितो है। इणा पाच जुदी जुदी प्रतिया रे आधार माय 'बेलि' रा छन्दा री असली गिनती माय सबाळ सडो वरतां वहो है—'टेसीटर' री 'बेलि' माय छन्दा री गिनती 305 है। 'रामसिंह अर सूर्यकरण' पारीक स सम्पादित संस्करण रे मायने टेसीटर री हीज अनुकरण कियो गयो है। बाद मे जिकी प्रतिया मिली (अर ऐ प्रतिया 'बेलि' री संगा सू जूनी उपलब्ध प्रतिया है) उणा मे छन्दा री गिनती 301 वा इण मू ओ कम मिले है। उक्त संस्करण री 305 बो पद्य जिण मायने रचना री सवत् दिवोडो है, निश्च मे प्रक्षिप्त है, जेडो के ऊपर बताया जाय चुको है। 304 बो पद्य साखला करमसो री क्रिसन जी-री बेलि मायने भी मिले है। करमसो पृथ्वीराज स पला हूयो हो, अर क्रिसन जी री 'बेलि' री हस्तलिखित प्रति सवत्—1634 री लिखी मिली है। इण वास्ते ओ पद्य भी पृथ्वी-राज री रचना कोनी जाण पडे। सवत् 1969 री प्रति रे माय भी, जिकी के पृथ्वी-राज रे भतीजा भाणजी रे वास्ते लिखी हो, ओ पद्य कोनी मिले। पद्य सख्या 126, 127 अर 176 भी जूनी पोथ्या मे कोनी मिले। सवत् 1673 री सटीक प्रति मायने भी इणा री टीका कोनी मिले। स 1667 री प्रति मे ऐ पद्य हाशिया मे लिखियोडा है। ऐ पद्य भी 'बेलि' रा मूल अंग कोनी है। इण वास्ते 'बेलि' रा पद्या री सख्या 300 रैय जाव है।

जिकी बूढ़ाडी टीका न टेसीटर री अर श्री पारीक जी पाठ निर्धारण री आधार बणाया हो उण माय सांची मे छन्द मर्या 126, 127 अर 176 री टीका कोनी कीयोडी है। अर ग्रन्थ री रचना मे परकट करण वालो आखिरी बो 305 बो छन्द भी कोनी है। इण छातर ई बात ने प्रमाण मान'र स्वामी जी इण तीनऊ छन्दा ने प्रक्षिप्त मान लिया है। पण हिन्दुस्तानी एकेडमी वाली प्रति मे हीज ओ भी स्पष्ट नियो गयो है के 'सवत्-1673 री बूढ़ाडी टीका मे कोरा 290 दोहला तक री टीका पायी जावे है अर इण स आगे रा 14 दोहला री मूल पाठ दियो गयो है। टीका कोनी करीजी है।' (पृ 815) इण वास्ते कोरी टीका कोनी को जावण रे कारण स्वामीजी पोथो रा 126, 127 अर 176 वा छन्दा ने प्रक्षिप्त मानिया है तो इणी मानता रे कारण आखिर रा 14 छन्दा ने भी, जिणा री भी टीका कोनी कीयोडी है, प्रक्षिप्त मानणो चाईजे। पण उणा ने ओ मानण री हिम्मत कोनी हुई। कपू ने ऐशो किया मू के मगळा छन्द प्रक्षिप्त हुय जावे जिणा मे 'बेलि' री

रूपक दिपोडो है। अगर ओं रूपक होत्र प्रशिक्षित है, जिन री की काफी गुजार्सन है, तो पछे 'बेलि' रा प्रतिपाद्य निर्धारण रे वास्ते आगाने नूवा सिरा सूं मोचणो पड़ेला। दण रे बारे में आगे अलग सू चरचा करणा ठीक रेवेला अठे तो सिरफ आ बात मान लेवणो हीज पणो रेवेला के स्वामी जी भी पोषी रो सम्पादन करती धूँला मोच सू दूर हटग्या है।

'बेलि' रे मूल पाठ रो निर्धारण—'बेलि' रे सम्पादन रे वास्ते बिगाडी सगळी काशिसा नें देल नें आ बात साफ हूय जावे के उगूणें राजस्थान में तिनियोडो दूदाडी टीका होज 'बेलि' रा पाठ निर्धारण रे हिसाब मू सेंगा मू माकळो महत्व राखे है। ठा रामसिंह अर श्री सूर्यवरण पारीक इण टीका नें आपरी पोषी में छाप'र तारीफ जोगी पारज बियो है। इण टीका रे वास्ते देसीटरी ओ सनेत दियो है कि इण माय मोकळो परिवर्तन अर सभोपन हूया है— अर हिन्दुस्तानी ऐबेडमी बाळा दोनऊ सम्पादक छद सत्या 126, 127, 176 अर 209 मू सेयर 304 तक रा आसिरी 14 दोहसा रे वास्ते आगा न सूचित बिया है के टीकाकार उणा री टीका बोनी की है। स्वामी जी इणी तर्क रे आधार मू बेलि रा पाच छन्दा नें जाळी मान'र उणा न पोषी सू निकाल दिया है।

सोनऊ सम्पादका री चट्याक दूदाडी टीका माथ टिकियाड हावता थका ओं इण माय मोकळी कमजोरिया हूवण री माकळी सम्भावना देखे है। अस्तू, दूदाडी टीका रे बारे में बोनी सारा सू विश्वस्त हूया बिना 'बेलि' रो आज मिलन बाळा पाठ नें प्रामाणिक बेय सबणो सम्भव बोनी छै। इण वास्ते अठे उण रो घोडो सा बिबेचन करणो जरूरी है।

देसीटरी अर श्री पारीक दोनऊ ही इण दूदाडी रा रचना काल मवत् 1673 माने है। ओ मवत् इणी दोना री इण मानता री पुष्टि करे है के ऐ लोण बेलि रा रचना काल (1637 सवत्) रे पचास साला रे मायने मायने उण री टीका भी सामी आय चुकी ही। पण ऐ विधिपा हीज देसीटरी री इण धारणा नें गलत सिद्ध करे है के टीकावा पृथ्वीराज री जीवन वेळा माय हीज सामी आय चुकी ही क्यू के पृथ्वीराज री मृत्यु रो टेम सगळा बिद्वाना एक्मत सू सवत् 1657 बतळायो है। इण वास्ते जद आ टीका कवि री मृत्यु रे पछे मिली गई है तो पछे आ बात अधिनार सू बो केह्यो जाय सक् है के आ टीका कवि री समसामयिक है। आ मान लिया पछे इण टीका रे वास्ते वो अटूट विश्वास बोनी रंवे के समसामयिक हूवण मात्र सू हीज आ प्रामाणिक भी है। इण वास्ते इण टीका नें अजे तई जित्ती प्रामाणिक आज'र देखता हा उण तरीका सू नी दोन'र इण नें तटस्थ हूय'र देखणो चाहिये।

इण टीका सू खडो हुवण आळो दूजो सवाल ओ हे के इण टीकाकार बीच बीच में घोडा सा छन्दा री टीका क्यू कोनी की है ? जेडो के पेला साफ कीयो जाय चुका है कि— इण म 126, 127 अर 176 वा छन्दा री टीका कोनी कीयोडी है । इणी भात छद सख्या 291 रे पाछे रा भी मगळा छन्दा री टीका छोड दीवी है । स्वामीजी रे तर्का रे मुजब अगर आपा ऐ मगळा ने प्रक्षिप्त मान लेवा तो पोधी रे मुजब मोकळा नूवा सवाल खडा हुय जावे । उणा न समझण सारू पेला कथा रा दीयाडा क्रम न अर कवि सू दीयोडी छन्दा री व्यवस्था ने समझणा जरूरी है ।

पाधी म कृष्ण अर एकमणी री कहाणी 278 वा छन्द माथ आय ने खतम हुय जावे । उण रे पाछे 279 वा छन्द सूं लेय 290 वा छन्द तई जूनी परम्परा रे मुजब पोधी रा महात्म बतलायो गया है । उण रे पाछे 219 वां छन्द सूं लेय ने 304 वा छन्द तई 'बेलि' रो रूपक दीयोडी है । 305 वें छन्द म बेलि रो रचना मध् दीयोडी है । इण वास्त जदे आपा बेलि रा सारला 15 छन्द प्रक्षिप्त मान सवा तो इण रो अरथ हा हुय जावे क बेलि रो रूपक, प्रकट करणवाळा सारा छन्द परजी है । अर इण रे पोधी सू हटावण रो अरथ ओ हूव के फेर पाछे इण रूपक सूं प्रकट हुअण वाळो आध्यात्मिक रूपक बेलि रो मूल स्वर कोनी रैय जावे । अर्थात्—बेलि भक्ति परक रचना मो हुय र श्रृंगारिक रचना भर है । फेर पछे इण में धरम भावना दूडणा फिनूल धै जावे ।

इण खातर पोधी र वास्त टीकाकार रा खुद रा मन्तव्या री ओळखाण करणो जरूरी है । बेलि रो टीकाकार निखै ही बटूर धरम भावना रो लेखक हो । इण री मवाही इण र द्वारा कीयोडी टीकावा रा आखीर रो छन्द (सख्या 290) देवे है । जिण मे कवि पृथ्वीराज सू मगा न 'एकदर्शीय' अर बेलि ने सार्वदर्शीय रे महबोलापण र कारण उणा इणरी टीका तब कोनी कीवी है । आपरे हिस्स सूं टीकाकार कवि न मगा री निदा करता देख'र उण ने माफ कोनी कीयो है अर टीका करण री जागा ओ निरा राख्यो है—'मगा जी री निदा करी छे । तार्कलियो या दुषाला को अरथ में नही लिख्यो छे' ऐही करडी धरम भावावाळो टीकाकार बेलि रा आध्यात्मिक पक्ष ने प्रकट करणवाळो रूपक ने क्यू छोड दियो आ बात बिचारण जोग है । म्हारो समझ म तो ओ रूपक पृथ्वीराज कोनी लिखियो हो । ओ हिस्सो प्रक्षिप्त है । इण वास्ते दूडाडी टीकाकार रो अठे मौन धै जावणों जाब तक ।

बेलि रे प्रतिपाद्य रो निरधारण—अगर आपा बेलि रा रूपक ने परजी अश मान सवा तो पछे उण रे प्रतिपाद्य न तय करण म मोकळी दिक्कता खडी हुय जावे । जिण रूपक रे आधार माथे अज तई बेलि ने भक्ति भाव री रचना मानियो जाय रह्यो हो के सगळा तब भूटा पड जावे । अर आपा ने मजबूर रह्य ने एक्

शृंगारिक रचना मानणी पड़ेला । तदे आपा ने बेलि रा प्रतिपाद्य ने दूडण खातर दूजा सोता रो सहारो भी लेवणो पड़ेला । अठे वेडा तीन सोता ने माहणो अर विवेचित करणो जरूरी है जिणा रे आधार सू कोई भी सम्पादक पोधी रे प्रतिपाद्य रो आसानी सू निरधारण कर सके । ये वार्ता इण मुजब है—

- (1) दूजी पोथ्या सू 'बेलि'रा रूपक री तुलना ।
- (2) कवि रे व्यक्तित्व सू उण री रचना दृष्टि ने पकडण री चेष्टा ।
- (3) पोधी रा तात्पर्य निरणे रा आधार सू उण रे प्रतिपाद्य रो निरधारण ।

पोधी रे आखिर मे दिया जावणवाळा दूजा कविया रा रूपका सू 'बेलि' री तुलना कर ने उपरला सध्या ने परलियो जाय सके है । दूजा साध्या सू ओ माळम व्है के पृथ्वीराज रा पेंला जायसी अर उण रा समकालीन महाकवि गोस्वामी तुलसीदास भी आप आप री पोथ्या भाय कथा रो आध्यात्मिक रूपक दीनो हो । पण जठे तुलसीदास आपरा 'रामचरितमानस'मे दीयोडो मानसरोवर री सात सीढ़िया रो रूपक कथा रा प्रामाणिक आध्यात्मिक भरसो दिरावे है उठे जायसी रे 'पद्मावत' रे आखिर मे दीयोडा रूपक माथे विद्वाना मोकळा ऐतराज किया है । 'बेलि' रा रूपक री भी इसी हीज हालत है । क्यूँ इण मे साग रूपक रो चोखी तरक निभाव कोनी हूयो है अठे आ बात ध्यान देणयोग है कि पृथ्वीराज आपरी इण पोधी मे मोकळा साग रूपक लडा बीया है । जिणा मे बसन्त अर शिशिर रो रूपक (229 सू 238), युद्ध अर बिरला रो रूपक (117 सू 129) तो बेजोड रूपका म गिनिया जाय सके । इण सू ओ सिद्ध हुवे है के पृथ्वीराज रूपक चित्रण म मोकळो सिद्धहस्त हो । पण इण कवि रो आपरी पोधी रा खास रूपक चित्रण मे गडबडीज जावणो मोकळा सन्देहा ने पैदा करे ।

रूपका रे सम्बन्ध म एक और बात माथ भी अठे ध्यान देवणा जरूरी है क पृथ्वीराज सू पेला रा अर उणरा समकालीन जिण कविया 'बेलि' काव्य रच्यो ह्यो उणा कोई भी पोधी रे आखिर म ऐडो आध्यात्मिक रूपक कोनी दीयो है । सावला करम सी रुनेचा री 'किसन जी री बेली' (मधन्-1680 रे लगेटगे), चूडोजी री 'वाणिक बेलि' (पृथ्वीराज सू पेला री पोधी), महेसदाम री 'रघुनाथचरित नवरम बेलि' (सवत् 1876), किसनऊ री 'महादेव पार्वती री बेलि' (1660 रे लगेटगे) इण सगळी पोथ्या म पोधी रे आखिर म रूपक कोनी दीयोडो है । ऐ सगळी पोथ्या कथा रे महातम परकट करण रे सांगे हीज पूरी हूयगी है । इण वास्ते आ बात धिरपी जाय सके है के 'बेलि' ग्रन्था री परम्परा पोधी रे आखिर मे आध्यात्मिक रूपक देवण रो इशारो कोनी करे । 'बेलि' रो दूदाडी टीकाकार भी इण छन्दा री टीका कोनी

करी है। इन सूँड़े विचार ने मोकली ताकन मिले के बेलि रा थे सारा छन्द प्रक्षिप्त हूय सके है।

कवि रो व्यक्तित्व—पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व ने खडो करण माय भी म्हेने राजस्थानी विद्वाना रो एक वोट वही नमजोरी निजर आवे है। टेसीटरी सू लेप'र बेलि साहित्य माथे काम करण आळा डा नरेन्द्र मानावत तई रा सगळा समीझका, मम्पादका पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व ने खडो करण खातर किंवदंतिया रो सहारो लीयो है। ऐ किंवदंतिया उणरा खरिद रा दो पहलुवा—बीरता अर भक्ति भावना—ने स्पष्ट करण खातर भेळी करीजो है। पृथ्वीराज रो बीरता अर निडरता ने सामी लावण रो खातिर राणा प्रताप ने लिखियोडो उणा रो कागद, आपरा बिद्रोही भाई रो (अक्बर रो बिरोध करने) समर्थन देवणो, नारीज रा मेला माय पृथ्वीराज रो लुगाई सू अक्बर न पटवारणो, चारण डाबडी राजवाई रो प्रबट हूय ने पृथ्वीराज रो लुगाई रो रक्षा रो खातिर गेरनी वणने अक्बर करने जावणो आदि किंवदंतिया न आविरी साध मान'र विद्वाना पृथ्वीराज रो व्यक्तित्व खडो किया है। इन भात पृथ्वीराज रो भक्ति भावना न हरमावण खातर प्रमाण रे रूप मे लक्ष्मीनाथ जी रो सोभा यादा रो कल्पना, आपरे मरण रो भविष्याणी, डारका यात्रा रो टेम खुद भगवान रो सेठ रा भेष मे आवणो आदि किंवदंतियो ने पूरो साध बणाप दिमो गयो है। पण किंवदंतिया रे आधार माथे मनघड्यत वांता न तूल देवणो साधो साहित्यिक कोशिसा कोनी वण सके। असल मे ओ कवि रसिक स्वभाव रो कवि हो। तीन-तीन द्वाव करण रो प्रमाण अर माथा रो सुतेव केस ने सोडली भैरवा लुगाई ने धूही पेर'र हसन रो ठैला हिन्दी रा कवि केशवदास ज्यू हीज निराश हूय ने देवणो—

पोयक धोळा आविया, बहुनी लग्गी मोद
कामण मत्तमपद ज्यू, ऊभी मुख मरोड।

आदि प्रमाण इन कवि ने शृंगारिज अमिरुचि आळो कवि सिद्ध करो। ऐही दशा त 'बेलि' रो आध्यात्मिक रूपक कवि रे व्यक्तित्व मू मेल खावतो कोनी दीसे। जदे आपा इन तथ्य ने मान मेवा तो पादे 'बेलि रो प्रतिपाद निबिवाद रूप मू शृंगार मात्र हीज सिद्ध हूवें। अर मू दूदाही टीकाकार मू रूपक प्रबट करण आळा छन्दा रो टीका नी करण रो बान भी तछं मू समझई जा गये है।

बेलि रो तात्पर्य निर्णय—पोयः रो तात्पर्य निर्णय करणवाळा सिद्धान्त रे मुजब बेलि रो परण करण मू भी आ बात सामी आवे है ने इन कवि रो पोयी लिखण रो खास अभिप्रेत शृंगार रो पोयी निमणो हो अलि रो निमणो कोनी हो। वमुके पोयी रे भुण्णो मे हीज ओ केतो है—

मुसदेव ब्यास जेदेव सरिका, मुकवि एक ते एक सन्ध
 श्री धरणन पहिने बीज, गूथिये जेणि सिमार ग्रन्थ

आ बात कवि री शृंगाराभिमुखता ने प्रारम्भ में ही धरपे । पोधी रे विचाळे
 कृष्ण-रुक्मिणी रा मिलण खातिर पडकृतुवा रो वरणन करीजियो है । पोधी रो नाव
 भी नायक नायिका रे प्रेम री बेल रे रूप में दिरीजियो है । ऐ मागळी बात इण
 पोधी ने शुद्ध शृंगार री रचना हूवण रो प्रमाण प्रकट करे है ।

निष्कर्ष—‘बेलि’ सू मिलणवाळा अतर्माध्या कवि रो व्यक्तित्व अर बेनि
 काव्या री परम्परा आपा ने इण तथ्य तई पटुचाय देवे के ‘बेलि’ रा रूपकवाळा छन्द
 सायत प्रशिप्त है । दूढाडी टीकाकार इणा री टीका कौनी की है । आ बात भी इण
 विचार ने धरपण री प्रेरणा देवे है । इण वास्ते ‘बेनि’ रा दूजा पाठा ने इण आप
 त्तियो रे रेवता स्वीकार करणो सम्भव कौनी हूय मके । इण रे अन्वाया के मध्या री
 खोज भी की जावणी जरूरी है के इण री टीका में टेसीटरी कई परिवर्तन, मशोधन
 सबद्धन कीया हा । उण जागावा माथे टेमीटरी अवसर आपरा निजरा विचारा ने
 धरपिया धैता । म्हारी समझ में तो एक विदेशी आदमी राजस्थानी री सांस्कृतिक
 धरोहरा सृ भरियोडी पोधी रे साथे कितो न्याय कर सक गो धैसा इण री खोज
 करणो भी जरूरी है । क्यू के किणी भी भाषा री पेनडी जाणकारी रे रूप में कोई
 भी विदेशी भाषा री सांस्कृतिक परम्परावा सृ जुडाव माड’र उण ने समझण री
 जागा शब्दा रा साधारण अरथा सृ जुडण री घणी कोशिश किया कर । एण खातिर
 टेसीटरी री कोशिश ने आधी वृद्धा सृ लेखण री जागा परंपरा री विवेक भावना सृ
 लेखणो जरूरी है । ‘बेनि’ रा मूल पाठ री पिछाण री खातर इण बात री खोज भी
 जरूरी है के इण री दूढाडी टीका ने कौरा विश्वाम न आधार सृ जूनी मानणो
 चाईजे के भाषा शास्त्र अर ऐतिहासिकता रे आधार माथे मानणा चाईज ? ‘बेनि
 रा मूल पाठ री पिछाण रे वास्ते आ जरूरी है क उण रा मूल्याकन ऊपरवा
 गवाला रे मुजब कियो जावे । इण सृ हीज ‘बेनि’ री साची साहित्यिकता आपा
 सामी लाय सकाता ।

□

(राजस्थानी साहित्य व शकादमी रे वास्ते पत्र वाचन)

१६८३ री पुरस्कृत पोथ्यां : एक बेबाक टीप

पुरस्कार पोथ्या री स्तरीयता री पिछाण करावे के कोनी करावे ओ सवाल धणो पुराणो है । पुरस्कार रँ व्याज सू मानवीय अनुभवा रो ऊजसो रुप सम्मानित हुवँ के कोरो मोरो रचनाकार हीज आनन्द पाय'र रँ जावे ऐंडा मोकळा सवाल पुरस्कारा रे मार्ग हीज हरमेस मामो आवता रँवे । राजस्थानी साहित्य माय आलोचना री पागली ज्ञानत देवता धका अजे तई ठेडा सवाला री चरचा बम हुई है ।

राजस्थान अर राजस्थानी दोना रे वास्ते अकाल कोई अजूबो कोनी है बल्के ओ तो अठे री पिछाण रो एकूको आधार है । जमी ने आत्मी भर करण आळा छांटा मू ज्यू जमी री प्यास कोनी धुलू सके इयाहीज भरती री दोय चार किताबा मू राजस्थानी साहित्य री निज्ज पिछाण कायम हूयने उण रो टोटो बम कोनी हूय सके । इण वास्ते राजस्थानी साहित्य भाय तो ओ सवाल धणो महत्व राखे है के इण रा साहित्य री पिछाण रो आधार आविर कई है ? अठे अनुभवा रा उजास ने'के रचनावा री स्तरीयता ने के जीवन रा साचा चित्ररामा ने'के जिनगीनी रो जगमग रूप ने'के मित्रय री आपरी बेतनावा रे विस्तार ने आकर बिण ने ध्यान में राखर पुरस्कार दिरीजे है । क्यू के अजे तई रा हाताता ने देखता तो आ यात धिरवीज गवे है के अठे रचनावा पुरस्कारा रे लारे भाज रँयी है । पुरस्कार रचनावा रे लारे घातता कोनी दींगे । रचना रो ह्व रचनाकार ने अधिकारी कोयनी बणावे पुरस्कार उण ने अधिकारी बणवनी दींगे है । पुरस्कृत होवण आळो रचनाकार तो पुरस्कार मित्रिया पछे आपरे मिरजण ने घणगरो गौरव देवण लाग जावे पण दूनी बनी ओरां रे मनां मायने ममं रो बीज बोधीज जावे । के रचना री स्तरीयता ने ताब माये ग्हावर मेगव रे व्यक्ति क्यू ने देगण लाग जावे । दूय जान री अपुटी कोसिता हूवण लाग जावे के पुरस्कार ने बिणो तरऊ विवाद रो मुहो बणाप दिषो जावे । ऐसी चेष्टा माय दोनऊ पडा इण जान ने जरूर अण देगणो करे के इण मूरचनाकार ने रचना रे व्याज मू मगळे साहित्य रो कई साम हूय रझो है । दण वास्ते पुरस्कार री बात की नूवा गवास ओ पैदा करण लाग जाया करे । आज पुरस्कार साहित्य री मग्वादी आवाज ने बुगुद करे है के बिबादी आवाज ने ? पुरस्कारा मू लेखकां ने भोव्वादीज करण री बात मामी आवे है के साहित्य रे मिरजण री प्रेरणा मिने ? पुरस्कार कोरो-

मोरो पोथ्या तई हीज यम्योडो रं जा वे के सागीडी होड करणाआळी भावना ने जनम देवे ? ऐडा और भी सवाल सामी आयर विचारा री सामग्री सामी ले आवे ।

ऊपरली विवेचनावा सू ओ विचार माडणो गलत हुवे के राजस्थानी मे पुरस्कृत पोथ्या स्तर सू गिरयोडी है । दूजी कमी पुरस्कृत हुय जावण सू हीज रचना ने श्रेष्ठतम् जाण लेवणो भी गलत है । रचनाकार री अनुभूति रो सम्मान आपो आप साहित्य री जीवन चेतना ने पकडण आळी चेतना रो सम्मान हुया करे इण माय विवाद री की भी गुजायश कोनी है । राजस्थानी रो आज रो रचनाकार संस्कृति रा सतरंगी आकर्षणां ने छोड'र जुग सत्य ने चित्त मे धार रह्यो है । उण री लेखनी रा ऊजला आखर मिनख रे अर उणरा जीवन रं ओळू दोळू घूमण लाग्या है । अवे गोरडी री सुन्दरता ने हीज के प्रेम री ओळ्या ने हीज माडण री चेष्टावा समाप्त हुयमी है । रचनाकार री आ नूकी पिछाण जाणे करवटीजती जिनगाणी री आपरी पिछाण है । इण वास्ते आज री रचना प्रेरणा रो बदलाव रचनावा माथे भी साफ साफ जाकीजियोडो दीसे है । पुरस्कृत पोथ्या री रचनाकार भी इण हीज मानसिकता सू रचना प्रेरणा लेय रह्यो है इण पर अदेशो करणो किजूल है । समीक्षक री आस्था म् इण पोथ्या री जाच जाणे उण मानसिकता री परवण चेष्टा हुय जावे है ।

अमृजती चेतना रो कवि : मोहम्मद सदीक—मोहम्मद सदीक अमृजती चेतना ने बबडे लावण आळो रचनाकार है । इण कवि सामाजिकता रा अंतर्विरोधा सू अर आम आदमी रे दर्द सू'माय ही माय राखवदाय रह्यो है । एक लम्बी उडीक रे पछे री तल्लीजियोडी वेचनी इण री रचना प्रेरणा है तो जिनगाणी रो मूड बोलतो दर्दालो रूप इण री कवितावा री खाद है । पण इण दर्द ने कविता री एम् ही सीक माथे न्हाक'र आस मूद'र बेवतो जावणो मोहम्मद सदीक कोनी सीखियो है । ओ उण सू दोवडे स्तरा माथे जूझतो दीमे है । एकणवनी ओ बनियान री बारादरी रे मायने भाक'र मिनखा ने चेतन रो हेवो मारतो दीमे है तो दूजी कमी व्यवस्था री गैर जिम्मेदार ओछी हरकता ने देख'र व्यग्य रे हथोडे सू उणा माथे चोट करता निजर आवे है । आ बात जुदा है कि सदीक रा व्यग्य तो आपरा अनूठापणा सू आम लोगा री जवान माथे सीधा चढ जावे पण उण री चेतावणिया कोरी मोरी कविता री ओळी बण'र नैतिकता री फालतू बीला माथे अटकीज'र रेख जावे है ।

नागा मिनखा रे देस रो दर्द इणा री जादातर कवितावा रा विषय है । इण लोगा री जिनगाणी ऊचा टीला सू टिस्ली खायोडी दडी ज्यू गुलाबिया खावती बेवती रेवे । इण वास्ते इण जिनगाणी री तिस निलावा न जनम देवे तो भूख भूतलिया उगलती रेवे । पण चम्बेडा रे राज मे उण रो की भी अरथ कोनी है ।

कवि पण निराशा न स्वीकारण री जागा जादातर मिनल ने भोलावण देवण मे जूभतो दीस है। उण री आ भावना कदे ही आशावादिता ने नकार ने तीखा मूला ने स्वीकारती दीस है तो कदे ही आ भावना भम्पीड वण र मांघला अमूर्ज ने उकेरण म लागती दीस है। पण सदीक री छेडी रचनावा मे सुधारवाद रो कोरो मोरो परिभाषावा आळा रूप ही उबरीजियो है। इण माय ऊडी अनुभूत्या री जागा भावुकता रो रूप रा ऊपान जादा निजर आवे है। इण नारण इणा री मोवळी कवितावा किसफिस हुयने र आवे है।

व्यंग्य माहम्मद सदीक री कविता रो धारदार हसियार है। इण री तीखी मोक मू ओ व्यवस्था रा सगना ताममाम ने छवस्त बरण में सफल देखो है। साथी माता रा काम लगाय र ओ खोखला आवरण ने नागो करण मे देर कोनी लगावे। खेत मे खावती बाड, सप्पम पाटा री जुगामिया, आदमी रे भकटिया भरण आळा आदमी जेडा ऊडा भावा ने 'व्यंग्य बणाय' र बोधामय रूप देवण मे ओ कवि सफल है। व्यंग्य रे वास्ते भाषा रो जलतो रूप, सीधा सादा मुहावरा रो उपयोग व्यंग्यार्थ ने पकडण सारु शब्दा रो लचीलोपण इगारी कवितावा ने जीवन्त बणाय देवे। पण व्यंग्य भावना हीज मोहम्मद सदीक री कवितावा री सीमा भी है। मुहावरा री गुलामी अर कवि सम्मेलनी कविता चतुराई इणा री गम्भीरता ने सोड देवे जिन मू इण री कवितावां व्यंग्य ने बिचार ओगो बणावण री जागा उण ने हास्य ओगो भर बणाय देवे। 'जूभतो जूण' री कवितावा माम मू जादातर कमजोर है। इण री कमजोरी कवि री सीमा ने चढे लावती बीमे है।

बीत्योडी नैतिकता रो रचनाकार: मूलचन्द प्राणेश—आपरी घोधी री भूमिका माम नूकी कहाणी री बात ने घणे मान मू उठाया रे बाबजूद मूलचन्द प्राणेश एव रचनाकार रे रूप म निराश ही करे। कहाणी रो आज रो रूप जिन घोष ने समेटण मे सचेष्ट है प्राणेशजी री लेखणी उण रे नेडेछेडे भी कोनी है। इणा री लेखणी रो विषय गाव है। पर उण री जिनगाणी रा आख्या दीसता आखर भर ऐ बाध्या है। अर्थ अर राजनीति रा दबाव गाव री जीवन दसावां ने जिन रूप म बदल दियो है उणा रो इणा री कहाण्या म दरसन कोनी हुवं। कथा माये आदमी री स्थूलता मावळी हावी है। कथ्य ने साहित्य रो रूपदिरावण री जागा, नैतिकता मू बाधण भर री चेष्टावा इणा री रचनावा माय दीते है। कहाण्या रो चरित्र समाज मू है ज्यू रा ज्यू लेय' र घिरपीजियोडा है। उण री मनाभावनावा, सामाजिकता ने निभावण मे उभारता दोवडो पण, मांघली छटपटाहाट अर जुगसत्य मू जूभती चेतना इणा रा नायक म कोनी है। जिन्दगाणी रा ऊपरला रूप अलबारी घटनावा जोसा प्रमग अर बीत्योडी नैतिकता ने घोस र पाखी सावण री चेष्टावा इणा री

लेखक री शोध भावना ने उजागर करे। पण दूजा निबन्धा माय विवेचन अर निरूपण में पूर्वं धारणावा साफ दोमे है। आलोचना म सकी री धारणा करने विचार माडीजिया करे। विचार ने माडण न्यातर सक कोनी दूडिया करे। पण 'घिन प्रिधीराज रग प्रिधीराज' या 'नेणसी' जेठा निबन्ध माय लेखक आपरी पूर्वं धारणावा ने शोध री चोगो गहिरावण री चेष्टा कीनी है।

जहूर खा रा चितराम सस्कृति ने आकण माय पूरा सफल रह्या है। मस्कृति म मिठास घोळणियो उणरो आचार पक्ष लेखक बारीकी सूपकडियो है अर उणा ने सखर माडण म कन्जूसी बोनी की है। जहूर खा बने भागा री रूपालो खजानो है अर उणरो असरदार इस्तमास करण री भी इणा बने पूरी ताकत भी है। आम लोगा री भाषा इती कसीजियोडी, मारक अर अपणायत स भरीजियोडी हूय सके इण बात ने अ आपरी पोधी सूप्रत्यस कर सविया है। ओ गुण हीज इण पोधी ने घोडो सीक साहित्यिकता दिराय देवे नही तो रचना म इतिहास हावी है।

सामाजिक जडता री चितेरी सत्येन जोशी—सत्येन जोशी सामाजिकता री जडता री घुराइया ने भिनव रे आचरण माय सूपकड र सामी लावण म सफल रह्या है। समाज री अगति लोगा रा चरिवा माय असामान्यता भर देवे। अज्ञान रा आधा कूआ माय डूबियोडा ऐडा लोग तेजी सूपेवती दुनिया र बिचाले भी कोरी मोरी कूपमण्डकता ने जीवता रेवे। परम्परा ने मुरदा ज्यूं डोवे तो मूरखपणा री सीमा तई घमण्ड म भरभीजता रेवे। ऐडा लोग खुद न समझ रा भाड मान र खोललो व्योहार करता रेवं। सत्येन जोशी जहूर रा मध्यवर्ग म नीपजणआळा ठेंठ परम्परावा ने जीवण आळा लोगा रा रेखाचित्र इण पोधी मे आकिया है। इणा म फूहडता छलकती रेवे अर ठीठता ऐणा आचरण री अग बण जावे। भाषा री ओद्योपण इणा री मानसिकता री विछाण करावे ता नागो हरकता इणा रा व्यक्ति ने परिभाषित करती बीसती रेवे।

'रोवणिया दासा' भरियोडा मूल्या री जनाओ है। लेखक री व्यंग्य री ताकत हास्य रा पुट सूपाठका माये भोकलो असर डालण री सिमरय राखे। पण लगभग एक जेठा आचरण करण आळी मानसिकता रा हीज जुदा जुदा चितराम हुबण रे कारण पोधी अच्छी खासी ऊव भी पैदा करे। लेखक रेखाचित्र आंकण माय एकसी भाषा अपणाई है जिवो भी एक दोष है। चितरामा माय जयार्थ व्यक्ति रूपा न साहित्यिक चरित्र घणावण माय भी पूरी सावधानी कोनी बरतीजी है जिण सूपे गहराई सूपाठका न प्रभावित कोनी कर सके। हल्का मूड री पोधी सूप्यादा रचना री महत्व कोनी है। साहित्य री ऐहो सम्मानित पुरस्कार पावण जोसी बात रचना म निजर कोनी आवे।

एक टीप—ऐ पोथ्या सू आज रा राजस्थानी साहित्य री दशा रो अन्दाजो लगायो जाय सके । आज रा रचनाकार पुरानी जकडण सू छटण री चेष्टा में तो है । पण उणा ने नूवो रस्ती हाल तई कोनी मिलियो है । बल्के ऐ लेखन हकबकीज ने चारऊ फेर हाथ मारता दीसे है । बोध रो नूवो रूप लगभग गैर हाजिर है अर व्यर्थ रा हथियार सू इण कभी ने पूरण री चेष्टा करण मे ऐ लोग भी कभी कोनी राने है । भाषा रे वास्ते जरूर लेखका री सजगता सामी आई है पण कथ्य रे अभाव मे उण रो की ताभ ऐ कोय ले सकिया है । ऐही पोथ्या ने पुरस्कार देवण री मजबूरी भी साफ साफ देखी जाय सके ।



(जागतीबोत में प्रकाशित)

परिवार अर परिवेश : साहित्य रे संदर्भ सँ

परिवार एह टाबर र वास्ते सँगाळ मोटो पाठघाला है । जन्म सँ लेयने जठे तक वा मुद्दपार कोनी रहै जावै तठे तहँ उण रो घणो वरत पर मे हीज गुजरिया करै । घर मे रेवता धका हीज उण रो सस्वार हुया करै । घातणो, उठणो, बैठणो, बोलणो, आदि सँ सुरू कर ने वो नैतिकता, धर्म न सामाजिक व्यवहारा रो पैलडो पाठ घर रे मायने हीज पढ़िया करे । परिवार रा सस्कारा रो असर इत्तो ऊढो ने इत्तो पक्को हुया करे ने वो बडो होने बेणऊ बच कोनी सके । आपरा चेतन मन मे भला ही कोई आदमी बारला प्रभावा मू खुद रा स्वतंत्र विचार बणा लेवे पण परिवार म रेवता धका पढ़ियोडा सवारा सँ खुदरा अवचेतन मन सु अलग कोनी कर सके । वरत जरूरत वे प्रवट हो जावे ने उणरे व्यवहार ने आपरे अनुरूप ढाळ लिया करे । गीता मे अर्जुन ने कृष्ण भी आ बात हीज समझाई है कै अर्जुन । युद्ध भूमि मे खुद रा रिश्तेदारा ने सामने लडा देख नै तू सकीब भले ही करले पण क्षत्रियपणा रा धारा सस्कार घने लडाई सँ बिरत कोनी रेवण देवेला । इण वास्ते बच्चा रे बिकास म परिवार रो प्रभाव सस्कार निर्माण री दृष्टि सँ घणो हीज महत्वपूर्ण है ।

टाबर न परिवार जेडो परिवेश प्रदान करे उण रो व्यक्तित्व भी अपने आप बडोहीज पडीज जावे । परिवार रा पढ़ियोडा प्रभावा र कारण हीज लुहार रो बेटो लुहार, सुनार रो बेटो सुनार आसानी सँ बन जावे । क्यूके घर रे मायने टाबर जेडी बाता देखे बेणऊ ऊने अप्रकट प्रेरणा मिलती जावे ने वो भी बडोहीज आचरण करण लाग जावे । जिका घरा म मा-बाप धर्म भीरु हुवै ने परम्परित विचारा रा पालण करण वाला हुया करे वेणा टाबर भी बेडी हीज अभिरुचिया वाला हुवै ने बडोहीज आचरण करण लाग जावे । दूजी कनी जिका घरा म टाबरा रा मा बाप माइने चणन री अभिलाषा राखे वेणा टाबर भी बचपन सँ हीज प्रदर्शनप्रिय ने महत्वाकांक्षी हू जावे ।

आ बात भी इणी तरऊ ध्यान म राखणी जरूरी है के अगर टाबर घर रा परिवेश ने नकार न नूवी रीत रो पालण करण री चेष्टा करे तो घर वाला ऊन ज्यादातर अवस्था म प्रोत्साहन कोनी देवे । उण रो जगा ऊने डरा धमका ने या कूट-पीट न मा-बाप खुद री रुचिया रे अनुरूप ढाळण री भरपूर चेष्टा किया करे ।

इण कारण सजबूर व्है ने टाबर या तो विद्रोही व्है जावे ने उग्रता सून बडा लोगा री बाता ने नकारण लागजा । जिकारो बिनसित रूप हीज आज री युवा पीढी रो असन्तोष, कुण्ठित आचरण ने विद्रोही रख है । आज री युवा पीढी जेनेरेशन गैप (पीढिया मे दूरी) री जिकी बात किया करे उण रो आधार भी ओ विद्रोह हीज हुया करे । परिवार मे करहो नियन्त्रण रो दूजो रूप टाबर रे मन मे निराशा री भावना ने जन्म दे देवे । ओ बात बात मे खुद ने नियन्त्रित करण लागजा । इण कारण ओ आपरी इच्छावा ने दबावण वालो हू जावे ने खुद रो सर्वांगीण विकास कोनी कर सके । मनोविज्ञान मे ई ने दमन री सजा दी जावे जिण रे कारण बडो हुवे ने टाबर कायर, डरपोक ने बिना बात धबरावण वाली आदता वाली व्है जावे । ओ दोनऊ स्थितिया चोखी कोनी है । अंगी बनिस्पत टाबर रे विकास रे वास्ते आ बात जरूरी है के उण माये खुद ने आरोपित करण देवण री जागा उणरे आगे बढण रे वास्ते मा-बात ने सहायक बणनो चाईजे ।

परिवार मे बच्चा रो विकास उणी अवस्था मे सहायक सिद्ध हो सके जणा उण री मानसिक अवस्था व उण रे उमर रे अनुपात सून मा-बाप उण री बाल जिज्ञासावा ने बिवेकपूर्ण ढंग सून सन्तुष्ट करता जावे । टाबर री स्थिति ऐही हुया करे के ओ धीमे धीमे मा-बाप री निर्भरता ने छोड ने आत्म निर्भर बणन री चेष्टा किया करे । आ बात सब लोग चोखी तरेऊ जाणे है के अन्य जीव जन्तुआ री बनिस्पत मनुष्या रा टाबर घणी लम्बी उम्र तक मां-बाप माये निर्भर रेह्या करै । ब्यू के दूजोडा जीवा मे कोरो शारीरिक विकास होवण तक हीज निर्भरता रेह्या करे पर भिनखा रा टाबर शारीरिक विकास रे साथ मानसिक विकास भी प्राप्त किया करे । जठे तक टाबर शारीरिक विकास रे साथ ही साथ बोध री दृष्टि सून भी समुन्नत कोनी हूजावे तठे तक उण रो सच्चो विकास कोनी हुया करे । अठे ई बात ने देखण री जरूरत है के परिवार किण उपाय सून बालक उभयपक्षी विकास मे सहायक सिद्ध हुया करै ।

टाबर रो शारीरिक विकास—उम्र रे बढण रे साथे साथे टाबर रो शरीर भी अपने आप बढ़तो जावै । पण शरीर रे सन्तुलित विकास रे वास्ते ई बात रो ध्यान राखणो जरूरी है के उणरे भोजन मे शरीर रे विकास री सारी बाता सम्मिलित हू जावे । इण दृष्टि सून सन्तुलित भोजन रे मांय ने प्रोटीन, वसा, खनिज तत्वण, विटामिन कार्बोहाईड्रेट, ने जस रो समानुपातिक मात्रा होवणी जरूरी है । ऐणे मायने सून एक री भी कमी कौ न की शारीरिक विकास में दोष पैदा कर देवे ।

भोजन रे पछे शरीर रे विकास मे दूजो जरूरी बात व्यायाम है । खेलण-कूदण सून हड्डिया, पेशियां समुन्नत हुया करै दधिर रो संचार चोखी तराऊ हुया करे ने बळ

रे साथे साथे स्फूर्ति भी आया करे। आजकल रे प्रतिस्पर्द्धा रा जमाना में घणा मा-
बाप टावर री पढाई रे वास्ते इत्ता सचेष्ट रेवे ने वे उने भेलण भी कोनी देवे। इण
सू टावर रे शरीर रो माचो विकास कोनी हो सके। शरीर री सफाई, वस्त्र आदि
भी शरीर रे चोले विकास रे वास्ते जरूरी है। स्वच्छता मू व्यक्ति नीरोग रहे जावे
ने उण री बुद्धि भी परिष्कृत हुमा करे।

टावर री मानसिक विकास—टावर री साचो विकास उण रे मस्तिष्क री
विकास है। उण अवस्था म टावर री जेडो रचिया हुमा करे वेन देखा तो ई बात री
ध्यान पड़े वे उण टेम टावर खासतौर मू धर्म, नैतिकता, यौन सम्बन्ध ने जीवन रा
खास खास मूल्यों रे सम्पर्क में आवे अर वेणे में मुद री मानस वणावणी चावे। परिवार
ऐडो अभिरुचियां ने कीकर परिष्कृत कर मके उणरी जुदी जुदी चर्चा करणो अठे
सगत रैसी।

धौन जिज्ञासा—फायड जेडा मनोवैज्ञानिक अे विचार सामी राखिया है वे
हरेक आदमी हरेक काम की न की काम प्रेरणा सू परिवर्तित हुमा करे। फायड तो
चासना ने हीज हरेक क्रिया री प्रेरक बतलायो है। उण रे अनुसार सँ ठेठ संसवावस्था
मू हीज टावर धौन सन्तुष्टि प्राप्त करण लाग जावे छोटा शिशु मा रा स्तन पान
रे रूप में, अर उण सू बड़ा मल उत्सर्जन रे रूप में। इण भात अवस्था बढण रे
साथे साथे ज्यू ज्यू टावर री शरीर बढतो जावे फायड रे अनुसार त्यू त्यू वो चासना
री पूर्ति करतो जावे। फायड री बात सू असहमति प्रकट की जा सके। आपा उण री
स्थापना में नवार भी सका पण ई बात मू इन्कार कोनी कर सका क टावर में भी
धौन जिज्ञासावा हुमा करे। संसवावस्था पार करता करता वो स्त्री पुरुष रे शारीरिक
बनावट रे अन्तर में पैदावण लाग जावे। पशु पक्षियों रा धौन सम्बन्ध ने देख ने उण
री जिज्ञासा बढ़े ने वो मा-बाप सू उण बारे में पूछताछ करणी चावे। ज्यादातर
दसावा में परिवार वाला बालक री ऐडो जिज्ञासावा ने सन्तुष्ट करण री जागां उने
डाट-फटकार ने छुप कर देवे। इण कारण उणरी बाल-जिज्ञासा सन्तुष्ट कोनो हुवे ने
वो छुप छुप ने वेडो घाता में रुचि लेवण लागजा। आ बात टावर रे विकास री रीष्ट
सू ज्यादा हानिकारक है।

धौन व्यवहार रे अर रे खूब म हीज सन्तानात्पत्ति सू सम्बन्धित बात भी
सामने आवे। पक्षिया ने अण्डा देवता देख ने घर में भास-पड़ोस में नूवा टावरा ने
जन्म लवता देख ने ऊरे मन म आ जिज्ञासा पैदा हुमा करे के टावर ने जीव जन्तु
कीकर पैदा हुमा करे? उण री उत्पत्ति री कई कारण हुमा करे? परिवार में
ज्यादातर दसावा म उण ने फुसला दियो जावे के भगवान पैदा करे या अस्पताल सू
आया करे। आज रा वैज्ञानिक युग म जेद के टावर पण पण माथे सच्ची बातों सू

